डाक पंजीयन क्र. आई.डी.सी./म.प्र./892/2018-2020
पत्र पंजीयक क्र. : म.प्र. 15059

चेतन कृति विशेषांक

संस्कार सागर

• वर्ष :20 • अंक : 230
• जून 2018

• मूल्य : 50 रु.

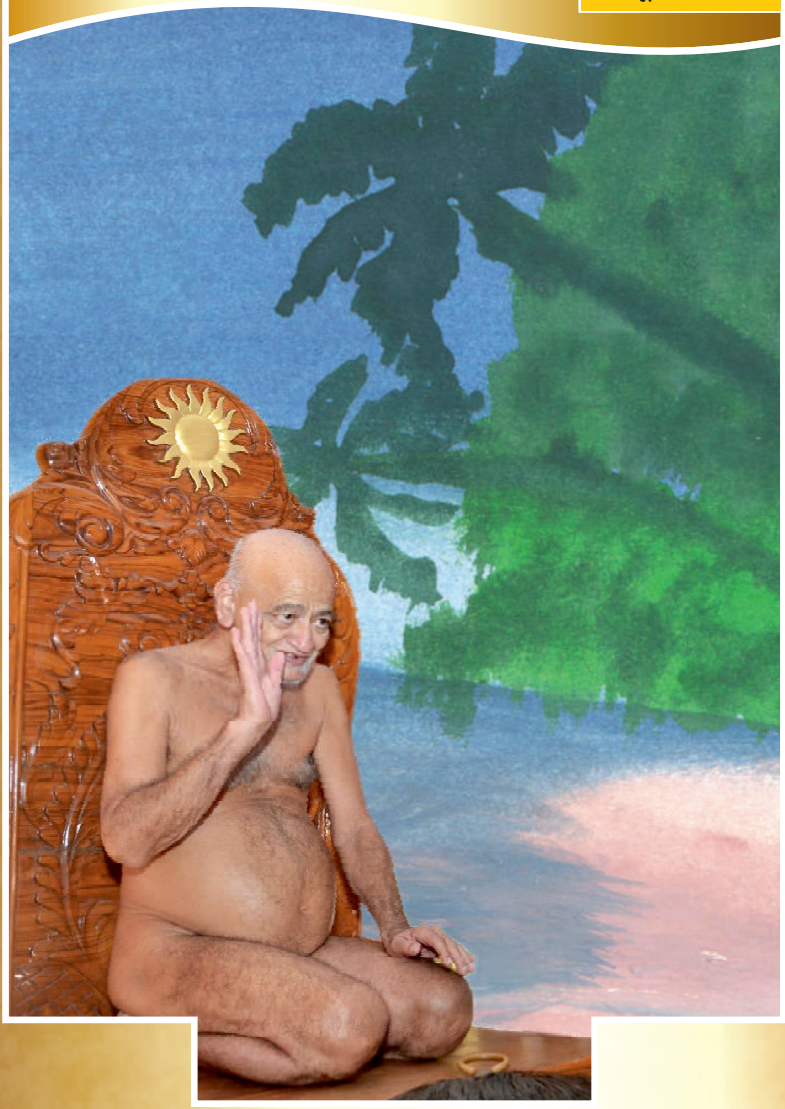

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य मे सम्पन्न वाचना के दुर्लभ क्षण चित्रों में

वाचना के समय उहापोह में निमग्न आचार्य विद्यासागर और पण्डित फूलचंद्र जी सिद्धांत शास्त्री

पूज्य श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी के रटेल्यू के समक्ष आचार्य विद्यासागर जी महाराज शिष्य मण्डली के साथ मंच पर आसीन

श्री पं. वंशीधर जी व्याकरणाचार्य बीना को प्रशस्ति पत्र देते हुए कुलपति पं. जगमोहन लाल जी शास्त्री

संक लन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		(जून 2018 ज्येष्ठ शुक्ल)	
16	शनिवार	तृतीया	पुनर्वसु
17	रविवार	चतुर्थी	पुष्य/आश्लेषा
18	सोमवार	पंचमी/षष्ठी	मघा
19	मंगलवार	सप्तमी	पूर्वाफाल्गुनी
20	बुधवार	अष्टमी	उत्तराफाल्गुनी
21	गुरुवार	नवमी	हस्त
22	शुक्रवार	दशमी	चित्रा
23	शनिवार	एकादशी	स्वाति
24	रविवार	द्वादशी	विशाखा
25	सोमवार	त्रयोदशी	अनुराधा दिन/रात
26	मंगलवार	चतुदर्शी	अनुराधा
27	बुधवार	चतुदर्शी	ज्येष्ठा
28	गुरुवार	पूर्णिमा	मूल
		(आषाढ़ कृष्ण)	
29	शुक्रवार	प्रतिपदा	पूर्वाषाढ़
30	शनिवार	द्वितीया	उत्तराषाढ़
		(जूलाई 2018)	
1	रविवार	तृतीया	श्रवण
2	सोमवार	चतुर्थी	धनिष्ठा
3	मंगलवार	पंचमी	शतभिषा
4	बुधवार	षष्ठी	पूर्वाभाद्रपद
5	गुरुवार	सप्तमी	उत्तराभाद्रपद
6	शुक्रवार	अष्टमी	उत्तराभाद्रपद
7	शनिवार	नवमी	रेवती
8	रविवार	दशमी	अश्विनी
9	सोमवार	एकादशी	भरणी/कृतिका
10	मंगलवार	द्वादशी	रोहिणी
11	बुधवार	त्रयोदशी	मृगशिरा
12	गुरुवार	चतुदर्शी	आर्द्रा
13	शुक्रवार	अमावस/प्रतिपदा	पुनर्वसु
14	शनिवार	द्वितीया	पुष्य
15	रविवार	तृतीया	आश्लेषा

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ : जून-22,25 जुलाई - 11
वाहन क्रय : जून-16,23 जुलाई - 11,14
विद्या आरंभ मुहूर्त : जून-22 जुलाई - 15

तीर्थंकर कल्याणक

17 जून : भगवान धर्मनाथ मोक्ष कल्याणक
24 जून : भगवान सुपार्श्वनाथ जन्म-तप कल्याणक
30 जून : भगवान आदिनाथ गर्भ कल्याणक
04 जुलाई : भगवान वासुपूज्य गर्भ कल्याणक
06 जुलाई : भगवान विमलनाथ मोक्ष कल्याणक
08 जुलाई : भगवान नमिनाथ जन्म-तप कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

18 जून : श्रुत पंचमी
10 जुलाई : रोहिणी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

17 जून : 05/46 बजे से 06/21 बजे तक ।
20 जून : 25/20 बजे से 29/47 बजे तक ।
23 जून : 05/47 बजे से 27/21 बजे तक ।
25 जून : 05/48 बजे से 29/48 बजे तक ।
30 जून : 18/30 बजे से 29/49 बजे तक ।
06 जुलाई : 06/55 बजे से 29/51 बजे तक ।
08 जुलाई : 05/52 बजे से 07/39 बजे तक ।
09 जुलाई : 29/21 बजे से 29/53 बजे तक ।
11 जुलाई : 05/53 बजे से 24/44 बजे तक ।
12 जुलाई : 21/55 बजे से 29/54 बजे तक ।
13 जुलाई : 05/54 बजे से 18/59 बजे तक ।

चेतन कृति विशेषांक

संस्कार सागर

• वर्ष : 19 • अंक : 230 • जून 2018
• वीर नि.संवत 2545 • विक्रम सं. 2074 • शक सं. 1939

लेख

- आचार्य विद्यासागर की चेतन कृतियों में लौकिक शिक्षा 08
- उमड़ पड़े युवा दीक्षार्थी 09
- हिन्दी भाषिया का समर्पण आचार्य विद्यासागर जी के चरणों में 09
- आचार्य विद्यासागर के चिन्तन में द्रव्य का लक्षण 11
- आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन में द्रव्य से पर्याय सर्वथा पृथक नहीं है 14
- नर्मदा का नरम कंकर में आध्यात्मिक छटा 17
- क्रिया, परिणाम और अभिप्राय 34
- बृहद्द्रव्यसंग्रह की कतिपय गाथाओं का पुनरीक्षण 41
- तमिलनाडु में जैन साधकों की साधना भूमि 45
- आचार्य विद्यासागर के शिष्य समूह में भारत का प्रतिनिधित्व 57
- वास्तु और जैन कर्मसिद्धान्त 58
- जैन दर्शन में पर्याप्ति और प्राण 69
- जैन आकृति भगवान् पार्श्वनाथ तथा खुजराहो जैन मन्दिर 75
- जैनधर्म तथा जैनदर्शन 78
- साहस की मूर्ति, आर्यिका प्रभावनामति 87
- वात्सल्य की मूर्ति आर्यिका वृषभमति जी 88
- तपस्या के आगे सूर्य भी नत परीषह जयी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज 90
- परीक्षा लेकिन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की देव करते सुरक्षा 91

बाल कहानी

- **इस्पेक्टर अधर्मवीर** घटना पानीपत शहर के बलजीत नगर की है 55

कविता

- हम नहीं इण्डिया,भारत बोलो 13
- फिर छुट्टी में आऐंगे 15
- बहम 21
- ज्ञानवर्धक ज्योति 26
- काया की माया 32
- दो चन्द्रमा 50
- सूर्यसम प्रभावंत 86

कहानी

- जिसे दिखाना था दिखा दिया 39

नियमित स्तंभ

• **पाती पाठकों की** : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 10
• चलोदेखें यात्रा : 16 • आगम दर्शन :19 • पुराण प्रेरणा : 23 • माथा पच्ची : 23 • कैरियर गाइड : 24
• दुनिया भर की बातें : 27 • इसे भी जानिये: 32 •दिशा बोध :33 • आओसीखें : जैन न्याय : 38
• हमारे गौरव : 51 • बाल मनोविज्ञान : 53 • हास्य तरंग :54 • बाल संस्कार डेस्क : 55
• संस्कार गीत व बाल कविता : 56 • डाकटिकटों पर जैन इतिहास :75 • समाचार : 93

प्रतियोगिताएं :अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा :95 : वर्ग पहेली : 98

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634441
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,
इन्दौर (म.प्र.)
आंतरिक सज्जा :आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : **2100/-** (15 साल)
परम संरक्षक : **15000/-**

अपनेशहर के
- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (संस्कार सागर)
  खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक (ब्र. जिनेश मलैया)
  खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स
  खाता क्र.07882151004198(IFSC:ORBC0100788)
- आईडीबीआई बैंक (श्री दिगंबर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 155104000037022
- आईसीआईसीआय बैंक (श्री दिगम्बर जैन युवक संघ)
  खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपनेपूर्ण पतेसहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय कोसूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, इंदौर में पिछले कुछ दिनों में नशीली दवाओं का जखीरा पकड़ा गया है। ये वे दवाएं है। जिन्हें सामान्य ढंग से मेडिकल स्टोर्स में बेचा नहीं जा सकता सिर्फ डॉक्टर की चिट्ठी पर पूरी सावधानी के साथ ही दिया जा सकता है बाबजूद इसके इंदौर में इनकी खरीद फरोख्त धडल्ले से हो रही है। पिछले दिनों हुई दो बड़ी कारवाई में कई चौकाने वाले खुलासे हुए जब सेवा के केन्द्रों पर व्यसन और नशा की वस्तुओं का प्रसार होने लगेगा तो यह कहा जायेगा कि जहां अमृत की उम्मीद थी वहां से विष बांटा जा रहा है। प्रशासनिक तंत्र ने मात्र खाना पूर्ति और कागजी कार्यवाही करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ ली है। इससे सरकारी इरादों पर भी सवाल पैदा होता है। सरकार को व्यसन मुक्ति के अभियान को जिम्मेदारी से चलाना चाहिए।

श्री सुरेश जैन (बैंक वाले) इन्दौर

• सम्पादक महोदय, बर्मिधम में 2022 में मिलने के वादे के साथ गोल्ड कोस्ट (आस्ट्रेलिया) में 21 वें राष्ट्र मंडल खेलों का भव्य समापन हो गया गोल्ड कोस्ट खेलों में 71 देशों ने भाग लिया भारतीय खिलाड़ियों ने 66 पदक जीते (26 स्वर्ण 20 रजत और 20 कांस्य) अंतिम दिन सायना नेहवाल ने एकल बेडमिटन एकल में स्वर्ण पदक जीता। दो एथलिट खिलाड़ियों के कमरे में सुई मिलने के कारण उन्हें खेल से बाहर होना पड़ा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं घोषणा कर चुके हैं कि खेल और खिलाड़ियों के लिए संसाधनों की कोई कमी नहीं आने दूंगा यदि इसे ईमानदारी से पालन किया जाये तो एशियन और फिर ओलम्पिक खेलों में भी हमारे खिलाड़ी सफलता का अभियान दोहरा सकेंगे।

श्रीमति परी जैन मंडावरा

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के मई अंक में आचार्य विद्यासागर जी के सान्निध्य में हुये गजरथ पंचकल्याणक महोत्सव की सूची देखकर मैं विभोर हो गया एक संत ने अपने जीवन काल में 62 गजरथों का मात्र आयोजन ही नहीं कराया अपितु इन आयोजनों के माध्यम से जो दान संग्रहित हुआ उसके उपयोग की प्रेरणा पूज्य आचार्य श्री ने तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं तीर्थो के संरक्षण और संबर्द्धन का महान कार्य पूरे देश में सम्पन्न हो सका, एवं प्रतिभास्थली जैसे शिक्षा केन्द्रो का संचालन भी गजरथ पंचकल्याणक में एकत्र दान से सम्पन्न हो रहा है। तथा स्वरोजगार योजना, हथकरघा जैसे स्वदेशी करण का ठोस कार्य आचार्य श्री की प्रेरणा से सम्पन्न हो रहा है, ऐसे दूर द्रष्टा आचार्य श्री के माध्यम से जो भी समारोह और समायोजन होते हैं उनसे श्रमण संस्कृति की पताका एक दिन गगन चुंबी अवश्य होगी। **श्रीमति शशि जैन छिंदवाड़ा**

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के मई अंक में प्रकाशित सम्मान्नीय सुनीता कहानी को पढ़ा, कहानी की कथा वस्तु पर विश्वास नहीं होता है कि ऐसी घटना सच हो सकती है। ज्वेलरी से भरे 11 लाख नगद राशि से युक्त बैंग किसी को मिल जाये और वह पता लगाकर बैंग के मालिक को सूचना दे और स्वंय पुलिस अधिकारी के पास जाकर बैंग जमा करायें यह तो हमें दिन का ही सपना लगता है। पर यह घटना सच मान ली जाये तो स्वर्ग का द्वार अवश्य खोलती है लगता है कि एक बार फिर किसी खिड़की से सतयुग निहार रहा है और यह बात सत्य सिद्ध हो रही है कि कोई ऐसा मानने वाला भी है जो पर धन को पत्थर के समान मानता है सुनीता की निर्लोभता सचमुच में सम्मानीय है। यह भाव व्यक्ति को अपनाना चाहिए। चोरी का जिसका भी त्याग होता है वह सुनीता का अनुकरण अवश्य ही करेगा कहानी मर्म स्पर्शी और सरल सुबोध है।

श्रीमति अनीता जैन इन्दौर

भक्ति तरंग

अपना काम करो

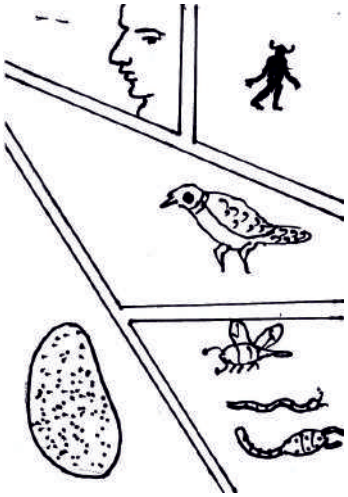

अब तेरी सुनि बातड़ी, चुप रहौ रे जिया, धंधा रे करता ।। टेक।।
काल अनन्ता निगोद में, भरम्या इम भाई ।।
अष्टादश भव इक सांसा में, धारे दुखदाई ।।1।।
पुनि विकलत्रय ऊपज्या, पुनि हुआ असैनी
अब सैनी मानुष भया, पाया कुल जैनी।। अब. ।।2।।
अशुभ किये ह्वै नारकी, नाना दुख पावै ।।
शुभतैं सुरगन सुख लहै, आगम इम गावै।।अब.।।3।।
दोउ शुभाशुभ त्यागि कै, अपना पद ध्यावै ।
बुधजन जब थिरता लहै, फिर जन्म न पावै।।अब।।4।।
अरे जिया ! तेरी बाते बहुत सुनकी, अब चुप रहो,
अपना काम करो अपना काम साधो ।

अनन्तकाल तक तू निगोद में जन्म मरण करता रहा। भटकता रहा। एक श्वास में अठारह बार जन्म मरण किये और दुखदायी देह को धारण करता रहा।

फिर दो-तीन-चार इंद्रिय होकर जन्म लिया और फिर पंचन्द्रिय भी हुआ, मगर असैनी हुआ। अब भाग्य से सैनी होकर मनुष्य पर्याय और जैन कुल में जन्म लिया है। इसलिए अब कुछ अपना काम कर, अपना काम साध।

अशुभ कर्मों के साथ नारकी होकर अनेक प्रकार, दुख भोगे और शुभ कर्मो के वश स्वर्ग में सुखों का भोग किया। आगम में इन सबका वर्णन किया गया है।

अब शुभ अशुभ दोनों को त्याग कर अपने आत्मा स्वरूप का ध्यान करो, चिन्तवन करो। बधुजन कहते हैं कि अपने स्वरूप चिन्तन में स्थिर होने पर फिर जन्म न होगा अर्थात् जन्म मरण की श्रृंखला भंग हो जावेगी, दूर जावेगी।

संस्कार प्रवाह

दीक्षा के मानदंड

श्रमण संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन शिष्य परम्परा के संबर्धन में निहित है। प्रत्येक आचार्य परम्परा में शिष्य संग्रहण की वृत्ति देखी जाती है। भगवान महावीर के मोक्ष जाने के बाद से लेकर आज तक सभी आचार्यों ने साहित्य सृजन और शिष्यों को दीक्षा देकर श्रमण संस्कृति को प्रवाह मान बनाकर रखा है। आचार्य विद्यासागर महाराज ने भी सर्वाधिक दीक्षायें प्रदान करके अपने 50 वर्षीय संयम काल खण्ड को चिर स्थायी बना दिया है। तथा इतिहास की शिला पर स्वर्णिम लेख लिख दिया है। जो असंख्य वर्षों तक अमिट रहेगा।

आचार्य विद्यासागर जी से सदैव यह पूछना चाहा है कि उनके दीक्षा देने के मानदण्ड कौन कौन से हैं? क्योंकि उनके कई शिष्यों को प्रबल पुण्य होने के कारण शीघ्र दीक्षा प्राप्त हो गई और उनके कई समर्पित शिष्यों की दीक्षा अटक कर रह गयी। जिनके संबंध में सदैव यह प्रश्न खड़ा होता रहता है कि इनकी दीक्षा जल्दी क्यों इन योग्य समर्पित शिष्यों की दीक्षा क्यों नहीं।

आचार्य श्री के दीक्षा के मानदण्डों में वैराग्य, आत्म साधना, समर्पण, लगन शीलता एवं विषय भोगों से विरक्ति प्रथम आधार रहा है। आचार्य विद्यासागर जी ने शिष्यों के माता-पिता एवं परिवार की आज्ञा को कभी महत्व दिया है तेा कभी नहीं दिया। शैक्षणीक योग्यता को भी उन्होंने दीक्षा का आधार नहीं बनाया क्योंकि उनके कई शिष्य मात्र प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हैं तो उनके द्वारा दीक्षित 34 मुनि पी.जी. शिक्षा प्राप्त हैं तथा 42 आर्यिकायें स्नातकोत्तर हैं उच्च शिक्षा प्राप्त हैं। तथा एक क्षुल्लक एम.बी.बी.एस भी हैं। तथा प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कई मुनि एवं आर्यिकायें योग्य एवं प्रभावना करने में अत्यन्त समर्थ हैं। स्वाध्याय, शीलता और अध्यात्मिक चिंतन दीक्षा का आधार माना गया है। पूज्य आचार्य श्री के शिष्यों में अनेक शिष्य व्याकरण सिद्धान्त, दर्शन व अध्यात्म के अधिकृत विद्वान हैं। पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अब तक 120 मुनि 172 आर्यिका एवं 20 ऐलक दीक्षायें देकर श्रमण संस्कृति की भव्य साधु माला को विस्तार प्रदान किया है। दीक्षाओं के साथ-साथ आवश्यक सम्यक् संस्कार देने का सबसे महत्वपूर्ण कार्य भी किया है जिससे आचार्य विद्यासागर जी का शिष्य समूह भारत भर में अपनी अलग ही पहचान बनाये हुये है। हम कह सकते हैं कि उनके दीक्षा देने के मानदण्ड जो भी हों वो अलग बात है किन्तु संस्कार देने की प्रवृत्ति अपने आप में अनूठी है। यदि दीक्षा के उपरान्त अनुशासन और संस्कार देने का कार्य प्रत्येक आचार्य करने लगे तो दिगम्बर जैन धर्म की पताका एक दिन विश्व व्यापी अवश्य होगी।

आचार्य विद्यासागर की चेतन कृतियों में लौकिक शिक्षा

❊ ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर) ❊

परम पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज लौकिक शिक्षा की दृष्टि से स्वयं भी हाई स्कूल तक ही सीमित हैं किन्तु उनकी योग्यता और स्कूली शिक्षा के बाद ज्ञान अर्जित करने ललक रही है वह ललक अनुभव और योग्यता की दृष्टि से स्नातकोत्तर, विद्यावारिधि व विद्यावाचस्पति जैसी लौकिक उपाधियों से बहुत ऊपर वे अपना स्थान बनाये हुए हैं सच पूछा जाये तों यदि आचार्य विद्यासागर जी पुरस्कार ग्रहण करने लगे होते तो उन्हें नोबेल पुरस्कार कई बार मिल गया होता तथा भारत रत्न जैसे सम्मान से अभी तक उनका सम्मान कभी का हो गया होता।

आचार्य विद्यासागर जी महाराज के शिष्य समूह में कुछ शिष्य ऐसे हैं जिनके पास लौकिक शिक्षा भले ही किसी उपाधि से उन्हें विभूषित नहीं कर पाई हो परन्तु वे साहित्यक, दार्शनिक दृष्टि से मानदेय उपाधियों के अधिकारी अवश्य हैं ।चूंकि साधु बनने के बाद उपाधियों का कोई महत्व नहीं रह जाता है मुनि शब्द से बड़ा डाक्टर शब्द कभी नहीं हो सकता है।

आचार्य विद्यासागर जी के शिष्यों में 23% प्रतिशत मुनि आर्यिका स्नातकोत्तर हैं। सर्वप्रथम मुनि क्षमासागर जी आचार्य श्री से दीक्षित हुए जिनकी लौकिक शिक्षा एमटेक रही। इसके बाद स्नातकोत्तर शिष्यों की संख्या इस प्रकार है मुनि 34,आर्यिका 41 क्षुल्लक 1 एवं 1 क्षुल्लिका इस तरह 329 शिष्यों में से 77 शिष्य स्नातकोत्तर हैं। 33% शिष्य स्नातक शिक्षा स्तर तक अपना स्थान बनाये हुए हैं। 44 मुनि 55 आर्यिकायें, 8 ऐलक 3 क्षुल्लक स्नातक स्तर तक शिक्षित हैं। 329 शिष्यों में से एक सौ दस शिष्य स्नातक हैं। हायर सेकेण्डरी इंटरव्युमीडीएड एवं उच्च शिक्षा प्राप्त 28 प्रतिशत शिष्य हैं हायर सेकेण्डरी पास 28 मुनि 60 आर्यिका 3 ऐलक 1 क्षुल्लक और एक क्षुल्लिका माता जी हैं। मात्र 4 प्रतिशत शिष्य प्राथमिक शिक्षा तक सीमित है परन्तु ये प्राथमिक शिक्षा प्राप्त शिष्यों की योग्यता स्नातकोत्तर शिष्यों से भी अधिक है। इनमें आर्यिका मृदुमति भले ही मात्र पाँचवी तक लौकिक शिक्षा में रही किन्तु इन्होंने बड़े-बड़े ग्रंथो का अनुवाद और कई विधानों का सृजन किया है तथा आप न्यायदर्शन व्याकरण व संस्कृत भाषा की उद्भट विद्वान हैं। योग्यता और लौकिक शिक्षा की तुलना नहीं की जा सकती है। आचार्य श्री के सभी शिष्य प्रतिभाशाली श्रेष्ठ प्रवचनकार एवं धर्म प्रभावना में सबसे आगे हैं। कोई भी शिष्य या शिष्या किसी से कम नहीं है। संपूर्ण योग्यता का श्रेय पूज्य आचार्य श्री को ही जाता है जिन्होंने कठोर श्रम करके अपने शिष्यों को अनुशासित संस्कारमय और योग्य बनाया है।

उमड़ पड़े युवा दीक्षार्थी

❊ इजि. अभिषेक जैन (इन्दौर) ❊

12 दिसम्बर सन् 1975 तक वह शुभ दिन था जब आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज 4 युवा शिष्यों को सोनागिर के पवित्र तीर्थ पर दीक्षित कर रहे थे उस समय क्षुल्लक समय सागर की उम्र मात्र सत्रह वर्ष की थी और सत्रह वर्ष की आयु में दीक्षा लेने वालों की लाइन लग गई थी बीस वर्ष से लेकर पच्चीस वर्ष तक की आयु के दीक्षा लेने मुनि समूह की संख्या कितनी है ? तथा इसी आयु वर्ग में दीक्षा लेने वाली आर्यिका माताओं जी संख्या 52 है 26 वर्ष से लेकर 30 वर्ष तक के युवा जो मुनि रूप में दीक्षित हुए उनकी संख्या 28 तथा 26 साल से 30 साल के बीच में भगवती दीक्षा ग्रहण करने वाली आर्यिका माताओं की संख्या 60 है 31 से 36 साल की आयु में दीक्षा लेने वाले मुनि शिष्यों की संख्या 35 पैंतीस है जबकि इस उम्र में दीक्षा लेने वाली आर्यिका माताओं की संख्या 32 है। 36 से 45 साल की आयु में दीक्षा लेने वालों की संख्या बहुत कम है। मुनिगण मात्र 21 हैं तथा आर्यिका माताओं की संख्या मात्र 10 है। 46 से 90 साल का एक आयु समूह भी बनता है इस आयु में दीक्षा लेने वालों की संख्या में मुनि मात्र दो हैं और आर्यिकायें मात्र 5 हैं। सत्रह वर्ष की आयु में दीक्षा लेने वाली आर्यिका माता अनर्घमति इकलौती हैं। इस तरह, हम कह सकते हैं पूज्य आचार्य श्री से दीक्षा लेने वाला युवा वर्ग ही सबसे आगे रहा।

हिन्दी भाषियों का समर्पण आचार्य विद्यासागर जी के चरणों में

❊ ब्र. समता दीदी (इन्दौर) ❊

आचार्य विद्यासागर जी महाराज की मात्र भाषा कन्नड रही है लेकिन आज जब भी उनका कोई प्रवचन सुनता है वह किसी भी प्रकार से यह महसूस नहीं कर पाता है कि आचार्य विद्यासागर जी हिन्दी भाषा भाषी नहीं होंगे। यह आचार्यश्री की बहुत बड़ी साधना व तपस्या है कि उन्होंने ब्रह्मचारी अवस्था में ही हिन्दी भाषा का अपना रूझान स्पष्ट कर दिया था उनका हिन्दी संस्कृत प्राकृत अपभंश भाषा में एकाधिकार बन गया था। आचार्य श्री ने अंग्रेजी के माध्यम से अनुवादित कई ग्रंथों का सूक्ष्म अध्ययन किया है वे अंग्रेजी भाषा को भी अधिकार पूर्वक बोलते हैं अतः भाषा के आधार पर आचार्य श्री को बहुभाषाविद विद्वान कहा जा सकता है।

आचार्य श्री ने जब दीक्षा देना प्रारंभ किया तब उनके शिष्य मराठी भाषी थे एवं मराठी भाषी शिष्यों ने ही दीक्षा प्रारंभ में ली। हिन्दी भाषी शिष्य बनने का प्रारंभ क्षुल्लक चारित्रसागर से हुआ इसके बाद हिन्दी भाषी मुनि 120 में से 109 शिष्य बने 7 कन्नड भाषी व 4 मराठी भाषा भाषी शिष्य बने आर्यिका शिष्याओं में 172 में से 170 आर्यिका माताजी हिन्दी भाषी हैं। मात्र दो आर्यिकायें कन्नड भाषा भाषी हैं। सभी ऐलक क्षुल्लक हिन्दी भाषा भाषी हैं। मात्र एक क्षुल्लिका गुजराती मूल भाषा की हैं।

संयम स्वास्थ्य योग

बड़ी इलायची
Amomum Subulatum

पर्याय नाम- हिन्दी- बड़ी इलायची, बंगला इलायची, काली इलायची, नेपाली इलायची
संस्कृत- स्थूलैला, मद्रैला, इन्द्राणी
गुजराती- पालचा, जाड़ी एलची, नर एलची
बंगाली- बड़ एकाच, बड़ इलाइच
अंग्रेजी- Thegreater, Nepal Cardamom
लेटिन- अमोमम सब्यूलेट्स Amomum Subulatun

उत्पत्ति स्थान- नेपाल आदि पूर्वी हिमालय के जंगलों में उत्तर प्रदेश के पहाड़ी हिस्सों में, दक्षिण में मलावार में होती है।

उपयोगी अंग- बीज

गुण धर्म - शीत वीर्य, उष्ण विपाक है। पित्तकारक एवं रूक्ष है। यह जठराग्नि वर्धक (मूख बढ़ाने वाली) है। मुंख कंठ को शुद्ध कर वातकफज रोगों में श्वांस, कास, रक्तपित्त एवं वमन में लाभप्रद हैं।

औषधीय प्रयोग- 1. बड़ी इलायची बीज का चूर्ण, सफेद मूसली, एवं मिश्री मिलाकर दूध के साथ सेवन करें , वल वीर्य वर्धक हैं। 2. बड़ी इलायची चूर्ण एवं वेलगिरी चूर्ण समभाग 1-1 ग्राम जल से लेने से अतिसार (दस्तों) में लाभप्रद है। 3. बड़ी इलायची चूर्ण, सोंठ एवं कालानमक मिलाकर लेने से पेठ दर्द, अफारा एवं आध्यमान में लाभ होता है। 4. बड़ी इलायची एक तरफ से सेंककर (कच्ची पक्की कर) चूर्ण कर समभाग मिश्री मिलाकर या चासनी से लेने से यह वमन (उल्टियों) पर लाभ करता है। गर्भावस्था में होने वाली उल्टियों में भी लाभप्रद है।

जैनोदय का शुद्ध घी

विभिन्न लोगों की विभिन्न रूचि को देखते हुए अब घी 3 प्रकार की विविधताओं में उपलब्ध हैं।

1. देशी गिर गाय के दूध के माखन से (बिलो कर) बनाया हुआ घी -1200/- रूपये प्रतिकिलो।
2. (गाय भैंस का) माखन से (बिलो कर) बनाया हुआ घी 700/- रूपये प्रतिकिलो।
3. भैंस के दूध की क्रीम से बनाया हुआ घी 450/- रूपये प्रतिकिलो

आप आवश्यकता अनुसार मंगा सकते हैं।

मध्यप्रदेश की गौ संवर्धन योजना से आर्थिक मदद प्राप्त कर 80 परिवार गाय-भैंस का पालन कर प्रतिदिन शुद्ध घी तैयार करते हैं एवं परिवारों में से 12 परिवार सीमित मात्रा में सोले का घी तैयार करते हैं। यह घी हम व्यापारिक दृष्टि या सोच के आधार पर विक्रय नहीं करते अपतु हमारा प्रयास मात्र आप तक शुद्ध वस्तु पहुंचाने का एवं इसके द्वारा गौशलाओं के संरक्षण एवं सवर्धन का है।

सम्पर्क करें : 7999646061

आचार्य विद्यासागर के चिन्तन में द्रव्य का लक्षण

✻ एलक सिद्धांत सागर जी ✻

पं. गोपालदास जी वरैया का पॉकिट ग्रन्थ जैन सिद्धान्त प्रवेशिका में द्रव्य की परिभाषा-गुणों के समूह को द्रव्य कहते हैं। यह परिभाषा पूज्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज को आगम की कसौटी पर उचित नहीं लगी। अतः उन्होंने द्रव्य के लक्षण पर तत्त्वार्थ सूत्र के सन्दर्भ में एवं जैन आगम के सन्दर्भ में गहन चिन्तन करके यह निष्कर्ष निकाला की गुण और पर्याय के समूह को द्रव्य कहना चाहिए। परन्तु धारा के विपरीत चिन्तन करने वाले सन्त शिरोमणि को विद्वानों के समक्ष यह सिद्ध करना था कि गुण और पर्याय के समूह को ही द्रव्य कहा जाना चाहिए। परन्तु तत्कालीन विद्वत समूह जैन सिद्धान्त प्रवेशिका के विरुद्ध एक भी शब्द सुनने को तैयार नहीं था। परन्तु आचार्य श्री विद्यासागर जी ने अपने विषय को सविनय विद्वानों के समक्ष रखा और उन्होंने तत्त्वार्थ सूत्र का एक सूत्र आधार बनाया- **''गुणपर्ययवद द्रव्यं''** गुण और पर्याय वाला द्रव्य होता है इसी आशय का कथन अन्य ग्रन्थों में भी उपलब्ध होता है। प्रवचन सार की गाथा 23 की तत्त्वप्रदीपिका टीका में आचार्य अमृतचन्द्र देव ने समगुणपर्याय द्रव्यं इति वचनात् अर्थात गुण और पर्याय के समूह को द्रव्य कहा है इसी का समर्थन करते हुए आचार्य जयसेन जी ने भी समगुणपर्याय द्रव्यं भवति इस प्रकार लिखा है। तथा इसी प्रवचनसार ग्रन्थ के दूसरे अध्याय में आचार्य अमृतचन्द्र देव ने लिखा है- **''इयं हि सर्वपदार्थानां द्रव्यगुणपर्यायस्वभाव प्रकाशिका पारमेश्वरी व्यवस्था साधीयसी, तपुनरितरा।''** इस कथन में भी द्रव्य को गुण और पर्याय को समूह रूप में माना हैं।

आचार्य कुन्द कुन्द देव ने पंचास्तिकाय ग्रन्थ की गाथा 10 में द्रव्य के लक्षण करते हुए कहा है -

दव्वं सल्लक्खणियं उप्पादव्वय धुवत्तसंजुत्त।

गुणपज्जयासयं वा जं जं भण्णंति सव्वण्हू।।10।।

द्रव्य का लक्षण सत् है और सत् उत्पाद,व्यय, धौव्य से युक्त होता है तथा गुण और पर्याय के समूह को सर्वज्ञ देव ने द्रव्य कहा है। इससे सिद्ध होता है कि गुणों के समूह को द्रव्य कहना अपने आप में अपूर्ण परिभाषा है।

यदि पर्यायों से रहित गुणमात्र को द्रव्य का लक्षण सिद्ध किया जायेगा तो द्रव्य मात्र ध्रुव रह जायेगा और उत्पाद व्यय का द्रव्य से अभाव हो जायेगा। जबकि आचार्य उमास्वामी जी ने द्रव्य का लक्षण सत् बताया है और सत् को उत्पाद व्यय ध्रौव्य के रूप में देखा है। आचार्य कुन्द कुन्द देव ने यह भी कहा है कि उत्पाद के विन व्यय नहीं होता है और व्यय के बिना उत्पाद नहीं होता है और उत्पाद व्यय के बिना ध्रौव्य नहीं होता है और ध्रौव्य के विना उत्पाद व्यय भी नहीं होता है इस सन्दर्भ में आचार्य कुन्द कुन्द देव ने प्रवचन सार की 8वीं गाथा अध्याय में अवलोकनीय है।

ण भवो भंगविहीणो भंगो वा णत्थि संभवविहीणो।

उप्पादो वि य भंगो व विणा द्योव्वेण अत्थेण।।8।। प्र.सा. 2आ.

तथा इस ग्रन्थ में यह भी विवेचित किया गया है कि उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य में समय भेद भी नहीं होता है अर्थात जिस समय उत्पाद होता है उसी समय व्यय होता है और जिस समय

उत्पाद, व्यय होता है उसी समय ध्रौव्य होता है। इस प्रंसग में प्रवचन सार की 10वीं गाथा भी द्रष्टवा है -

समवेदंखलुदव्वंसंभवठिदिणाससण्णिट्ठेह। एक्कम्मि चेव समये तम्हा दव्वं खु तत्तिदयं ॥10॥ प्र.सा. 2 अ.

द्रव्य का लक्षण बताते हुए वीरसेनाचार्य जी ने कहा है कि एक द्रव्य में अतीत अनागत और वर्तमान पर्याय जितनी है वे अर्थ और व्यञ्जन पर्याय हैं अर्थ और व्यञ्जन पर्याय जितने प्रमाण में हैं उतने प्रमाण में द्रव्य होता है। अर्थात् पर्याय मय द्रव्य होता हैं। इसी आशय से यह गाथा 199/386 पठनीय है।

एय दवियम्मि में अत्थपज्जया वयण पज्जया वावि।

तीदाणागयभूदा तावदियं तं हवइ दव्वं॥199॥ घ.॥1/9.136

इसी आशय का सन्दर्भ कषाय पाहुड़ में भी उपलब्ध होता है क.प. 1/114 गाथा 108/253।

इसी प्रकार आचार्य समन्तभद्रदेव ने भी अपने अतिप्रिय ग्रन्थ आप्तमीमांसा में कहा है कि जो नैगम आदि नय और उनकी शाखा, उपशाखा रूप उपनयों के विषयभूत त्रिकालवर्ती पर्यायों का अभिन्न सम्बन्ध रूप समुदाय है उसे द्रव्य कहते हैं। इस सन्दर्भ में आप्त मीमांसा का यह श्लोक विचारणीय है।

नयोपनयैकान्तानां त्रिकालानां समुच्चयः।

अविष्वग्भाव संबन्धो द्रव्यमेक नेकद्या॥108॥ आ.मी.

श्लोकवार्तिक में आचार्य विद्यानन्दि जी ने पर्याय वद् द्रव्यं की मीमांसा करते हुए लिखा है। पर्ययवद्द्रव्यमिति हि सूत्रकारेण वदता त्रिकालगोचरानन्त क्रम भावि परिणामाज्जियं द्रव्य मुक्तम्॥ पर्याय वाला द्रव्य होता है। इस प्रकार कहने वाले सूत्र काटने तीनों कालों में क्रम से होने वाली पर्यायों का आश्रय होकर द्रव्य कहा है॥ (211/5)

आचार्य अमृतचन्द्र जी ने प्रवचन सार की गाथा 36 की टीका में कहा है कि - **''ज्ञेयं तु वृत्तवर्तमानवर्तिष्माणविचित्र पर्याय परम्परा प्रकारेण त्रिधाकाल कोटिस्पर्शित्वाद नाद्यनन्तं द्रव्यं** '' अतीतादि के भेद से उत्पादादि से द्रव्य गुण पर्याय के भेद से तीन प्रकार हुआ द्रव्य ज्ञेय होता है। अर्थात् गुण और पर्यावान द्रव्य होता है।

इन सभी प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि मात्र गुणों के समूह को द्रव्य कहना अपने आप में दार्शनिक मूल होगी,क्योंकि मात्र गुणों के समूह को द्रव्य मानने पर द्रव्य कूटस्थ हो जायेगा एवं सारूप मत की प्रासंगिकता कभी भी टाली नहीं जा सकती है तथा द्रव्य सामान्य विशेषात्मक भी सिद्ध नहीं होगा। जबकि आचार्य माणिक्यनंदी जी ने परीक्षा मुख के चतुर्थ अध्याय के प्रथम सूत्र में कहा- सामान्य विशेषात्मा तदर्थो विषयः कहा है।

द्रव्य को नित्यानित्यात्मक, भेदाभेदात्मक सिद्ध करना कठिन हो जाएगा क्योंकि पर्याय, विशेष, भेद, अनित्य, पक्ष को समायोजित करती हुई द्रव्य की पूर्णता करती है।

पर्याय के अभाव में द्रव्य सदैव अधूरा रहेगा अतः जिनेन्द्र भगवान की वाणी में विश्वास करने वाले लोग कभी भी मात्र गुणों के समूह को द्रव्य स्वीकार करने में असमर्थ रहेंगे। तब फिर क्यों ना जैन सिद्धांत प्रवेशिका की दी हुई द्रव्य की परिभाषा के पर्याय शब्द जोड़ दिया जाए और परिभाषा का नया रूप देते हुए यह कथन कर दिया जाए कि द्रव्य गुण और पर्याय के समूह को द्रव्य कहते हैं ऐसा करने पर जैन दर्शन की समग्रता का समावेश हो जाएगा और जैन मत की पताका विश्वव्यापी निर्विवाद हो जाएगी।

कविता

हम नहीं इण्डिया, भारत बोलो

रचियताः सुभाषचंद्र सरल (अशोक नगर म.प्र.)

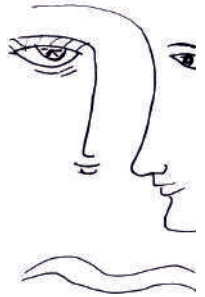

हम नहीं इण्डिया, भारत बोलो, हृदय के अन्तर पट खोलो
हम नहीं इण्डियन, शुद्ध भारतीय, भारत माता की जय बोलो
इण्डिया नहीं, भारत बोलो.....
नहीं रहे परतंत्र काहे फिर, हाय इण्डियन बने हुये हैं
याद करो उनकी कुर्बानी, जिनके बल हम तने हुये हैं
भाषा से नहीं नाम बदलता, यह निश्चित ही शैतानी है
हम इण्डियन कैसे हो गये, अंग्रेजों की कारिस्तानी है
भाग गये चालाक फिरंगी, अब तो अपना मानस तोलो
इण्डिया नहीं, भारत बोलो.....
पूर्वज हमारे रहे भारतीय, हम क्यों अपना नाम बदल रहे
अधिकृत नाम एक होता है, हम क्यों अपने दो दो धर रहे
ऋषि मुनियों का देश है अपना, नहीं इण्डिया बन पायेगा
आन मेट दी जिसने अपनी, नहीं कभी वो तन पायेगा
राष्ट्र की आन जान से प्यारी, भारत माता की जय बोलो
इण्डिया नहीं, भारत बोलो.....
कुर्बानी दी थी जिसके खातिर, चन्द्रशेखर और भगतसिंह ने
आजाद हिन्द थी फौज बनाई, जिसके खातिर वीर सुभाष ने
लाखों हुये शहीद राष्ट्र हित, भारत माँ की जय जय गाते
हम क्या इतने नालायक हैं, जो भारत माँ का मान घटाते
भारत माता अपनी माता, नहीं इण्डिया मम्मी बोलो
इण्डिया नहीं, भारत बोलो.....
संस्कृति हमारी रही पुरातन, अखिल विश्व में सदा महान
राम, कृष्ण आदर्श हमारे, महावीर की हम सन्तान
सत्य अहिंसा अपना दामन, त्याग रहा अपनी पहचान
जीवन्त सादा रखना है हमको, विश्व में उज्जवल अपनी शान
हम भारत थे, हम भारत हैं, भारत में अमृत रस घोलो
इण्डिया नहीं, भारत बोलो.....

आचार्य विद्यासागर जी के चिन्तन में द्रव्य से पर्याय सर्वथा पृथक नहीं है

❊ ब्र. सविता दीदी (पिपरई) ❊

वर्तमान में बिना गुरु के स्व स्वाध्यायी कई विद्वान प्रकार के अर्थ मनमाफिक निकालते हैं और धीरे-धीरे वे एकान्तग्राही बन जाते हैं। ऐसे ही द्रव्य के विषय में कुछ एकान्त ग्राही लोगों ने अपना राग अलपना शुरु कर दिया है। वे कहते हैं कि द्रव्य से पर्याय सर्वथा भिन्न होती है। इस उच्छृंखल धारणा को सुनकर पूज्य आचार्य की विद्यासागर जी महाराज बहुत चिन्तित हुए और उन्होंने आगम के परिप्रेक्ष्य में अपनी खोजबीन करना शुरु कर दी। उन्होंने सर्वप्रथम अपने शिष्यों को यह बताना प्रारम्भ किया कि द्रव्य और पर्याय का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। पर्याय के बिना द्रव्य नहीं होता है और द्रव्य के बिना पर्याय नहीं होती है। दोनों अनन्यभूत होती है तथा उनके शिष्यों द्वारा जब यह प्रश्न उत्पन्न किया गया कि यदि पर्याय द्रव्य से पृथक नहीं होगी तो उसके ध्रुव स्वभाव का अवलम्बन कैसे लिया जावेगा। तब आचार्य श्री ने पंचास्तिकाय की गाथा 12 दिखाते हुए कहा कि

पज्जयविजुदं दव्वं दव्वविजुत्ता य पज्जया णत्थि।
दोण्हं अणण्णभूदं भावं समणा परूविंति।।12।। पंचास्तिकाय।।

यदि द्रव्य से पर्याय सर्वथा शून्य हो जाए तो द्रव्य सर्वथा नित्य और कूटस्थ हो जाएगा। तथा सांख्य मत का प्रसंग आ जायेगा। युक्त्यानुशान ग्रन्थ में आचार्य समन्भद्र देव जी कहते हैं कि द्रव्य की सर्वथा कोई व्यवस्था नहीं बनती है और नहीं पर्याय की सर्वथा कोई व्यवस्था बनती है। और न सर्वथा द्रव्य की और पर्याय की पृथक व्यवस्था बनती है।

न द्रव्यपर्यायपृथग्व्यवस्था द्वैयात्म्यमेकार्यणया विरूद्धम्।
धर्मश्च धर्मी च मिथस्त्रि धेमौ न सर्वथा तेऽमिमतौ विरूद्धौ।। 47।। युक्त

आचार्य समन्तभद्र देव के इस काव्य से यह ध्वनित होता है कि द्रव्य और पर्याय की सर्वथा पृथक् व्यवस्था मानने पर वस्तु व्यवस्था भंग हो जायेगी।

आचार्य जयसेन जी ने पंचास्तिकाय की 12 गाथा की टीका में स्पष्ट कहा है कि गोरस से द्रव्य, दूध, दही, घृत आदि की पर्याय रहित नहीं होता है ठीक उसी प्रकार द्रव्य भी पर्याय से रहित नहीं हो सकता है। तथा गोरस रहित दूध, दही, घृत की पर्यायें नहीं होती है। उसी प्रकार द्रव्य से रहित पर्यायें नहीं होती है। इसी आशय का कथन पूज्य आचार्य अमृतचन्द्र जी ने भी अपनी तत्त्वप्रदीपिका टीका में किया है -

इससे यह स्पष्ट होता है कि भाव श्रमण पदार्थ को द्रव्यपर्यायत्मक ही मानते हैं।

कषाय पाहुड ग्रन्थ में धर्म और धर्मी रूप भेद होते हुए भी वस्तु स्वरूप से पर्याय और पर्यायी में भेद नहीं होता है। अर्थात् द्रव्य और पर्याय में सर्वथा भेद नहीं होता है। धवला 3/1/219 में कहा है त्रिकाली पयायों का पिण्ड होने से कथञ्चित् एक और अनेक है। लक्षण की अपेक्षा से द्रव्य और पर्याय में भेद है किन्तु वह पर्याय द्रव्य से पृथक नही होती है अपितु जब भी द्रव्य से पर्याय का सम्बन्ध रहता है उस समय वह पर्याय उस द्रव्य से तन्मय रहती है।

परिणमदि जेण दव्वं तक्कालं तम्मय त्ति पण्णत्तं।
तम्हा धम्मपरिणदो आदा धम्मो मुणेदव्वो।। 8।। प्र.सा.प्र. अध्याय।।

जिस पर्याय के साथ द्रव्य परिणमन करता है उस समय वह पर्याय उस द्रव्य से तन्मय होती है जैसे-लोहे का गोला जब अग्नि में डाला जाता है तब उस रूप होकर परिणमता है अर्थात् वह उष्णपने से तन्मय हो जाता है इसी प्रकार जब द्रव्य जिस पर्याय से परिणमन करता है तब वह पर्याय उस द्रव्य से तन्मय होती है इस गाथा के उद्धारण से यह सिद्ध होता है कि द्रव्य जिस समय पर्याय युक्त होता है उस समय वह पर्याय और द्रव्य का तादाम्य सम्बन्ध होता है। इस तात्कालिक तादाम्य संबन्ध को मान्य करने के उपरान्त द्रव्य की पर्याय से सर्वथा पृथक मानने की अवधारणा स्वतः मूल शून्य हो जाती है।

कविता

फिर छुट्टी में आऐंगे

❊ कृति सिंघई (समता कालोनी रायपुर)❊

इडली डोसा और कचौड़ी,
नानी घर चलकर खाऐंगे
धूम धड़ाका मस्ती खोरी,
दिन भर खूब मचाऐंगे,
नानी के घर जाऐंगे।

गरमी की छुट्टी में मामा,
सारा इन्दौर घुमाऐंगे,
कांच का मंदिर अरू अन्नपूर्णा,
सिरपुर ताल घुमाऐंगे ,
नाना के घर जाऐंगे।

गोम्मटगिरि ह्रींकारगिरिअरु,
पंच बालयति भी जाऐंगे,
नानी से पैसे ले लेकर,
खूब खिलोंने लाऐंगे ,
नाना के घर जाऐंगे।

पीपल्यापाला, सिरपुर ताल
चिड़िया घर फिर शापिंग मॉल,
सरकस देख सब दंग रह गए,
फिर छुट्टी में आऐंगे ,
नानी के घर जाऐंगे।
नाना के घर जाऐंगे।।

चलो देखें यात्रा

संघी जी सांगानेर

नाम एवं पता :-श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र संघी जी, संघी जी सांगानेर जिला जयपुर- 302029 फोन : 0141-2730390, 2731952 श्री नरेन्द्र कुमार पांडया फोनः 0141-2730065, 098290-17533

सुविधायें : स्टेशन सांगानेर एवं जयपुर है। जयपुर स्टेशन 15 किमी. तथा सांगानेर 5 किमी. है। नारायण सर्किल से सांगानेर तक सिटी बस सेवा है। यहां से 13 किमी है। जयपुर का हावाई अड्डा यहां से 25 किमी. है। अजमेरी गेट से लो फ्लोर बस मंदिर सर्किल तक पहुंचती है। पदमपुरा-22 श्री महावीर जी -184, चूलगिरी - 20, नारेली- 125 तिजारा-225

मागदर्शनः क्षेत्र पर 8 मंदिर है। यहां आदिनाथ भगवान मंदिर प्राचीन भव्य एवं कलात्मक मंदिर है। इनके शिखर खजुराहो शैली में है। सन् 1999 में मुनि सुधासागर जी महाराज द्वारा मंदिर के भूतल थे विराजित रत्नों की मूर्तियों को प्रकट किया था। दर्शनों के बाद यथास्थान रख दी गयी हैं। लाखों लोगों ने दर्शन का लाभ लिया था। क्षेत्र द्वारा ऋषभ देवग्रंथमाला में विपुल साहित्य उपलब्ध है।

समीपवर्ती स्थलः रेवासा (सीकर) - श्री दिगम्बर जैन भव्योदय अतिशय क्षेत्र रेवासा तहसील रौतारामगढ़ (सीकर) 332403 क्षेत्र जयपुर-सीकर रोड पर गोरीया मोड़ से (4 किमी.) ग्राम. रेवासा में स्थित है। यहां एक जिनालय में भगवान आदिनाथ एवं पास में स्थित नसियाँ में चंद्रप्रभु की प्रतिमायें विराजित है। यही पर भगवान सुमतिनाथ की प्रतिमा को स्थापित किया गया था। सन् 2001 में मुनि श्री सुधासागर महाराज के सानिध्य में 7 फीट की सहस्त्रफणी पार्श्वनाथ प्रतिमा शांतिनाथ की 7 फीट प्रतिमा तथा चौबीसी स्थापित की गई है। मंदिर में खम्भों की गिनती नहीं पाती यही अतिशय है। क्षेत्र सीकर से 18किमी. है। गोरिया रेलवे स्टेशन है और बस/ऑटो साधन उपलब्ध है।

सम्पर्क : 01572-22215 श्री दीपचंद काला मो. 094600-37999 जयपुर -115, खंडेला-50, रानीला (आचार्य ज्ञानसागर समाधिस्थल) - 8 किमी।

सुविधायें :- मूल मंदिर में अटैच 6 कमरे, नसियां-नवीन धर्मशाला में कमरे, भोजनशाला नियमित सशुल्क है।

नर्मदा का नरम कंकर में आध्यात्मिक छटा

❊ डॉ. सरिता जैन दोशी (नई दिल्ली) ❊

इस सदी के महान संत तीर्थंकर के नंदन महान आचार्य प्रवर परम पूज्य 108 विद्यासागर जी महाराज इस युग के महान आत्म साधक पथ प्रदर्शक हैं। आचार्य श्री एक उत्कृष्ट सन्त तो हैं ही, साथ ही एक कुशल कवि, श्रेष्ठ वक्ता, विचारक, तीर्थ, और शब्द-वारिधि के अवगाहक हैं। वे विद्या के सागर तो हैं ही अपितु उनका शब्द- शब्द भी विद्या का सागर है।

आचार्य श्री कृतित्व में अनेकों मोती हैं, परन्तु उनके काव्य संग्रह में एक अनमोल मोती है नर्मदा का नरम कंकर।

इस काव्य संग्रह में रत्नत्रय के आराधक संत का कवि हृदय और आध्यात्मिकता के स्पष्ट दर्शन प्रत्यक्ष प्रतिबिम्बित होते हैं।

आपके काव्य नर्मदा का नरम कंकर में आध्यात्मिकता के साथ-साथ वैराग्य-चिंतन भेद, विज्ञान, दर्शन एवं श्रेष्ठ काव्यत्व के गुण दृष्टि गोचर होते हैं। परन्तु इस काव्य में आध्यात्मिकता की बूँदे जो विद्या के सागर से निकली हुई हैं, उन बूँदों से जन-जन का हृदय अभिभूत हो जाता है।

प्रस्तुत हैं उनके काव्य नर्मदा का नरम कंकर में प्रतिबिम्बित आध्यात्मिक छटा। आचार्य श्री कहते हैं कि यह आत्मा अपने सहज शुद्ध और अनंत धर्म गुणों के यथार्थ बोध से युगों-युगों से वंचित है। इस आत्मा ने सुख शांति और आनंद के बिना ही अनंत काल व्यतीत कर लिया है।

यह पूरा संसार आकुल-व्याकुल है, त्रस्त है, पीडित है क्योंकि प्रत्येक प्राणी ने राग द्वेष को विषय-कषायों को अपने हृदय से नहीं हटाया है।

संसार में एक मात्र सुख और परम शरण वीतरागता है, उसे ही प्राणी ग्रहण नहीं करता शब्द शब्द में आध्यात्मिकता पर जोर देते हुए आचार्य श्री कहते है कि-

यह संसार आशाओं के महासागर से भरा हुआ है इस आशाओं के महासागर में रहने से अब तक किसी ने भी किनारा नहीं पाया है। मनुष्य की इच्छाओं की सीमा पाताल से भी नीची और आकाश से भी ऊँची है।

मानव अतीत में अनेकों बार विषय वासनाओं के महासागर में डूब चुका है इन वासनाओं से बाहर निकल ही नहीं पा रहा है।

आचार्य श्री स्वयं को मोक्षमार्ग का पथिक मानते हैं, अपने आप में पूर्ण विश्वास रखो हुए कहते हैं कि मैं इस भवसागर से पार अवश्य हो जाऊँगा, यद्यपि शरीर शिथिल हैं परन्तु मन में अटल विश्वास हैं कि मेरी आत्मा अधिक मजबूत है। आत्मा के साक्षात् दर्शन होने के बाद मेरा साहस मेरा उत्साह मेरे साथ है, मेरी कमजोर बाँहो से मैं निरंतर तैर रहा हूँ।

बीच-बीच में इन्द्रिय सुख एवं राग-द्वेष मुझे उलझाते रहते हैं ,मिथ्यात्व रूपी मगरमच्छ मुझे पकड़कर नीचे ले जाने का प्रयास करते हैं, किन्तु वे असफल हो जाते हैं। क्रोध-मान-माया-रूपी कषायें मेरी हिम्मत तोड़ने की कोशिश करते हैं, परन्तु में फिर भी उनसे बच निकलता हूँ।

मन को समझाते हुए आचार्य श्री कहते हैं कि यह मन मना करने के बाद भी नहीं मानता है। बार बार विषय कषायों की ओर भागता रहता है। स्व और पर का ज्ञान भी नहीं रखता है। इसको हित और अहित के विषय में भी कुछ ज्ञान नहीं है।

मन की स्वतंत्रता और स्वच्छन्दता से सभी परेशान है, परन्तु मन पर नियत्रंण कोई नहीं कर पाता है। परन्तु मन को समझाना पड़ेगा। मन पर नियंत्रण करना पड़ेगा। क्योंकि मोक्षपथ पर चढ़ाने के लिए सबसे पहले मन को संभालना बहुत जरूरी है। क्योंकि पूर्णज्ञान और पूर्ण संयम पाने के लिए मन का संभलना बहुत जरूरी है।

नर्मदा का नरम कंकर कविता में आचार्य श्री तीर्थंकर भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! हम युगों-युगों से जीवन को नष्ट करने वाले विनाशक कारणों में ही संघर्ष कर रहे हैं, किन्तु आज तक केवल अनन्त गुणों को गहन कर्माच्छादित ही कर रहे हैं और अशुद्धता का विकास कर रहे हैं। शुद्धता, सात्विकता और सम्यग्दर्शन का विकास तो केवल अनुमान ही बन कर रह जाता है। अतः हे प्रभु आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि इस कंकर का नया रूप निर्माण कर दो और इसमें अनंत गुणों का विकास कर दो मैं आपके चरणों में पूर्ण श्रद्धा और हृदय में अपूर्व विश्वास लिए उपस्थित हुआ हूँ।

इस तरह आचार्य गुरुवर का पूरा काव्य ही आध्यात्मिकता से भरा हुआ है। उनके काव्य का एक एक शब्द एक एक ग्रन्थ का निर्माण करने में सक्षम है। आचार्य श्री केवल काव्य निर्माता ही नहीं मोक्ष मार्ग के साक्षात् पथ-प्रदर्शक हैं । हमारे प्रेरणा स्रोत, पूज्यनीय और वन्दनीय हैं।

पूज्य गुरुवर के चरणों में सादर वंदन-वंदन- वंदन नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।

आगम दर्शन

भावों का मापदंडः भावपाहुड

आचार्य कुंदकुंद देव भगवान महावीर के मोक्ष गये उपरांत अत्यन्त प्रभावी, क्रिया निष्ठ, तत्व मीमांसक, दार्शनिक अध्यात्मिक तथा विश्ववन्दनीय महान संत हुए हैं। आपने आंधप्रदेश के कोडं कुंडम में लगभग 2000 वर्ष पहले जन्म लेकर 12 वर्ष की उम्र में जिन दीक्षा ग्रहण की थी। आपने दीक्षा उपरांत 84 पाहुड़ की रचना की। उनमें भाव पाहुड़ एक प्रसिद्ध ग्रंथ है।

प्रस्तुत ग्रंथ के मंगलाचरण में मनुष्य, देव और भवनवासी इंद्र के द्वारा वन्दनीय जिनवरद्रेण, सिद्ध परमेष्ठी और समस्त संघनीय आचार्य उपाध्याय साधु को ग्रंथ लिखने की प्रतिज्ञा की है । आपने साधु के लिंग या भेष को दो रूपों में बताया है। एक भाव लिंग और दूसरा द्रव्य लिंग है । भाव लिंग शून्य द्रव्य लिंग बाह्य परिग्रह का त्याग करने के बाद भी विफल होता है । करोड़ों जन्म के तप करने के बाद भी भाव रहित जीवों की सिद्धि की प्राप्ति नहीं होती है । अशुद्ध परिणाम के साथ भाव मुनिव्रत धारण कर निरर्थक होता है। और जीव भाव शून्य तप करने से चारों गतियों में भटकता है।

आचार्य श्री ने चारों गतियों का दुख का वर्णन बहुत ही मर्मस्पर्शी किया है। देव गति में भी दुख कारणों को बताते हुए मानसिक, दुखों का वर्णन किया है। मनुष्य गति में जन्म लेने के उपरांत गर्भ के दुख, जन्म के दुख, मृत्यु के दुख का वर्णन अनेक अलंकारों के साथ किया है। तथा विषभक्षण आदि के कारण अकालमृत्यु के लगभग 10 कारणों को गिनाया है। तद उपरांत 66 हजार 336 बार एक अंर्तमुहूर्त में मरण वाले निगोध के दुख का वर्णन किया है। रत्नत्रय के अभाव में अनेक बार कुमरण होता है। तथा अनन्तकाल तक ये जीव पंच परिवर्तन करता है । द्रव्य, क्षेत्र, काल भव, भाव और रूप पंचपरिवर्तन का भी वर्णन प्रस्तुत ग्रंथ में किया है । एवं गर्भवास भी अपवित्रता का वर्णन वीमल्स रस के साथ किया है । और शरीर की अशुचिता का वर्णन बहुत की संवेदन शील किया है।

द्रव्य लिंगी मुनियों की शूचि और कथाओं को बताते हुए बाहुबली की कथा मधुपिंगल मुनि का उदाहरण वशिष्ट मुनि तथा द्रव्य लिंगी मुनि को 84 लाख यौनी में भ्रमण का कारण बताया है । बाहु मुनि, दीपायन मुनि, शिवकुमार मुनि, अभयसेन मुनि, इन सब को मात्र द्रव्य लिंगी बताया है । किन्तु तुषमास शिवभूति मुनि को ज्ञान के अभाव में भी भाव लिंगी बताया है । जो बाहर से नग्न होते हैं और भाव लिंग साथ होते हैं उन्ळें कर्म का नाश करने वाला बताया है। भाव लिंगी मुनि शरीर आदि परिग्रहों से रहित होते हैं । मान कषाय से रहित और आत्मा में लीन होते हैं। उन्हें पर द्रव्य में कोई ममत्व नहीं होता है।

भाव लिंगी मुनि का चिन्तन नित्य आत्मा का होता है और वह बाह्य परिग्रह को

संयोग रूप मानते हैं। भाव लिंगी मुनि हो चारों गतियों के दुख से छूटता है। जीव के स्वरूप को जैसा सर्वज्ञ ने कहा है वैसा ही वे चिन्तन करते हैं। जीव का स्वरूप ज्ञानमय बताते हैं ।

भाव लिंग के बिना पढ़ना लिखना नग्न रहना सब व्यर्थ होता है मात्र नग्न हो जाना और कुमार्ग पर चलकर संसार में अपयश का कारण ही होता है । तथा हास्य का पात्र बनता है शुद्ध भाव ही स्वर्ग मोक्ष का कारण होता है। शुद्ध मोक्षमार्ग वाला ही जगत पूज्य होता है । मिथ्यात्व के साथ नग्नता अशोभनीय होती है । जिनेन्द्र देव ने शुभ, अशुभ और शुद्ध तीन प्रकार के भाव बताये हैं। आर्तरौद्र ध्यान अशुभ भाव हैं। धर्म ध्यान शुभ भाव है। तथा शुद्ध स्वभाव में रहना शुद्ध भाव है। मिथ्यात्व अहंकार ममकार का त्याग करने वाला ही जिन शासन केसार को समझता है विषय विरक्त श्रमण 16 कारण भावना भाकर तीर्थंकर प्रकृत्ति का बंध करता है।

द्रव्य भाव लिंग बताने के उपरांत धर्म का स्वरूप पुण्य को भोग का निमिन्त तथा धर्म को कर्मक्षय का निमित्त बताया है । आत्मा का स्वभाव ही धर्म है । और धर्म ही मोक्ष का कारण है । इन्द्रिय आदि वश में करके भाव वेश की सार्थकता होती है। तथा कषाय रहित परिषह को जीतने पर मोक्ष मार्ग प्राप्त होता है। भाव की शुद्धि के उपाय बताते हुए आचार्य श्री ने ब्रह्मचर्य का पालन, पदार्थ के स्वरूप का चिन्तन, बारह उप्रेक्षाओं का चिन्तन, चार आराधनाओं का चिन्तन, 46 दोष रहित शुद्ध आहार पंचाचार का पालन, सचित्र का त्याग, पांच प्रकार समिति का पालन, वैयावृत्ति, आलोचना, क्षमा आदि को धारण करने वाला ही भाव की शुद्धि बना पाता है।

आहारभय मैथुन और परिग्रह ये भाव को बिगाड़नें वाली चार संज्ञाये हैं। उत्तर गुण की प्रवृत्ति तत्व की भावना भावों को शुद्ध करती है। पुण्य और पाप के भाव की मीमांसा का वर्णन करते हुए आठ कर्मो के नाश करने का उपाय बताया है। अभेद ध्यान को भाव लिंग का साधक बताया है। शुद्ध आत्मा और पंच परमेष्ठी का ध्यान करने से कर्मनष्ट होते हैं। भाव लिंगी मुनि ध्यान को धारण करते हैं। देवों की रिद्धियाँ देखकर मोह को प्राप्त नहीं होते हैं अहिंसा धर्म को परम धर्म बताते हुए दया का उपदेश दिया है। छः अनायतन और मिथ्यात्व से जीव संसार में भ्रमण करता है। 363 प्रकार के मिथ्यामत संसार में भ्रमण कराते है। सम्यक् दर्शन विहीन जीव मुर्दे के समान है। ये बताते हुए सम्यक दर्शन की महिमा बताई है।

घातिया कर्म के नाश करने वाले अरिहंत परमेष्ठी के चरणों में भाव से नमस्कार करने वाला एवं परमानुराग से भक्ति करने वाला संसार रूपी वेली को नष्ठ करता है। सम्यक दृष्टि कषाय को जीतता है । तथा मूलगुण उत्तरगुण सहित मुनि ही शोभा को प्राप्त होता है । उपरांत मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं । अंत में भाव पाहुड का उपसंहार करते हुए है कि जो भाव पाहुड़ को पढ़ता, सुनता है। वह शाश्वत मोक्ष को प्राप्त करता है। भावों का क्रम वद्ध वैज्ञानिक स्वरूप और वर्णन करने वाला यह ग्रंथ आचार्य कुंद कुंद की अपूर्व देन है।

कविता

बहम

बहम की जिन्दगी जीने वालो
बहम से दूसरों को कोसने वालो
अरे तुम अपनी आँख को
खोलकर रक्खो
बहम के आगे सच का
रास्ता सोधकर रक्खो
छोड दो उतावले पन को
अपने मन के बावले पन को
न खाओ इतने जल्दी खोफ
दिल के गवारों को झट से
न जल्दी बाहर निकालो
इंसान हो इनसानियत को
थोड़ी तो सम्भालो
भावनाओं में वहकर
कैसे जी जाये जिन्दगी
भाषावेश से कैसे निकले जिन्दगी
नफरत से नहीं प्रेम से
किसी को बदला जा सकता है
प्रेम की साधना से
पत्थर भी पिघल जाता है
बहम से नही समर्पण से जीओं
सत्य को समझकर न्याय पथ पर चलों
खुशियाँ होंगी तुम्हारी छटेंगे गम के बादल
सूरज निकलेगा अमन का
मुस्कुरायेगा आँचल !

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
मई 2018
यही जन्म को सार्थक होता

प्रथम-

एक श्वांस में जन्म मरण
होता अठ दस बार
निकल निगोद से मानव तन पा
सब जन्मों का सार
पाकर जन्म पाप जो धोता
यही जन्म सार्थक होता

श्रीमति गुंजन जैन (बेगमगंज)

द्वितीय-

जगत छोड़ निज आतम ध्याते
कर्म कालिमा धोते निज की
आतम परमातम होता
तब स्वर्ग देव उत्सव रचते
यही जन्म सार्थक होता

श्रीमति रश्मि जैन (सागर)

तृतीय-

सभी गर्भ में आते हैं
जन्म जन्म तक पाप लिप्त हों
भव सागर भ्रमाते हैं
दुख उन्ही का मिट जाता हैं
जिनको बोध स्वयं का होता
तीर्थंकर पद पाया जिनने
यही जन्म सार्थक होता

श्रीमति रजनी जैन (राहतगढ़)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा
अप्रैल 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति शकुन्तला लालचन्द जैन (देवास)
द्वितीय : श्रीमति अंशु शाह (सागर)
तृतीय : सौ. सरला रमेशराव कस्तुरे (महाराष्ट्र)

वर्ग पहेली क्र. 225
अप्रैल 2018 के विजेता

प्रथम : श्रीमति कमला जैन (खरगोन)
द्वितीय : श्रीमति प्रीति जैन (राहतगढ़)
तृतीय : श्रीमति रजनी विमलचंद जटाले (महाराष्ट्र)

अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : मई 2018 का हल

01. 04 अप्रैल 2011
02. सात
03. दस
04. 15 जनवरी 1994
05. 1 से 6 मार्च
06. नेमावर
07. 22 अप्रैल 1999 नेमावर
08. 33
09. 43
10. 19 फरवरी 1977
11. 70
12. नैनागिर
13. तीन
14. तीन
15. 1987
16. 1993
17. 1993
18. पांच
19. श्री रामटेक जी
20. पांच
21. 84
22. दो
23. छह
24. 92
25. श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिर जी
26. 07 मार्च 2018
27. 21 से 25 फरवरी 1982
28. 16 मार्च 1981
29. कोनी जी 15 मार्च 1981
30. कोनी जी
31. कोनी जी
32. 9 मार्च 1982
33. कोनी जी
34. 04 अप्रैल 1981
35. 42
36. 416
36. पांच
37. पांच
38. 120
39. 57
40. 63
41. 172
42. तीन
43. 60
44. तीन
45. चार
46. एक
47. एक
48. 50
49. श्री मुक्तागिर जी
50. 76

पुराण प्रेरणा

गुरु उपदेश महिमा

रसोपविद्धः सन् धातुर्यथा याति सुवर्णताम्।
तथा गुरु गुणाश्लिष्टो भव्यात्मा शुद्धि मृच्छति॥

यह जिस प्रकार सिद्ध रस के संयोग से तांबा आदि धातुएँ स्वर्णपने को प्राप्त हो जाती हैं उसी प्रकार गुरुदेव के उपदेश से प्रकट हुए गुणों के संयोग से भव्य जीव भी शुद्धि को प्राप्त हो जाते हैं ।

न बिना यान पात्रेण तरितुं शक्यतेऽर्णवः।
नर्ते गुरुपदेशाच्च सतुरोऽयं भवार्णवः॥

जिस प्रकार जहाज के बिना समुद्र नहीं तिरा जा सकता है उसी प्रकार गुरु के उपदेश के बिना यह संसार रूपी समुद्र नही तिरा जा सकता है।

बन्धवो गुखश्चेति द्वये संप्रीयते नृणाम्।
बन्धवोकत्रैव संप्रीव्यै गुरवोऽमुव चात्र चं॥

इस संसार में भाई और गुरु ये दोनों ही पदार्थ मनुष्यों की प्रीति के लिए हैं। पर भाई तो इस लोक में ही प्रीति उत्पन्न करते हैं और गुरु इस लोक तथा पर लोक दोनों ही लोकों में विशेष रूप से प्रीति उत्पन्न करते हैं।

ऋते धर्मात्कुतः स्वर्गः कुतः स्वर्गाट्टते सुखम्।
तस्मात्सुखार्थिनां सेत्यो धर्म कल्पतरूश्चिरम्॥

इस संसार में धर्म के बिना स्वर्ग कहाँ ? और स्वर्ग के बिना सुख कहाँ ? इसलिए सुख चाहने वाले पुरुषों को चिरकाल तक धर्मरूपी कल्पवृक्ष की ही सेवा करनी चाहिए।

(आदि पुराण से)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ म् इ न् य् अ
2. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई भ अ व् र् ष् अ
3. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ न् इ अ म् न् अ न् द् अ
4. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई अ प् र् अ व् ओ द्य्
5. ई र् श् म् इ उ न् स् र आ अ ग् अ ज् ई उ स् आ प् श् व् र् अ

परिणाम :

मई 2018: (1) एलक श्री सिद्धांत सागर जी (2) एलक श्री विवेकानंद सागर जी (3) एलक श्री निश्चय सागर जी (4) एलक श्री दया सागर जी (5) एलक श्री सम्पूर्ण सागर जी

केरियर

विज्ञापन से जुडो रोजगार पाओं

विज्ञापन- विज्ञापन का क्षेत्र ग्लैमरपूर्ण है और अधिक से अधिक युवा इस उद्योग को अपना रहे हैं, विज्ञापन या एडवरजाइजिंग वस्तुतः प्रभावशाली संचार के माध्यम से एक ब्रांड निर्मित करता है जो नवीन कंपनी के उत्पाद को प्रभावशाली बनाकर लोगों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है

मान्यता प्राप्त विज्ञापन एजेंसियाँ संचार के विभिन्न साधनों द्वारा उत्पाद का प्रचार-प्रसार करती हैं, इस क्षेत्र में कैरियर बनावे हेतु प्रतिबद्धता एवं कठित परिश्रम की आवश्यता है । वर्तमान के इस प्रतिस्पर्द्धात्मक दौर में एजेंसी का कार्य कठिन व चुनौती पूर्ण होता जा रहा है।

यदि आप इस क्षेत्र में कैरियर बनाना चाहते हैं तो आपको अपनी दक्षता का मूल्यांकन कर सही दिशा एवं गंभीरता के साथ मेहनत करनी होगी जो आपको न केवल आर्कषक वेतन उपलब्ध कराएगी अपितु आकर्षक पद पर भी प्रतिष्ठित कराने में अपनी महती भूमिका निभाएगी।

इस उद्योग में पूर्व में केवल पुरुषों का वर्चस्व था, लेकिन वर्तमान में नारी भी पुरुषों के कदम से कदम मिलाकर प्रत्येक क्षेत्र में भागीदारी कर रही है

कार्यक्षेत्र - विज्ञापन के तीन आवश्यक अंगो की बिक्री में वृद्धि उपभोक्ता शिक्षा और जनसंपर्क के रूप में बांट सकते हैं।

उत्पाद हेतु लोगों को तैयार करना, दृश्य श्रव्य माध्यमों में रेडिया, फिल्म और टेलिविजन में विज्ञापन प्रदर्शन और सीधे विज्ञापन को अपना सकते हैं प्रदर्शन के लिए होडिंग, प्रदर्शनी, उत्पाद की बिक्री बढ़ाने निदर्शनात्मक प्रदर्शन केन्द्र, सूचनाकेन्द्र और बाजार में अपने छोटे केन्द्र लगा सकते हैं इस कार्य हेतु एम.बी.ए. अथवा अर्थशास्त्र, सांरिव्यकी में डिग्री धारकों को प्रशिक्षु के रूप में रखती है।

सृजनात्मक विभाग - कला विभाग प्रचार के दृश्य प्रभाव के लिए जिम्मेदार होता है, इस विभाग द्वारा विज्ञापन की साज-सज्जा तथा ग्राफिक्स तैयार किए जाते हैं प्रदर्शनी, लोगों और मुख पृष्ठ का भी चित्रण किया जाता है।

इस पद हेतु किसी प्रतिष्ठित डिजाइन विद्यालय अथवा महाविद्यालय व्यवसायिक में डिग्री डिप्लोमा होना चाहिए।

मीडिया विभाग- इस विभाग की जिम्मेदारी है प्रेस, टी.वी., रेडियो में विज्ञापन की स्थिति देखना, स्थान की पहचान और प्रस्ताव करना यह आंकलन करना प्रचार विज्ञापन लोगों में कितना प्रभावशाली रहा।

विज्ञापन एजेंसियों के लिए मीडिया व्यवसाय अधिक लाभदायक है साथ ही नवीन तेजस्विता के यह विविधात्मक रूप लिए हुए है।

इस हेतु न्यूनतम वांछनीय योग्यता एम.बी.ए. है

रोजगार संभावनाएँ - यह एक अत्याधुनिक चुनौती पूर्ण व्यवसाय है साथ ही चुनौतीपूर्ण कार्य वाले एवं वांछनीय योग्यता वाले युवाओं, कार्य के प्रति लगन एवं परिचय करने वाले प्रशिक्षु के लिए अपार संभावनायें

समेटे आर्कषण वेतनमान उपलब्ध कराता है , प्रारंभ में प्रशिक्षु को सभी विभागों के कार्य सौंपे जाते हैं पश्चात एक विशिष्ट क्षेत्र निश्चित कर दिया जाता हैं।

प्रशिक्षण- कई सरकारी संस्थानों द्वारा क्षेत्र में संचालित किए जा रहे है इनमें से कई महानगरों में स्थापित हैं , शैक्षिक पाठ्यक्रमों में सामान्यता संचार परिदृश्य की समझ, विज्ञापन की शक्ति एवं सृजनात्मक पक्ष, जनसंपर्क मीडिया नियोजन और ग्राफि क्स, उत्पादन का तकनीकि प्रशिक्षण दिया जाता है।

पारिश्रमिक- विज्ञापन के क्षेत्र में लगातार परिश्रम द्वारा आर्कषक पारिश्रमिक एवं भले प्राप्त होते हैं , लगातार अनुभव द्वारा पदोन्नति की संभावनाएं एवं विदेश सेवा के अवसर भी प्राप्त होते हैं ।

संस्थान- अनेक संस्थान विभिन्न पाठ्यक्रमो हेतु कार्यरत हैं ।

1. बाम्बे विश्वविद्यालय एम.जी.रोड़ मुंबई
2. मणिपुर विश्वविद्यालय कांजीपुर इम्फाल
3. भारतीय विद्याभवन, मेहता सदन
   कस्तूरबा गाँधी मार्ग नई दिल्ली
4. गर्वमेन्ट कॉलेज ऑफ आर्टस-सेक्टर 10-सी. चंडीगढ़

अधिक जानकारी हेतु इंटरनेट की विभिन्न बेबसाइटों पर सर्च किया जा सकता हैं।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकतेहैं ।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया,संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 8989121008

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

कविता

ज्ञानवर्धक ज्योति

ज्योति किरण लाचार-कॉपती दीप शिखा।
भयाक्रान्त है युग का चेहरा,
विध्वंसों का जाला गहरा,
ज्योति किरण लाचार-कॉपती दीप शिखा
जो पीले इतना अंधियारा-ऐसा सूरज नहीं दिखा।

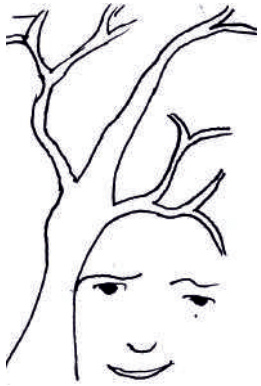

चिंतनीय हो गई अवस्था,
भिन्न भिन्न लग रही व्यवस्था,
नागफनी खो गया रास्ता,
घायल है विश्वास-आस्था,
डगर-डगर भय व्याप्त हुआ
नगर-नगर आक्रान्त हुआ
और धनञ्जय हुआ अपाहिज-आंतकित हर एक दिशा

सच कहना अभिशाप हुआ
दर्पण देना पाप हुआ
अरिवर्दन ही श्राप हुआ
उल्टा हर परिमाप हुआ
जान बूझ अनजान बने
लगता है निष्प्राण बने,
व्यर्थ उदय की सारी आशा-तम की है घन्घोर दिशा

जहरीली हो गई हवा
प्रेम नेह विश्वास गला
घृणा का वटवृक्ष पला
अपनों ने इतिहास छला
किससे किसकी बात कहें
किसने की है घात कहें
राष्ट्रधर्म हो गया तिरोहित स्वार्थ सिद्धी के हाथ विका

सीमाओं पर सुरंग विछी
गुरुद्वारे कृपाण खिची
मंदिर में बारूद बिछी
मस्जिद सोर कमान खिची
खंड खंड अनुराग हुआ,
पाखंडी सदभाव हुआ
हुए सभी कानून नपुंसक-न्याय कही भी नहीं दिखा
भृष्टाचारी नाग नाथने वाला कान्हा नहीं दिखा

संस्कार फीचर्स

■1 अप्रैल

- जम्मूकश्मीर में आतंक के गढ़ दक्षिण कश्मीर में सुरक्षा बलों को आतंक विरोधी अभियान में 11 आंतकियों का सफाया कर दिया।

- उत्तरकोरिया से वार्ता के सकरात्मक माहौल के बीच दक्षिण कोरिया और अमेरिका ने रविवार को अपना सालाना सैन्य अभ्यास शुरू कर दिया।

- इसराइल के रक्षा मंत्री एविगडर लाइबरमैन ने गाजा इसराइल सीमा पर सैनिको के साथ हुई हड़प में 15 फलस्तीनी नागरिकों की मौत की जांच कराने से इनकार कर दिया

■ 2 अप्रैल

-दलित संगठनों द्वारा आयोजित भारत बन्द आन्दोलन ग्वालियर-चंबल में जबरदस्त हिंसा का शिकार हो गया। इस दौरान भड़की हिंसा में ग्वालियर में दो डबरा और मुरैना में एक-एक और भिंड में दो लोगो की गोली लगने से मौत हो गयी।

- पाकिस्तान ने सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा ने 10 आंतकियो की मौत की सजा को मंजूरी दे दी।

- उत्तरकोरिया के नेता किमजोंग उन और उनकी पत्नी री सोल जु ने प्योंगयांग में दक्षिण कोरियाई के पॉप बैंड कलाकारो की प्रस्तुति देखी।

■ 3 अप्रैल

- एस.सी. एस.टी. एक्ट : केन्द्र की पुर्नविचार याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा हम कानून के खिलाफ नहीं लेकिन निर्दोष को बचाना जरूरी है।

- केदारनाथ में वायुसेना का एम आई-17 हेलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ।

- इस्लामाबाद : क्वेटा में ईसाई परिवार के चार सदस्यों की आई एस आई ए एस गोली मारकर हत्या कर दी।

■ 4 अप्रैल

- भोपालः राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल ने बरकत उल्ला विश्वविद्यालय (बीयू) के कुलपति प्रो. प्रमोद कुमार वर्मा का स्तीफा मंजूर कर लिया

- केलिफोर्निया में एक प्रशिक्षण के दौरान हेलिकाप्टर दुर्घटना में चार अमरीकी नो सैनिक मारे गए।

- दमोह : पथरिया में साहूकारों के कर्ज तले दबेकिसान ने साहूकार की पिटाई से तंग आकर आत्महत्या कर ली जगथर गांव का किसान किशन साहू उम्र 36 मंगलवार को जहर खा लिया।

■ 5 अप्रैल

- जोधपुर 20 साल पुराने काले हिरण के शिकार मामले में अदालत ने फिल्म अभिनेता सलमान खान को दोषी करार देते हुए 5 साल साधारण कारावास व दस हजार जुर्माने की

सजा सुनाई

- गोल्ड कोस्ट 23 वर्ष की स्टार भारोत्तोलक चानू साइखोम मीराबाई ने 21वें राष्ट्रमंडल खेलो के पहले दिन भारत ने पहला स्वर्ण पदक जीता।

- इस्लामाबाद रेड लाइट एरिया में जाने से रोकने पर एक चीनी इंजीनियर ने पुलिस कर्मियों पर हमला कर दिया।

■ 6 अप्रैल

- देश पर अब तक के सबसे बड़े साइबर हमले में रक्षा मंत्रालय की बेबसाइट हैक हो गई।

- विदिशाः अहमदपुर गांव के शुक्रवार को तेदुएं ने चार लोगों को घायल कर दिया।

- नेपाल के प्रधानमंत्री केपी ओली तीन दिवसीय दौरे पर भारत पहुँचे।

■ 7 अप्रैल

- राष्ट्रमंडल खेलों में सतीश कुमार शिवालिंगम ने 77 कि.ग्रा. श्रेणी में तो वेंकट राहुल रागला ने 85 कि. ग्रा. भारत को सोना दिलाया।

- कटनी : मझगवां गाँव में एन एच 43 पर एक ट्रक ने सामने से आ रहे दो ऑटो रिक्शा को कुचल दिया इस हादसे में 10 लोगों की मौत हो गई।

- नई दिल्ली/भोपालः मध्यप्रदेश में सोशल मीडिया पर लोगो को उकसाने और हिंसा फैलाने के मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया गया।

■ 8 अप्रैल

- भुवनेश्वर : अहमदाबादपुरी एक्सप्रेस (18406) ट्रेन बिना इंजन के ही पटरी पर करीब 20 कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से 15 कि.मी. तक चली गई।

- नई दिल्लीः किडनी की समस्या से जूझ रहे केन्द्रीय वित्तमंत्री अरूण जेटली की अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में डायलिसिस शुरू की दी गई।

- नई दिल्लीः सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक आदेश में कहा है कि पत्नी कोई जागीर या वस्तु नहीं है जिसे पति जबरन अपने साथ रख सकें।

■ 9 अप्रैल

- एन.आई.ए. ने पाकिस्तानी राजनायिक आमिर जुबैर सिछी की को अपनी वॉन्टेडलिस्ट में डाला।

- हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के नूरपुर में निजी स्कूल की बस करीब 200 फीट गहरी खाई मे गिर गई हादसे में 30 लोगों की मौत हो गई जिनमें 27 बच्चे दो शिक्षक और बस ड्रायवर शामिल हैं।

- दमिश्क : सीरिया में कथित रासायनिक हमले के बाद एक एयर बस पर मिसाइल हमला हुआ है इसमें ईरानी सैनिक समेत 14 लोग मारे गये हैं।

■ 10 अप्रैल

- आरक्षण के विरोध में सोशल मीडिया के जरिये आहूत भारत बंद का बिहार और पंजाब के अलावा देश के बाकी हिस्सो में ज्यादा असर नहीं दिखा।

- कॉमनवेल्थ गेम्स के छटे दिन भारत के खाते में एक शूटिंग में दिलाया।

- डेनमार्क में बोर्डिंग बोर्ड शहर में 173 फीट उँचा टावर ढहा।

■ 11 अप्रैल

- अल्जीरिया में सेना का ट्रांसपोर्ट विमान दुर्घटना ग्रस्त हो गया हादसे में 257 मारे गये।

- वाशिंगटन : फेसबुक यह सुनिश्चित करेगी की इस साल भारत पाकिस्तान हंगरी ब्राजील और अमेरिकी चुनावों में इसके प्लेटफार्म का दुरुपयोग न हो मंगलवार को अमेरिकी सेनिटर्स के सामने पेशी में कंपनी के संस्थापक सी ई ओ मार्क जकरबर्ग ने यह बात कही।

- दुबई कोर्ट ने 2 भारतीयों को 1305 करोड़ रूपये के घोटाले में 500 साल से ज्यादा की सजा सुनाई है।

■ 12 अप्रैल

- कॉमनवेल्थ गेम्स में पहलवानी में भारत ने दो स्वर्ण सहित चार पदक जीते सुशील कुमार ने 74 किलो फ्रीस्टाइल और राहुल अवारे ने 57 किलो फ्रीस्टाइल कैटेगरी में स्वर्ण पदक जीता।

- नई दिल्लीः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह पार्टी सांसदो के साथ संसद के बजट सत्र में लगातार व्यवधान के विरोध में गुरु के उपवास पर बैठे।

- ब्रिटिश महारानी एलिजा बेथ ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तुलना हेलिकॉप्टर के शोर से की है।

■ 13 अप्रैल

- स्वर्गीय अभिनेता विनोद खन्ना को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार दिया गया दिवंगत श्री देवी को बेस्ट एक्ट्रेस को अवॉर्ड दिया गया

- भोपाल : परवलिया सड़क के चंदूखेडा के एस एस बी जवान के घर में 4 डकैत घुसे बच्चे को जान से मारने की धमकी दी दीपक पीपले की पत्नी के जेवरात उतरा ले गये।

- पाकिस्तान के सुप्रीम कोई ने पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के जीवन भर चुनाव लड़ने पर रोक लगाई।

■ 14 अप्रैल

- पद्मभूषण चित्रकार रामकुमार का निधन हुआ वे 94 वर्ष के थे।

- यूको बैंक के सी एम डी और अन्य के खिलाफ केस दर्ज किया उन पर 621 करोड़ के घोटाले का आरोप हैं।

- भारत ने कॉमन वेल्थ के इतिहास 17 पदक जीते।

■ 15 अप्रैल

- पाकिस्तान ने भारतीय राजनायिकों से सिख तीर्थ यात्रियों से मिलने से रोका भारत ने आपत्ति जताई।

- छत्तीसगढ़ के नारायण पुर जिल में 5 नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया

-सीरिया पर हुए हवाई हमलों की निंदा का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र संघ में गिरा। 8 देशों ने प्रस्ताव के विरोध मत दिया।

■ 16 अप्रैल

- हैदराबाद : हाईकोर्ट ने मक्का मस्जिद धमाके के आरोपी असीमानंद सहित 5 को बरी किया गया जज रविन्दर रेड्डी ने इस्तीफा दिया

- वरिष्ठ पत्रकार एस निहाल सिंह का निधन हुआ वे 88 वर्ष के थे स्टेट समेन के सम्पादक रहे

- हैदराबाद : तंजानिया के माउंट किली मंजारो पर 7 वर्षीय समन्यु पोथु राजु ने फतह कर तिरंगा फहराया।

■ 17 अप्रैल

-लेफ्टिनेंट जनरल पी.पी. मल्होत्रा एन.सी.सी के महानिदेशक बने उन्होंने पद भार सम्हाला।

- मारपीट के मामले कॉंग्रेसी विधायक जीतू पटवारी को विशेष अदालत ने जेल भेजा।

■ 18 अप्रैल

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वीडन से ब्रिटेन पहुंचे कामन वेल्थ समिट में हिस्सा लिया।

- 33 साल बाद महाकौशल से राकेश सिंह म.प्र. भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बने।

- एनीमेशन फिल्म निर्माता भीमसेन खुराना का निधन हुआ वे 81 वर्ष के थे। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जार्न डब्ल्यू बुश की माँ बार बरा का निधन हुआ वे 92 वर्ष की थी।

■19 अप्रैल

- सुप्रीम कोर्ट ने सोहरा बुद्दीन शेख फर्जी मुठभेड की जाँच एस आई कर रहे बी एच लोया की मौत की जाँच एस ई टी कराने की माँग वाली याचिका को खारिज कर दिया

- क्यूबा में मिगेल डियाज कनेल राष्ट्रपति बने 6 दशक पुराने कास्त्रो परिवार सत्ता से बाहर हुआ।

- इशक की आदलतों ने आई एस से संबध रखने बाली 18 महिलाओं सहित 300 लोगों की मौत की सजा सुनाई।

■ 20 अप्रैल

- सुप्रीम कोर्ट ने प्रधान न्यायाधीश विरूद्ध महाभियोग का नोटिस कॉंग्रेस सहित 7 विपक्षी दलों ने दिया।

- गुजरात उच्च न्यायालय ने नरोड़ा पाटिया दंगा मामले मे माया कोड वानी सहित 12 लोगों को बरी किया

- दिल्ली हाईकोर्ट के सी.जे. राजिन्द्र सच्चरका निधन हुआ।

■ 21 अप्रैल

- केन्द्रीय केबिनेट ने 12 साल से कम की बच्चियों साथ रेप करने वाले को मौत की सजा के प्रावधान वाले अध्यादेश को मंजूरी दी।

- पूर्व केन्द्रीय मंत्री यशवंत सिन्हा ने भाजपा छोड़ी

- उत्तर कोरिया ने अब परमाणु परीक्षण न करने की घोषणा की।

■ 22 अप्रैल

- गढचिरौली (महाराष्ट्र) पुलिस मुठभेड में 16 नक्सली ढेर हुए।

- काबुल (अफगानिस्तान) में वोटर सेंटर पर आंतकी आत्मघाती हमला हुआ 48 लोग मरे 122 घायल हुए

- सीताराम ये चुरी माकपा के पुनः महासचिव चुने गये।

■ 23 अप्रैल

- प्रधान न्यायाधीश के विरूद्ध महाभियोग के नोटिस राज्य सभा के सभापति एन वेंकैया नायडू ने खारिज किया।

- अरूणाचल के आठ भाले एवं मेघालय से अफस्पा कानून पूरी तरह से हटाया।

■ 24 अप्रैल

- पूर्व केन्द्रीय कानून मंत्री सलमान खुर्शी द ने कहा मुस्लिमो के खून से कॉंग्रेस के हाथ रंगे है।

- गढ़चिरौली : महाराष्ट्र के गढ़चिरौली जिले में मुठभेड में 21 नक्सली ढेर हुए।

- अर्मेनिया के प्रधानमंत्री सेर्ज सरकिसयान ने इस्तीफा दिया।

■ 25 अप्रैल

- जोधपुर : 16 वर्षीय छात्रा के साथ दुष्कर्म के मामले में कथित संत आसाराम को मौत तक की जेल में रहने की सजा सुनाई गई।

-छतरपुर से 5 किमी. राजनगर में तोही दरवान 19 वर्ष को तीन वर्षीय बच्ची के साथ दुष्कर्म मामले गिरफ्तार किया गया।

- श्रीनगर : जम्मू कश्मीर के पुलवामा के कॉंग्रेस नेता गुलाम नवी पटेल की गोली मारकर हत्या कर दी।

■ 26 अप्रैल

- कमलनाथ म.प्र. कॉंग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त हुए।

- जस्टिश जोशिफ का नाम केन्द्र सरकार ने वापिस भेजा और इन्द्रा जयसिंह को सुप्रीम कोर्ट का जज नियुक्त किया।

- छत्तीसगढ़ में नारायण पुर जिले के अवूझमाण इलाके में 60 नक्सलियों ने आत्म समर्पण किया।

■ 27 अप्रैल

- उत्तर कोरिया के तानाशाह किमजोंग उन और दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति की मुलाकात 65 साल बाद हुई इसे महा मुलाकात कहा गया

- सिविल सर्विसेज परीक्षा 2017 में हैदराबाद अनुदीप दुरिशेट्टी टाप रहे।

- अमेरिकी सी आई ए प्रमुख माइक पोम्पियों 70 वें विदेश मंत्री बने अमेरिकी सीनेट ने मंजूरी दी।

■ 28 अप्रैल

- प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी एवं चीन के राष्ट्रपति शीजिंनपिंग ने नाव पर शाँती वार्ता की

- डॉ. हरी सिंह गौर केन्द्रीय वि.वि. केदीक्षांत समारोह में मुख्यातिथि राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद थे।

- यमन की राजधानी सना में सउदी अरब नीति सैन्य गठबंधन ने हमला किया 38 हौती विद्रौही मरे।

■ 29 अप्रैल

- जबलपुरः बेलखेड़ा थाना क्षेत्र के मनकेडी सीमेंट ट्रक पलटने से 9 राहगिरों की मौत हुई।

काठमांडूः पूर्व नेपाल मे भारत की और विकसित निर्माणा धीनपन बिजली घर में विस्फोट हुआ।

■ 30 अप्रैल

- काबुल : धमाके का कबरेल कर रहे मीडिया कर्मियों पर फिदायनी हमला हुआ 9 रफ्तार सहित 40 लोगों की मौत हुई।

- जम्मू कश्मीर के भाजपा-पीडीपी के मंत्री मंडल बदलाव हुआ कवीन्द्र गुप्ता उपमुख्यमंत्री बने।

- नई दिल्ली : लालू प्रसाद यादव से कॉंग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी मिले अतः 4 घंटे के अंदर लालू को एम्स से डिस्चार्ज करके राँची भेजा।

कविता

काया की माया

काया की माया
तरु की छाया
बदलती करवटें सी
कपडों की सलवटों-सी
काया बदलती है
जवानी बुढापे में ढलती है

मन की रेत पर
स्मृति की रेखायें
आकृतियाँ अनूठी-सी बनायें
सुखी चेहरे की लाली
स्याह जब पड़ती
काल की श्वासों से
रोगों से लड़ती
उमर की आँखे
काया से लड़ती
ये काया तो एक दिन
भरघट में जलती
सुंदरता सारी
राख में बदलती
इस काया में
किसने सुख पाया

ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर)

इसे भी जानिये

मौर्य सम्राट बिन्दुसार

चन्द्रगुप्त मौर्य का उत्तराधिकारी बिन्दुसार हुआ जो 298 ई. पू. में मगध की राजगद्दी पर बैठा।
अमित्रघात के नाम से बिन्दुसार जाना जाता है। अमित्रघात का अर्थ है- शत्रु विनाशक।
बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
वायुपुराण में बिन्दुसार को भद्रसार (या परिवार) कहा गया है।
जैन ग्रन्थो में बिन्दुसार को सिंहसेन कहा गया है।
बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला में हुए दो विद्रोह का वर्णन है। इस विद्रोह को दबाने के लिए बिन्दुसार ने पहले सुसीम को और बाद में अशोक को भेजा।
स्थीनियस के अनुसार बिन्दुसार ने सीरिया के शासक एण्टियोकस-1 से मदिरा सूखे और अंजीर एवं एक दार्शनिक भेजने की प्रार्थना की थी।
बौद्ध विद्वान तारानाथ ने बिन्दुसार को 16 राज्यों का विजेता बताया है।
स्ट्रोषो के अनुसार सीरियन नरेश एण्टियोकस ने बिन्दुसर के दरबार में डारमेकस नामक राजदूत भेजा इसे ही मेगास्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।

दिशा बोध

राजा (शासक)

1. जिस राजा के सेना, लोक संख्या, धन, मंत्रिमंडल, सहायक मित्र और दुर्ग- ये छह यथेष्ट रूप में है, वह नृपमण्डल में सिंह है।
2. राजा में साहस, उदारता, बुद्धिमानी और कार्यशक्ति-इन बातों का कभी अभाव नहीं होना चाहिए।
3. जो पुरुष इस पृथ्वी पर शासन करने के लिए उत्पन्न हुए हैं, उन्हें सतर्कता , जानकारी, और निश्चयबुद्धि-ये तीनों खूबियों कभी नहीं छोड़ती।
4. राजा को धर्म करने में कभी नहीं चूकना चाहिए और अधर्म को सदा दूर करना चाहिए। उसे स्पर्धा पूर्वक अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए, परन्तु वीरता के नियमों के विरुद्ध दुराचार कभी नहीं करना चाहिए।
5. राजा को इन बातों का ज्ञान होना चाहिए कि अपने राज्य के साधनों की रक्षा और वृद्धि किस प्रकार की जाये, कोष की पूर्ति किस प्रकार हो, धन की रक्षा किस रीति से की जावे, किस प्रकार समुचित रुप से उसका व्यय किया जावे?
6. यदि समस्त प्रजा की पहुँच राजा तक हो और राजा कभी कठोर वचन बोले, तो उसका राज्य सबसे ऊपर रहेगा।
7. जो राजा प्रीति के साथ दान देता है और प्रेम के साथ शासन करता है उसका यश सारे जगत् में फैल जाता है।
8. धन्य है वह राजा, जो निष्पक्ष होकर न्याय करता है और अपनी प्रजा की रक्षा करता है, वह मनुष्यों में देवता समझा जायेगा।
9. देख, जिस राजा में कानों को अप्रिय लगने वाले वचनों को सहन करने का गुण हैं, पृथ्वी निरन्तर उसकी छत्र छाया में रहेगी।
10. जो राजा उदार, दयालु तथा न्यायनिष्ठ है और जोअपनी प्रजा की प्रेम पूर्वक सेवा करता है, वह राजाओं के मध्य में ज्योति स्वरुप है।

क्रिया, परिणाम और अभिप्राय

❊ पं. अभय कुमार जैन (देवलाली नासिक) ❊

मोक्ष-महल की प्रथम सीढ़ी अर्थात् सम्यग्दर्शन प्रकट करने के लिए क्रिया और परिणाम से भिन्न अभिप्राय को समझना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि अभिप्राय पलटे बिना शास्त्र- ज्ञान और बाह्य आचरण होने पर भी जीव मिथ्यादृष्टि रहता है और उसे मोक्षमार्ग प्रकट नहीं होता।

जिस प्रकार नाटक के स्टेज पर अनेक परदे होते हैं, जिनके पीछे अलग-अलग दृश्यों की तैयारी होती रहती है। इसी प्रकार हमारे जीवन की स्टेज पर भी मुख्य रूप से तीन परदे होते हैं, जिन्हें क्रिया , परिणाम और अभिप्राय के नाम से संबोधित किया जा सकता है।

आचार्य कल्प पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्ग प्रकाशक अध्याय 7, पृष्ठ 238 पर सम्यक् चारित्र सम्बन्धी भूल के प्रकरण में इन तीन शब्दों का प्रयोग किया है। यहाँ उसी आधार पर इन तीनों बिन्दुओं का विवेचन किया जा रहा है।

क्रिया - उपर्युक्त स्थल पर पण्डित टोडरमल जी ने बाह्य क्रिया का शब्द का प्रयोग किया है। अतः शरीर और वाणी के माध्यम से जो खाना-पीना उठना-बैठना-चलना बोलना लौकिक कार्य तथा भक्ति दया-दान-शील-संयम-तप-त्याग आदि धार्मिक कार्यों को क्रिया शब्द से समझना चाहिए। ये सभी कार्य व्यक्त अर्थात् प्रगट रूप से होते हैं, अतः सबको पता चल जाता हैं, इसलिए इन्हें बाह्य क्रिया शब्द से कहा जाता है।

परिणाम- इस प्रसंग में परिणाम शब्द का प्रयोग क्रिया के साथ होने वाले जीव के भावों के अर्थ में किया जाता है। राग-द्वेष, क्रोध-मान-माया-लोभ, शुभ-अशुभ आदि भावों को ही परिणाम कहा जाता है। प्रायः इन परिणामों के निमित्त से बाह्य क्रियायें होती हैं। कभी-कभी क्रिया ओं के निमित्त से भी हमारे क्रोधादि भाव होते दिखाई देते हैं । आत्मा के अवलंबन से वीतरागी परिणाम होते हैं । परिणामों को शुभ-अशुभ और शुद्ध -इन तीन प्रकार का समझना चाहिए।

अभिप्राय- क्रिया और परिणाम से तो प्रायः यह जगत परिचित है परन्तु अभिप्राय का चिन्तन मात्र जैनदर्शन की खोज है । अभिप्राय भी श्रद्धा गुण का परिणाम है, परन्तु उसे चारित्र और ज्ञानादि गुणों के परिणामों से भिन्न बताने के लिए अर्थात् विशेष ध्यानाकर्षित करने के लिए अभिप्राय नाम से कहा जाता है। जैनदर्शन में अभिप्राय के लिए मान्यता, प्रतीति, श्रद्धान , दृष्टि, अध्यवसान आदि अनेक शब्दों का प्रयोग किया गया है।

एक डाक्टर अपने दैनिक जीवन में खाना-पीना विषय-भोग तथा पूजा-स्वाध्याय आदि अनेक क्रियायें तथा वैसे ही भाव करता है, परन्तु हर परिस्थिति में वह अपने को डॉक्टर ही मानता है। मैं डॉक्टर हूँ- ऐसी अनुभूति की धारा उसकी अखण्ड रूप से चलती है। रिटायर होने के बाद भी वह अपने को डॉक्टर मानना नहीं छोड़ता। उसकी यह अनुभूति ही अभिप्राय है।

इसी प्रकार एक अभिनेता, मजदूर, नौकर, सेठ, अपराधी, वकील, माता-पिता, पुत्र, पति आदि हजारों प्रकार के अभिप्राय

करता है उस समय वह वैसे भाव भी करता है, परन्तु वह अपने को अन्य प्रकार मजदूर पा सेठ नहीं मानता, अभिनय करते समय भी वह स्वयं को अभिनेता मानता है । यह मान्यता ही अभिप्रायहै।

जैन दर्शन में अनादि कालीन प्रयोजन भूत तत्त्व सम्बन्धी भूल को मिथ्यात्व अर्थात् मिथ्या अभिप्राय और तत्त्वों के यथार्थ श्रद्धान को सम्यग्दर्शन अर्थात् अभिप्राय के रूप में कहा गया है।

क्रिया और परिणाम की तुलना- देहाश्रित और वचनाश्रित होने से क्रिया स्थूल होती है, परन्तु आत्मा में उत्पन्न होने से परिणाम अमूर्तिक हैं, इसलिए वे सूक्ष्म हैं। हमें दूसरों की क्रिया तो दिखती है, परन्तु परिणाम सीधे दिखाई नहीं देते। अनेक निमित्त से होने वाली क्रिया के माध्यम से परिणामों का अनुमान किया जाता है। चेहने पर प्रसन्नता, उदासी, क्रोध, शान्ति आदि भावों को देखकर उस व्यक्ति से उस प्रकार के परिणामों का अनुमान करके वैसा व्यवहार किया जाता है।

परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि जैसी क्रिया दिख रहीं है, वैसे ही भाव हों । मायाचारी जीवों के भावों में कुटिलता ईर्ष्या आदि रहती है और वे वाणी से मधुर और मैत्री पूर्ण व्यवहार करते हैं ।

हमारे जीवन में भी व्यापार, भक्ति आदि क्रियायें चलती रहती हैं, प्रारम्भ में तो परिणाम कुछ और हो जाते हैं। भोजन के समय व्यापार आदि अन्य कार्यों के विकल्प होना आम बात है । **धार्मिक कार्यो के समय तो यह विसंगति बहुत दुःखद हो जाती है। पूजन के समय व्यापारिक लौकिक कार्यों का विकल्प, संगीत का रस, दूसरों पर पड़ने वाला प्रभाव आदि असंख्य प्रकार के विकल्प होते रहते हैं** और पूजा चलती रहती है। इसी प्रकार दान, उपवास, तीर्थयात्रा, व्रत, तप आदि क्रिया ओं के समय भी सैकड़ों-हजारों विकल्प होते रहते हैं। स्थूल विकल्पों का तो हमें ज्ञान हो जाता है और हम उनके अनुसार सुख-दुःख भी भोगते हैं, परन्तु बहुत से परिणाम अति सूक्ष्म होते हैं, जिनका हमें पता भी नहीं चल पाता।

क्रिया स्थूल होने के कारण हमारी अच्छी-बुरी क्रियाओं का प्रभाव समाज में तेजी से फैलता है। अच्छे कार्यो की प्रशंसा भले कम हो या देर से हो, परन्तु बुरे कार्यो की निन्दा बहुत तेजी से होती है। यही कारण है कि लोग परिणामों की परवाह किये बिना मात्र क्रिया का पालन करके स्वयं को धर्मात्मा मान लेते हैं और उनका प्रचार करके प्रशंसा प्राप्त करना चाहता हैं ।

क्रिया दिखती है और परिणाम सूक्ष्म हैं, अतः समाज व्यवस्था में दूसरों का मूल्यांकन अर्थात् सम्मान उनकी अच्छी क्रियाओं के आधार से करना चाहिए, **परन्तु स्वयं को क्रिया मात्र से धर्मात्मा नहीं मानना चाहिए। मोक्षमार्ग तो अभिप्राय और परिणामों पर आधारित है, अतः इसी आधार पर स्वयं का मूल्यांकन करना चाहिए।**

परिणामों और अभिप्राय की तुलना- रागादि विकारी परिणाम तो क्षण-क्षण में बदलते रहते हैं, परन्तु अभिप्राय अर्थात्

मान्यता वहीं की वहीं रहती है। यह जीव सातवें नरक जाने लायक तीव्र पाप परिणम करे या नवमें गैव्रयेक जाने लायक तीव्र पुण्य परिणाम करे, परन्तु स्वरूप को भूलकर देहादि और रागादि में अपनापन, उनका कर्त्तापन, भोक्तापन आदि विपरीत मान्यतायें तो वैसी की वैसी चलती रहती हैं। पाप-पुण्य की दुकान बदल जाती हैं, परन्तु मिथ्यात्व का धन्धा वैसा का वैसा चलता रहता है।

यदि कोई जीव सम्यग्दर्शन प्राप्त कर पुनः मिथ्यात्व में न आए और कुछ ही भव में मोक्ष चला जाए तो उसका अभिप्राय तो अनन्तकाल में एक ही बार बदला।

अभिप्राय बदलने पर अर्थात् सम्यक् होने पर ही परिणामों में वीतरागता की धारा प्रारम्भ होती है। मिथ्या अभिप्राय के साथ परिणाम पर सन्मुख ही रहते हैं, सब सन्मुख नहीं होते। अभिप्राय का यही प्रभाव परिणामों पर पड़ता है।

अभिप्राय की सूक्ष्मता- अभिप्राय परिणामों के गर्भ में छुपा रहता है, इसलिए वह परिणामों से भी सूक्ष्म होता है। प्रायः परिणाम और अभिप्राय में अन्तर समझना भी कठिन हो जाता है। अधिकांश लोग तो अभिप्राय के बार में सोचते भी नहीं है कि अभिप्राय भी कोई चीज होती है, इस बारें में जानते भी नहीं तो उसकी सही पहचान कैसे होगी?

अभिप्राय को पहचानने का उपाय- परिणामों की परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय का स्वरूप समझा जा सकता है। परम्परा का विचार करने पर अभिप्राय का स्वरूप समझा जा सकता है। परम्परा से आशय उन कारणों को पहचानना जिनसे परिणाम उत्पन्न होते हैं। जो भी शुभाशुभ भाव होते हैं, उस पर प्रश्न उठाइये कि ये परिणाम क्यों उत्पन्न होते हैं। उसका जो उत्तर आए इस पर पुनः क्यों का प्रश्न चिन्ह लगाइये। इस प्रकार दो -चार बार प्रश्न करने पर अन्तिम उत्तर में अभिप्राय सामने आ जाएगा। लौकिक शिक्षा, व्यापार, विवाह आदि अनेक प्रकार के कार्यों के बारे में सोचें कि हम ये क्यों कर रहे हैं तो अन्त में यही निष्कर्ष निकलेगा कि पर में सुखबुद्धि हमारे अभिप्राय में पड़ी है। इनमें एकत्व बुद्धि और कर्त्तत्व बुद्धि तो रहती ही है।

इसी प्रकार भक्ति दया, दान, व्रत, उपवास आदि के बारे में विचार किया जाए कि ये भाव क्यों होते हैं। इनमें कुछ उत्तर परम्परा, संस्कार, नियम,सामाजिक रीति-रिवाज, धर्मबुद्धि आदि पर आधारित होंगे। ये सब उत्तर अभिप्राय की विपरीतता को बताते हैं। **ज्ञानी को भी शुभभाव होते हैं। परन्तु वे इन्हें अपने स्वरूप से भिन्न जानते हैं तथा धर्म नहीं मानते- यही उनका सच्चा अभिप्राय है।**

जिस प्रकार कोई डायबिटिज का मरीज मिठाई खाता, उसे खाने की इच्छा भी नहीं होती, परन्तु उसे मिठाई खाना, पसन्द है - यह रूचि उसके अभिप्राय में पड़ी है। **इसी प्रकार समाज में बदनामी या नरकादि के भय से यदि कोई व्यसन सेवन (जुआ, शराब-परस्त्री, चोरी आदि) का त्याग करे तो भी वह सच्चा त्यागी नहीं है। उसके त्याग के परिणामों के गर्भ में नरकादिक का भय और विषयों की रूचि सुरक्षित रहती है।**

भारत के बाहर विदेशों मे बस चुके अप्रवासी भारतीय उस देश में रहकर वहाँ के

वातावरण में रच-पच कर भी अपने को भारतीय मानते हैं, यह उनके अभिप्राय का ही कमाल है।

क्रिया, परिणाम और अभिप्राय का चित्रण

1.क्रिया-	2.परिणाम	3.अभिप्राय
व्यापार करना	धन का लोभ	धन में सुख मानना
दान देना	मान अथवा अनुमोदना	दान देने में धर्म है, पैसा मेरा है, मैं दे सकता हूँ।
जीव दया की क्रिया	जीवों के प्रति करूणा	मैं जीवों को बचा सकता हूँ और रक्षा करने में समर्थ हूँ।

इसी प्रकार जीवन के प्रत्येक प्रसंग मे क्रिया परिणाम और अभिप्राय की पहचान कर लेना चाहिए।

क्रिया, परिणाम और अभिप्राय का प्रभावः-

क्रिया का प्रभाव- अच्छी क्रियाओं से जगत में प्रशंसा भले मिले, परन्तु उससे कर्म बन्ध की प्रक्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। **मुनिराज की रक्षा करने के भावों से शेर से लड़ने वाला शूकर पुण्य बाँधता है और उनका भक्षण करने भाव से लड़ने वाला शेर पाप बाँधता है।** यदि जानवर न मरे तो भी मारने के भाव से शिकारी पाप बाँधता है और यत्नाचार प्रवृत्ति से चलने वाले मुनिराज से कदाचित् जीव मर भी जाए तो भी उन्हें हिंसा का दोष नहीं लगता।

परिणामों का प्रभाव- परिणामों का प्रभाव कर्मोदय के अनुसार क्रिया के माध्यम से बाह्य जगत पर पड़ता है, परन्तु हमारे सुख-दुःख व कर्मबन्ध या संवर-निर्जरा परिणामों के अनुसार होता है, क्रिया से नहीं। जैसे परिणाम होंगे उसी प्रकार की स्थिति अनुभाग वाले कर्म बँधेगे या अपकर्षण, उत्कर्षण, संक्रमण, संवर, निर्जरा, मोक्ष आदि होंगे।

अभिप्राय का प्रभाव- अभिप्राय का सीधा प्रभाव मोक्षमार्ग पर पड़ता है। मिथ्या अभिप्राय सहित चाहे, मुनि जैसी क्रिया व शुभ भाव क्यों न हो, परन्तु मोक्षमार्ग प्रारम्भ नहीं होता। विपरीत अभिप्राय से अनन्तानुबंधी बन्ध होता ही रहता है। यदि अभिप्राय सच्च हो तो छह खण्ड की विभूति वाला चक्रवर्ती या सातवें नरक का नारकी भी मोक्षमार्गी होता है।

जिसप्रकार खूँटे से रस्सी द्वारा बँधी हुई गाय, जितनी लम्बी रस्सी बँधी हो उतनी दूर तक चलने-बैठने में स्वतंत्र है, उसमें खूँटा कुछ भी हस्तक्षेप नहीं करता, परन्तु वह उस सीमा से बाहर एक कदम भी नहीं जा सकती। यदि जोर लगाए तो खूँटा उखाड़ कर भाग जाए और कुछ देर में रस्सी भी खुल जाएगी। इसी प्रकार आत्मा पुण्य-पाप की रस्सी की सीमा में चारों गति में घूमने के लिए स्वतंत्र है, परन्तु मिथ्यात्व का खूँटा उसे मोक्षमार्ग में प्रवेश नहीं करने देता, यदि वह स्वानुभूति का पुरुषार्थ करे तो खूँटा उखड़ जाएगा और दो -चार भव बाद पुण्य-पाप की रस्सी खुल जाएगी और आत्मा स्वतंत्र हो जाएगा।

अन्तिम निष्कर्ष- हमें संसार से मुक्त होने के लिए समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक आदि ग्रन्थों के माध्यम से वस्तु स्वरूप का यथार्थ निर्णय करके आत्मानुभूति के द्वारा यथार्थ अभिप्राय अर्थात सम्यग्दर्शन प्रगट करना चाहिए। परिणाम और क्रिया अपनी-अपनी योग्यतानुसार सहज होंगे और कुछ ही भव मैं हम मुक्त होकर अनन्त काल के लिए अनन्त सुखी हो जायेंगे।

आओ सीखे : जैन न्याय

जैन न्याय की संक्षिप्त रूपरेखा

पदार्थों का सम्यग्ज्ञान चार प्रकार सेहोता है -

1. लक्षण
2. प्रमाण
3. नय
4. निक्षेप

न्याय तर्कशास्त्र, प्रमाणशास्त्र अथवा किसी भी विचारधारा की वह कसौटी है जिससे खरे और खोटेपन (सम्यक् और मिथ्या) का ज्ञान होता है। न्याय, दर्शन का प्रवेशद्वार है, अध्यात्म विचारधारा कोपुष्ट करनेवाला है, न्याय के आधार पर तत्त्व निर्णय होता है, एवं न्याय बिना तत्त्व निर्णय की कल्पना व्यर्थ है तथा जीवन व्यवहार में अनुकूलता होने पर निमग्न होकर अपनी यथार्थता को नहीं भूलना तथा संकट के समय में वस्तु स्वरूप विचार का सहनशील बनना न्याय के द्वारा ही संभव होता है।

न्याय शब्द की व्युत्पत्ति अर्थ और परिभाषा - नि अयति इति न्यायः (नियन्ति अनेन - नि + इ +घञ) - वामन आप्टे

भारतीय दर्शनों में जैन न्याय की विशेषतायें -

सभी दर्शनों मेजैन न्याय की विशेषतायें -

सभी दर्शन तर्क, विद्या और न्याय का अनुसरण करतेहैं किन्तु जैन न्याय स्यात् शब्द का प्रयोग करनेके कारण अनेकान्त और स्याद्वाद की विशिष्ट शैली के कारण अपनी पहचान अलग से बना लेता है।

जैन न्यायके 4 स्तम्भ -

1. लक्षण - लक्षण की परिभाषा, भेद, दोष।

2. प्रमाण - स्वरूप शब्दार्थ लक्षण जैनाचार्यों के अनुसार। अन्य भारतीय दर्शनों के विद्वानों के अनुसार प्रमाण स्वरूप के चार बिन्दु।

1. अविसंवादकत्व की प्रायक स्थिति।
2. तदाकारता प्रमाण नहीं ।
3. सामग्री प्रमाण नहीं।
4. इन्द्रिय व्यापार प्रमाण नहीं।

प्रमाण में सम्यग्ज्ञान प्रमाण की सिद्धि, सम्यग्ज्ञान प्रमाण क्यों ? इस लक्षण में अव्याप्ति, अतिव्याप्ति दोष नहीं आतेहैं। (न्यायदीपिका के अनुसार सिद्ध करना चाहिये)।

कहानी

जिसे दिखाना था दिखा दिया

सूरज आसमान में तमतमा रहा था तापमान 44 डिग्री से आगे बढ रहा था खुरई के मुख्य मार्गो पर थोड़ी बहुत चहल पहल थी किसानो की आवक जावक भी प्रायः बन्द हो चुकी थी हवा भी न जाने किस वृक्ष की छावं के नीचे बैठ चुकी थी पीपल वृक्ष का पत्ता भी स्थिर हो चुका था और गोस्वामी तुलसीदास जी की इस चौपाई के अंश को झुठला रहा था।

''पीपर पात सरिस मन डोला'' इस कथन को पीपल का वृक्ष धत्ता दिखा रहा था शायद वह इठलाकर के कह रहा था कि कौन कहता है कि पीपल का पत्ता डोलता रहता है।

मौसम की करवट गर्मी की चरम सीमा पर अपनी दस्तक दे रहा था मंडी रोड़ पर बने हीरालाल जैन के भवन में उनकी दो पुत्रियां हेमलता और राजुल बिना पंखा चलाये कमरे में बन्द होकर आपस में चर्चा कर रही थी कि तभी फूला बाई ने आकर बाहर से दरवाजा बजाया और कहा हेमा खोलना तब राजुल और हेमलता आपस में फुसफुसाहट करने लगी कि मम्मी आवाज लगा रही हैं दरवाजा तो राजुल खोलना ही पड़ेगा यदि नहीं खोला तो मम्मी न जाने क्या अर्थ ले लेगी और हम लोग की अभी मुश्किल पड़ जायेगी। राजुल ने उठकर हेमलता की सहमति के बाद दरवाजा खोल दिया। फूलाबाई ने कमरे में प्रवेश करने के बाद कहा क्यों भाई तुम दोनों बहने यहां बैठी-बैठी क्या गुप्त सलाह कर रही हो ? इतनी गर्मी पंखा बन्द, खिड़की बन्द क्या तुम लोगों को बीमार पड़ना है ? राजुल ने अपनी बात बनाते हुए कहा कुछ नहीं मम्मी हम लोग बैठे-बैठे थोड़ी- सी जाप देरहेथे।

फूलाबाई ने कहा तुम लोग ये जापें कबसे देने लगी ? मेरे कहने के बाद मुश्किल से तो मंदिर जाती हो और अब तुम लोग अचानक इतनी धर्मात्मा कबसे बन गई हो ? हेमलता ने मुस्कुरा कर कहा कि मम्मी ये तो जीवन का परिवर्तन है जिन्दगी के किसी भी पल में कोई भी मोड़ ले सकता है और आज हमारी नगरी में आचार्य श्री विद्यासागर जैसे संत विराजमान हों और उनके प्रवचन सुनकर मातुश्री क्या किसी का मन बदल नहीं सकता है ?

बगल में रखी हुई कुर्सी पर बैठते हुए फूलाबाई ने कहा एक बात कान खोलकर सुनलो भावुकता में आकर मोक्ष मार्ग की बात करना बहुत सरल है किन्तु भावों से वैराग्य धारण करना बहुत कठिन काम हैं क्योंकि आज कल देखने में यह आ रहा है। कि कई जवान लड़के लड़किया आचार्य श्री विद्यासागर जी के पीछे लग जाते हैं कई तो सच्चे साधु बन जाते हैं और कई लौटकर बुद्धु घर को आ जाते हैं। इसीलिये राजुल और हेमा तुम दोनों भावुक मत बनो किन्तु भावों की निर्मल सरिता में अवगाहन करके गृहस्थ जीवन अपनाकर सत्य अहिंसा न्याय केपथ पर बढ़कर धीरे-धीरे धर्मपथ की ओर बढ़जाओ।

हेमलता ने कहा मम्मी आप एक बात बता सकती है क्या राजकुमारी दुगाय मेरी इतनी अच्छी सहेली न जाने अचानक किस दुनियां में चली गई मुझे जब भी उसकी याद आती है। मेरा मन भर जाता है और आचार्य श्री विद्यासागर अपने प्रवचन में कहते हैं। मनुष्य जन्म चौराहे पर पड़े हुए रत्न के समान है। यह मनुष्य जीवन मोक्ष प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन है। इस मनुष्य जीवन को पाकर के बहुत सारे लोग विषय वासना में और क्षणभंगुर विषय भोगों मे लिप्त होकर गुरुओं की संगति से वंचित रह जाते हैं। सखी सहेलियों दोस्त यारों में अपने जीवन के अमूल्य क्षण गंवा देते हैं। और कुछ नहीं कर पाते हैं बस आखरी में पछताते हैं।

फूलाबाई ने कहा क्या तुम लोगों ने फिल्म देखना छोड़ दिया है क्या तुमने साइकिल की घुमक्कड़ बाजी को त्याग दिया हैं क्या तुमने साध्वी बनने की बात सोच ली है या तुम लोगों ने आचार्य श्री विद्यासागर जी प्रवचनों को सुनकर अपना मन भावुक कर लिया है। पर याद रखना हम तुम लोगों के बदलाव को समझ रहे हैं। यह भी हम तुम्हें समझा देना चाहते हैं कि वैराग्य का पथ इतना सरल नहीं है जितना तुम लोगों ने समझ रखा हैं मेरे बिना पूँछे तुम्हारा घर से बाहर कदम रखना संभव नहीं है मैं अकेले दरवाजे की पहरेदार नही हूँ अपितु पानी में डूबे हुए इंसान को भी जिन्दा बाहर निकालने की हिम्मत रखती हूँ। तुम लोग खूब धर्म में लगो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। किन्तु देखा सीखी धीरे जो, छीजे काया बाड़े रोग,ऐसा कुछ मत करना जिससे तुम न घर की रहो न घाट की इस पर तुम लोग अपना मन अच्छा कर लेना अपना भविष्य खूब अच्छा सोच लेना आप लोगों को आचार्य श्री विद्यासागर जी अचानक अपने पास नहीं रख सकते हैं तुम यह भी नहीं भूल जाना कि वे इतने महान संत है। माता पिता की स्वीकृति के बिना वे किसी को भी नियम वृत नहीं देते हैं। राजुल वे खूब बड़े जोहरी है तुम तो घर में रहकर साधना करना और जीवन का बेहतर बनाना।

अरे मैं जिस काम को आई थी वह बात बताना तुम लोगों को भूल ही गई आज शाम को नागपुर से हेमलता को देखने मेहमान आ रहे हैं थोड़ा सा तैयार हो लेना उनके आने के पहले ही तैयार हो लेना वो लोग शाम की अन्यऊ भी अपने घर पर ही करेगें ।

राजुल ने हेमलता की तरफ देखा और हेमलता ने राजुल की तरफ देखा आंखो के इशारे-इशारे में ही बात हो गई राजुल ने कहा मम्मी आप दूसरी तैयारी करलो और कोई काम हो तो हमें भी बता देना।

फूलाबाई ने कहा मुझे मालूम है कि तुम काम करने में कही से कही तक पीछे नहीं हट सकती हो आखिर हो तो मेरी बेटी कोई तुम लोगो की जरूरत नहीं पड़ेगी मैं सब काम निपटा लूंगी तुम तो बस तैयार रहना जब मैं बुलाऊँ तो आ जाना फूलाबाई इतना निर्देश देकर कमरे से बाहर निकल गई।

राजुल की आंखे थोड़ी देर के लिए बन्द हुई और उनकी आंखो के सामने अर्चना कौशल आकर बैठ गई अर्चना कौशल भी इस दुनिया से आखरी सफर कर चुकी थी राजुल एक दम घबरा गई और हेमलता के कंधे को पकड़कर जोर से चिल्ला पड़ी दीदी अर्चना कह रही है कि हेमलता और राजुल संभलकर रहना किसी की बातों में नही आना दुनियां दुरंगी मकाए सराय कहीं खैर खूबी कही हाय हाय थे जो प्रवचन में आचार्य श्री विद्यासागर जी ने जो मंगलधाम में परसो बोला था वह अक्षर सासत्य है अवसर मिला हैं इसे हाथ से मत छोड़ देना वैराग्य पथ श्रेष्ठ पथ है मैं चूक गई तुम मत चूंकना।

राजुल हेमलता ने पुनः कमरा बन्द किया और अपनी चर्चा में व्यस्त हो गयी। राजुल ने कहा दीदी अब लगता है हम लोगों को फसाया जा रहा है तब हेमलता ने कहा हमें अपनी स्थिरता रखना होगी एक बार हम स्पष्ट मम्मी के सामने कर देगे की आप कोई विकल्प न करें हम लोगों का किया हुआ निश्चय अब किसी भी तरीके से बदलने वाला नहीं है। हम तो अब मोक्ष रूपी वर को ही चुनेगें और आत्म कल्याण के पथ पर आगे बढेंगे।

जब यह चर्चा राजुल ओर हेमलता के बीच चल रही थी पर उन्हें यह मालूम नहीं चला कि कब घड़ी में छह बज गये तब मम्मी की आवाज आई हेमलता तैयार हो जाओं वे लोग एक घंटा बाद घर पर आ जायेंगे। तब हेमलता और राजुल ने अपना एक्सन बदला और धीरे से घर से बाहर मंगलधाम की और प्रस्थान करने का मन बना लिया और दरवाजा खोलकर जाने लगी तभी फूलाबाई ने आवाज दी क्यों हेमलता और राजुल तुम लोग कहां जा रही हो यहां देखने वाले आ रहें हैं और तुम मंगलधाम जा रही हो कब तक लौटोगी तब हेमलता ने अपने साहस का परिचय देते हुए कहा मम्मी ऐसा है हमें जिसको दिखाना और देखना था उसे देख लिया और दिखा दिया अब हमें न तो किसी को देखना हैं न किसी को दिखाना है।

बृहद्द्रव्यसंग्रह की कतिपय गाथाओं का पुनरीक्षण

❊ ब्र. राकेश जैन (सागर) ❊

जैन सिद्धांत की एक अनुपम कृति हैं द्रव्यसंग्रह जो जैनतत्त्वज्ञान का सरलतम बोध प्रस्तुत करती है। इस ग्रन्थ की विवेचन शैली इतनी स्पष्ट और सुग्राह्य है कि इसे आ-बाल गोपाल सभी पढ़ते हैं। जहां इसका अध्ययन जैन समाज की रात्रिकालीन पाठशलाओं में होता हैं , वहीं यह विद्यालयीन एवं विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम में भी स्थान बनाये हुये हैं। यह सिद्धान्त देव आचार्य नेमिचन्द्र की कृति मानी जाती है। इस ग्रन्थ में कुल58 गाथाओं को सृजित किया गया है।

यद्यपि अनेक विद्वान व मनीषी इस ग्रन्थ को इसके साथ संग्रह शब्द का प्रयोग होने से संग्रह ग्रन्थ ही मानते हैं । क्योंकि इसकी अनेक गाथाओं को अन्य ग्रन्थों में यथावत् या किंचित् परिवर्तन के साथ देखा जा सकता है। किन्तु इसके अध्ययन से इस मान्यता का पोषण नहीं के बराबर ही होता है। कारण, यदि यह संग्रह ग्रन्थ होता तो इसे प्रथम अधिकार में ही समाप्त हो जाना चाहिए था। क्योंकि इसका नाम द्रव्यसंग्रह हैं, और द्रव्यों की चर्चा मात्र प्रथम अधिकार में की गयी है। इसके दूसरे अधिकार में तो सात तत्वों वा नौ पदार्थो का विवेचन किया गया है तथा तृतीय अधिकार में मोक्षमार्ग की विवेचना है। अतः इसका नाम द्रव्यसंग्रह होने पर यह प्रथम अधिकार तक ही सीमित रहता। यदि ग्रन्थकर्ता के द्वारा यह नाम दिया गया है तो अन्य अधिकारों के सापेक्ष कोई अन्य नाम दिया जाना चाहिए था। जबकि इस ग्रंन्थ में प्रतिज्ञानुरुप जीव और अजीव द्रव्य के सापेक्ष ही वर्णन किया है । अतः प्रथम अधिकार में षड् द्रव्यों की चर्चा की है। द्वितीय में जीव अजीव से निर्मित आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा और मोक्ष तथा पुण्य पाप का चर्चा की है। तथा तृतीय में जीव के अजीव से मुक्त होने के उपाय एवं उसकी प्राप्ति का वर्णन किया गया है।

मात्र संग्रह शब्द को देखकर इसे संग्रह कहना अधिक उचित प्रतीत नहीं होता। कारण इसी तरह पंचास्तिकाय संग्रह नाम भी संग्रह रूप हैं पर यह सर्वमान्य आचार्य कुन्द कुन्द की कृति है। इसे कोई भी संग्रह रूप नहीं मानता। इसी तरह पंचसंग्रह भी क्या संग्रह ग्रन्थ है ? चाहे वह प्राकृत का हो या संस्कृत का ? कृतिकार का परिचय न होने पर भी उसे संग्रह ग्रन्थ कहना युक्त प्रतीत नहीं होता । रहा सवाल आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती की ही अन्य कृति गोम्मटसार का तो इसे भी संग्रह ग्रन्थ कहा गया है। और इसमें भी अनेक गाथायें धवला और जयधवला टीका या पूर्ववर्ती ग्रन्थों से समायोजित की गयी प्रतीत होती हैं किन्तु इसमें लेश्याधिकार जैसी अनेक गाथायें अन्यत्र अप्राप्य हैं । अतः इन ग्रन्थों को पूर्णतथा संग्रहग्रन्थ की कोटि में रखना उचित प्रतीत नहीं होता।

दूसरी बात, जहाँ तक उनके द्वारा दिया जाने वाला तर्क कि इसकी अनेक गाथायें अन्य पूर्ववर्ती ग्रन्थों में भी उपलब्ध हैं, विचारणीय अवश्य है। इसके प्रतिप्रश्न में यही कहना चाहूँगा कि अन्य अवशिष्ट गाथायें भी किसी ग्रन्थ में हैं ? यदि नहीं तो उनका प्रणेता कौन है ? इस प्रश्न पर यदि आप मौन हैं तो इसका सीधा सा उत्तर होगा कि इसके कर्त्ता स्वयं आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रचर्ती ही हैं। इस आधार पर यह मानने में किंचित भी संदेह को अवकाश नहीं यदि कतिपय गाथायें लेकर या उसी जैसी अन्य रचना कर सम्पूर्ण ग्रंन्थ का निर्माण करने का कार्य आचार्य नेमिचन्द्र महाराज का ही है।

इस ग्रन्थ की विषयवस्तु का परिशीलन करना भी लक्ष्य हैं, जिससे कि इस लेख में प्रवृत्ति हुई है । आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने इस ग्रन्थ का आरम्भ मंगलाचरण पूर्वक किया है, जिसमें उन्होंने जिनवर वृषभ को नमस्कार किया है। द्वितीय गाथा में विषय को स्पष्ट करते हुए जीव के नौ अधिकारों को बताया गया है। जिनके नाम स्पष्टतः निम्न है- जीव, उपयोगमय, अमूर्तिक, कर्त्ता, स्वदेहपरिमाण, भोक्ता, संसारस्थ,सिद्ध एवं विस्रसोर्ध्वगति । इन्हीं नौ अधिकारों का विवेचन गाथा 3 से प्रारम्भ होता है । अर्थात् गाथा 3 में निश्चय एवं व्यवहारनय से जीव की सिद्धि की है । तीन गाथाओं में उपयोगाधिकार, अमूर्तिक अधिकार के लिए 1, गाथा है, कर्त्ताधिकार के लिए 1, भोक्ताधिकार के लिए 1, स्वदेहपरिमाण के लिए 1, एवं संसारस्थ या संसारी के तीन गाथाओं की रचना की गयी है। पुनः सिद्धत्वाधिकार के लिए एक गाथा है। अन्तिम अधिकार विस्रसोर्ध्वगति के लिए कोई गाथा नहीं है। यथा-

जीवों उवओगमओ अमुत्ति कत्ता सदेहपरिमाणो।

भोत्ता संसारत्थो सिद्धो सो विस्सोड्ढगई।।2।।

यहाँ विचारणीय है कि जब मूल गाथा में स्वयं ग्रन्थकर्ता नौ अधिकारों के नाम ले रहे हैं तो उनका कथन आठ रूप ही क्यों रह गया। क्या एक गाथा निर्मित ही नहीं हुआ या अन्य कोई कारण है ? इस पर टीकाकार भी मौन दिखाई देते हैं। वे तो जिस क्रम से और जैसी गाथाएँ उपलब्ध होती हैं उनकी टीका करने में प्रवृत्त दिखाई देते हैं। मुझे प्रतीत होता है कि टीका से पूर्व शायद वह गाथा रही हो, और टीका में शामिल नहीं होने से फिर उस तरफ ध्यान हीं नहीं गया। इसके लिए पुरातन प्रतियों के आधार पर खोज होनी चाहिए।

इस प्रंसग में एक बात और ध्यातव्य है कि ग्रन्थकर्त्ता ने जिस क्रम में नौ अधिकारों की सूचना दी है, उस क्रम में गाथाओं को रखा भी जाना चाहिए था। इस प्रश्न का अवकाश यहाँ बिलकुल भी नहीं है कि गाथा में पदों की बाध्यता के कारण क्रम परिवर्तित भी हो सकता है। कारण, अधिकार गाथा पहले कही है फिर विवेचित गाथाओं को कहा जा रहा है। इसलिए आगे अधिकारों वाली गाथाओं को तो पूर्वकथित

गाथाओं के अनुसार रखा जा सकता है । किन्तु ऐसा नहीं किया गया। गाथाओं के क्रम में जीवत्व, उपयोगमयत्व, अमूर्तिकत्व और कर्तृत्व के बाद भोक्तृत्व का कथन किया गया है । इसके बाद स्वदेह परिमाणत्व का कथन है। ऐसा क्यों किया गया है ? यह एक प्रश्न विचारणीय प्रतीत होता है । इसका सामान्य-सा उत्तर तो यह हो सकता है कि अध्यात्म की दृष्टि से कर्त्तापने की विवेचना के बाद भोक्तापने की विवेचना की जानी चाहिए। बाद में स्वदेहपरिमाणत्व का कथन हो। किन्तु मूलग्रनथ में अधिकारों के निर्धारण के समय शायद यह दृष्टि नहीं रखी गयी है। वहाँ तो भोक्तापने के बाद संसारी एवं उसके बाद सिद्धत्व का कथन है। जबकि जीवत्व के बाद ही संसारीपना होना चाहिए था । तदनन्तर अन्य अधिकार। इसलिए यह प्रश्न अनुत्तरित ही रहता है।

उपयोगाधिकार में तीन गाथाओं द्वारा उपयोग के दो भेदों- दर्शनोपयोग एवं ज्ञानापयोग का वर्णन इनके अवान्तर भेदों सहित किया है। आचार्य महाराज ने गाथा 5 में दर्शनापयोग के चार और ज्ञानापयोग के आठ भेद उनके नाम के साथ स्पष्ट किये हैं । इस तरह नाम एवं भेदों का ही विवेचन इस स्थल पर किया गया हैं । न ही किसी भी उपयोग की परिभाषा ही दी गयी है। इसी तरह जीव से सम्बन्धित अन्य अधिकारों का भी विवेचन किया गया है।

तृतीय मोक्षमार्ग अधिकार में तीस गाथाओं द्वारा मोक्षमार्ग का विस्तृत विवेचन किया गया है । सर्वप्रथम निश्चय और व्यवहार रत्नत्रय को मोक्ष का मार्ग बताया गया है । इसके अनन्तर आत्मतत्त्व को ही मोक्षमार्ग निरूपित किया गया हे। गाथा 41 में रत्नत्रय के प्रथम अंग सम्यग्दर्शन की परिभाषा एवं उसके होने पर ही ज्ञान के सम्यग्ज्ञान होने की बात कही गयी है । इस तरह यह सम्यग्दर्शन को स्पष्ट करने वाली गाथा है । इसके अनन्तर गाथा 42 में सम्यग्ज्ञान पर प्रकाश डाला है । साथ इसमें संशय, विमोह और विभ्रम से रहित स्व-पर के स्वरूप ग्रहण को सम्यग्ज्ञान कहा गया है। साथ ही यह साकारात्मक व अनेक भेद रूप है, ऐसा कहा गया है।

इसकी टीका में टीकाकार ब्रह्मदेवसूरि ने ज्ञान के अनेक भेदों का कथन किया है। आद्यतः सम्यग्ज्ञान के पाँच भेद बतायें हैं- मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय और केवल पुनः बारह अंग और चौदह पूर्व रूप भेद किये है। इसके साथ अन्य अनेक भेदों की विवेचना टीका में की गयी है। यथा

तस्य भेदाः कथ्यन्ते। मतिश्रुतावधिमनः पर्ययकेवलज्ञानभेदेन पञ्चधा। अथवा श्रुतज्ञानापेक्षया द्वादशाङ्गमङ्गबाह्यं चेति द्विभेदम् । द्वादशाङ्गानां नामानि कथ्यन्ते। .....

अथवा वृषभादिचतुर्विंशति तीर्थङ्कर भरतादिद्वादशचक्र वर्ति विजया दिनवबलदेवा-त्रिपिष्टादिनववासुदेव ग्रीवादिनवप्रतिवासुदेवसम्बन्धित्रिषष्टि पुरुषपुराणभेदभिन्नःप्रथमानुयोगेभण्यते।...

अर्थात् प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग और चरणानुयोग, ये सभी सम्यग्ज्ञान के भेद बतलाये गये हैं ।

गाथा 43 और 44 में दर्शनापयोग की परिभाषा एवं उनके होने के क्रम व स्वामी का विवेचन किया है। यथा-

जं सामण्णं गहणं भावाणं णेव कट्टुमायारं।
अविसेसिदूण अट्ठे दंसणमिदि भण्णए समए।।43।।

दंसणपुव्वं णाणं छदुमत्थाणं ण दोण्णि उवउग्गा।
जुगवं जम्हा केवलि-णाहे जुगवं तु ते दोवि।।44।।

इसके बाद गाथा 45 में रत्नत्रय के तृतीय अंग सम्यक्चारित्र का कथन किया गया है।

प्रस्तुत प्रसंग पर विचारणीय यह है कि सम्यग्ज्ञान के विवरण के बाद सीधे ही सम्यक्चारित्र का विवरण होना चाहिए। बीच में दर्शनोपयोग का कथन करना क्या उचित/आवश्यक है ?

प्रथमतः यहाँ मोक्षमार्ग का प्रकरण होने सम्यग्ज्ञान का विवेचन करना तो उचित है, न कि ज्ञानोपयोग का । यद्यपि गाथा में आये सागार पद से टीकाकार ने साकार के सापेक्षी अनाकार का ग्रहण करने के लिए युक्ति बैठायी है । अतः गाथा 43 की उत्थानिका में वे कहते हैं- अथ निर्विकल्पसत्ताग्राहकं दर्शनं कथयति । इस तरह गाथा 43 की व्याख्या प्रारम्भ की गयी है। जबकि यहाँ पर प्रसंग मात्र रत्नत्रय का है। इसलिए इस प्रसंग में दर्शनोपयोग के कथन की आवश्यकता उचित प्रतीत नहीं होती। चूँकि टीकाकार ने इन दोनों गाथाओं पर पर्याप्त विस्तृत टीका लिखी है, इससे ज्ञात होता है कि ये दोनों गाथायें टीकाकार के समय भी मूल ग्रन्थ की ही मानी जाती रही होगीं।

इन दोनों गाथाओं में प्रथम 43 नंबर की गाथा तो प्राकृत पंचसंग्रह धवला टीका और गोम्मटसार जैसे ग्रन्थों में यथावत् पायी जाती है। जो कि द्रव्यसंग्रह से पूर्ववर्ती ग्रन्थ है। तथा गाथा 44 सर्वत्र उपलब्ध नहीं होती, मात्र नियमसार की गाथा 140 से समानता के। इन दोनों गाथाओं के शब्दों में पर्याप्त अन्तर है, अतः इन्हें दो अलग-अलग गाथा ही मानना युक्तिसंगत प्रतीत होता है।

यहाँ गाथाओं के वर्ण्यविषय से किसी प्रकार की असहमति जताना हमारा लक्ष्य नहीं है।

अपितु ये दोनों गाथायें प्रसंगानुकूल नहीं है, इतना ही बताना अभिप्राय है। यदि यही दोनों उपयोगाधिकार अर्थात् गाथा 4 से 6 के बीच हों तो विशेष उपयोगी ही सकती थीं।

मूलपाठ पर दृष्टिपात करने पर स्पष्ट अवभासित हेाता है कि ये दोनों ही प्रक्षिप्त हैं। पर प्रश्न यह है कि क्या ये दोनों गाथायें टीका के पूर्व ही प्रक्षिप्त हो गयी हैं तथा क्या किसी हस्तलिखित या ताडपत्रीय प्रति में इनके बिना भी द्रव्यसंग्रह के पाठ की उपलब्धि होती हैं ?

यदि इस विषय में शोधकार्य किया जाए तो संभव है कि इन दोनों गाथाओं को प्रक्षिप्त ही सिद्ध किया जा सकेगा ।

तमिलनाडु में जैन साधकों की साधना भूमि

❊ पं. श्री राजेन्द्र पाटील शास्त्री (पी.एच.डी.) श्रवणबेलगोला ❊

विंसट्ठ कंदोट्ठ दलाणुयारं सुलोयणं चंद समाण तुंडं।

घोणाजियं चंपय-पुप्फ सोहं तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।

मैं सबसे पहले लोकपूज्य जगत्वंद्य गोम्मटेश्वर भगवान् श्री श्री श्री बाहुबली भगवान् के चरण कमलों में शत शत नमन करता हूँ।

वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी, 108 श्री वासुपूज्य सागर जी, 108 श्री पंचकल्याण सागर जी, 108 श्री चन्द्रप्रभु सागर जी एवं समस्त आचार्य, उपाध्याय, मुनिसंघ के चरण कमलों में नमोस्तु।

समस्त आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लीका, एलक, ब्रह्मचारी सभी को वंदामी।

मेरे जीवन के सृष्टिकर्ता परम आदरणीय चलता फिरता देव के समान, जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्ती श्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी पाद चरण कमलों में भक्तिपूर्वक सादर प्रणाम।

इस विद्वत् सम्मेलन के सर्वाध्यक्ष डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बडौत, अध्यक्ष अशोक कुमार जैन बड़जात्या इन्दौर, संचालक ब्र. जयकुमार जैन निशांत टीकमगढ़ सभी को प्रणाम । उपस्थित सद्धर्म सम्यक्तव सभी बंधुओं को सादर जय जिनेन्द्र।

इस विद्वत संगोष्ठी में मेंरा विषय है तमिलनाडु में जैन साधकों की साधना भूमि। जैन साधक जहाँ कहाँ भी जाते हैं तो वहाँ वो साधना जरूर करते हैं। जहाँ पर वो साधना करते हैं उस स्थान का महत्व बहुत रहता है और वही स्थान बाद में एक इतिहास के रूप में सामने आता है।

जैन दर्शन में एक बात विशेष हैं। जितने भी तीर्थंकर हैं, उन सभी का जन्म एवं मोक्ष ये दोनों उत्तर भारत में हुआ। ऐसे ही जैनधर्म के अधिकांश आचार्यों का जन्म दक्षिण भारत, उसमें भी कर्नाटक का बेलगाम जिले में हुआ है।

इसी दक्षिण भारत में तमिलनाडु प्रांत में जैन साधकों की साधना भूमि की अभी हम बात करते हैं।

1. पोन्नूर मलैः- तमिलनाडु के तिरुवन्नामलै जिले के वंदेवासी तहसील के पास पोन्नूर मलै यह पवित्र क्षेत्र स्थित है।

यहाँ पर आप सब जानते ही होंगे कि जैनदर्शन के सुप्रसिद्ध आचार्य कुंदकुंद हैं। हाँ जी इन्हीं महान् आचार्य की यह साधना भूमि है।

मंगल भगवान वीरो। मंगलं गौतमो गणी।।

मंगलं कुन्दकुन्दार्यो । जैन धर्मोस्तु मंगलं।।

भगवान महावीर और गौतम गणधर के बाद जैनदर्शन में सर्वश्रेष्ठ आचार्य कुंदकुंद का नाम आता है। जिन्होंने इसी पोन्नूर मलै पवित्र क्षेत्र से सीमंधर स्वामी के समवशरण विदेह क्षेत्र गए और वहँ 7 दिन रहकर शंका समाधान कर वापस आए। अभी भी इनके चरण यहाँ पर मौजूद है। सीमधंर स्वामी का नूतन जिनमंदिर यहाँ पर है । इस मंदिर में रहकर वर्तमान कालीन स्वर्गस्थ माता 105 विजयमति माताजी ने जैनदर्शन का अद्भूत

प्रचार प्रसार किया । आर्यिका श्री 105 विजयमति माताजी की समाधी तो श्रवणबेलगोला में हुई परंतु उनकी साधना भूमि पोन्नूर मलै ही है । यहाँ पर एक घटना घटी है - एक बार आचार्य कुंद -कुंद महाराज पोन्नूर मलै में संघ सहित विराजमान थे । उस समय संघ की एक आर्यिका को दुर्देव सता रहा था । उस समय आचार्य कुंदकुंद ने सिद्धचक्र विधान की आराधना की और तत्पश्चात् वह दुर्देव दूर हो गया।

2. कौंडकुन्दपुर :- यह स्थान वर्तमान में आंध्रप्रदेश में है पहले यह तमिलनाडु के अंतर्गत ही आता था । मद्रास प्रांत । यह कुन्दकुन्दाचार्य की जन्मभूमि है। यह गुंटकल से 4 को भी दूरी पर है।

वैसे तमिलनाडु राज्य में ऐसे बहुत सारे क्षेत्रों का परिचय होता है। उतना जैन साधकों का साधना भूमियों का परिचय अपन संक्षिप्त में चर्चा करेंगे।

जो अपन कुंदकुंदाचार्य की बात कर रहे थे उनका तमिलनाडु में एलाचार्य इस नाम से जाना जाता था। आचार्य कुंदकुंद के 5 नाम थे उसमें एक नाम यह भी है । आधार- विजयनगर-अभिलेख

आचार्यः कुंदकुंदाख्यों वक्रग्रीवो महामुनिः।

एलाचार्यो गृद्धपिच्छ इति तन्नाम पंचधा।।

तमिलनाडु में जो तिरुवल्लुवर जो प्रमुख ग्रंथ है उसके रचयिता इनको ही मानते हैं । कुरल जो काव्य है इसके रचयिता भी आचार्य कुंदकुंद ही है। यह डॉ.ए.एन. उपाध्ये का मत है।

3. पोन्नूरः- दक्षिण देशो मलये हेमग्रामे मुनिर्महात्मा सीत्।
एलाचार्यो नाम्ना द्रविड़गाधीश्वरो श्रीमान्।।

ज्वालामालिनि मंत्रग्रंथ यहाँ पर हेमग्राम याने पोन्नूर ग्राम है।

उपर्युक्त गाथा से ही यह स्पष्ट हो रहा है कि पोन्नूर भी एक जैन साधकों की साधना भूमि है । यहाँ पर साक्षात् आचार्य कुंदकुंद रहते थे और उनको यहाँ एलाचार्य नाम से जाना जाता था। वह बुद्धिमान मुनि द्रविडगण के नायक थे।

यह पोन्नूर वंदेवासी से 6 की भी दूर पर है।

4. कांची/कंची :- इस क्षेत्र को सब जानते हैं क्योंकि यह जैनदर्शन के सुपसिद्ध आचार्य अकलंक का साधना भूमि है। 7 वी 8 वी शताब्दी के मध्यकालीन इस महान आचार्य ने बौद्धों से वाद-विवाद करके उनका हराकर जैनधर्म का झण्डा लहराया था, वह साधना भूमि यही है, देवचंद्र के राजावजी कथानुसार यह बात प्रमाणीभूत होती है। यद्यपि स्था सम्बन्धी वाद-विवाद है परंतु यदि कोई आचार्य उन्नती प्राप्त कर प्रसिद्धी पाता है तो वो हमारा है, हमारे स्थान का है ऐसा वाद-विवाद चलता रहता है।

बौद्ध गुरुकुल में जो पढ़ाई करने अकलंक और निकलंक गये थे वो भी कंचि का ही एक बौद्ध गुरुकुल है। ब्रह्म नेमिदत्त का आराधना कथाकोश एवं मल्लिशेण प्रशस्ति से भी यह सिद्ध होता है।

यही कांची एक और जैनदर्शन के महान कवीन्द्रभास्वान आचार्य समंतभ्रद की भी साधनाभूमि रही है । आचार्य समंतभद्र का

जन्म तमिलनाडु का उगरपुर (उरैयूर) में हुआ। एक तरह से यह जन्म क्षेत्र चोल राजाओं की प्राचीन राजाधानी थी और वर्तमान में इसका नाम त्रिचनापल्ली है। यह भी एक जैन साधकों की साधना भूमि है । आचार्य अकलंक कर करदै के पार्श्वनाथ जिन मंदिर में एक ऐसी प्रतिमा है जिसमें अकलंक मुनि के हाथ में पिंछी कमंडलु और ग्रन्थ है।

जब आचार्य समंतभद्र को भस्मक रोग हुआ था उस समय वो मणुवकहल्ली ग्राम में थे। इस रोग को दूर करने के लिए वो शिकोटि महाराजा का भी मलिंग नामक शिवालय में गए और आगे की कहानी आप सभी जानते ही है । लेकिन यहाँ पर एक प्रश्न है कि वर्तमान उत्तर प्रदेश के वाराणसी में यह रोग दूर हुआ इस संबध में दो मत है । क्योंकि काशी यह नाम सुनते ही अपन उत्तर प्रदेश का वाराणसी समझते हैं परंतु कंचि को भी दक्षिण काशी कहते हैं । इस हिसाब से यह घटना यहाँ पर भी घट सकती है । इससे समंतभद्रचार्य का साधना भूमि कंचि भी है यह सिद्ध होता है।

सित्तामूर (मेल सित्तामूर) : ई 9 वी शती में जैनों का तीर्थस्थल रहा था। यहाँ पर एक जैन मठ है। पहले यहाँ दिगम्बर साधु अपना साधना साधने के लिए पवित्र तीर्थभूमि को जाते थे। बाद में दिगम्बर मुनि की कालवश बदलकर कपडे पहनने लगे । तब से यहाँ भट्टारक परंपरा प्रारम्भ हुई। श्री वीरसेनाचार्य ने यहाँ जैन मठ की स्थापना की है । यह उल्लेख पं. मल्लिनाथ शास्त्री का लिखा हुआ तमिलनाडु का जैन इतिहास और मेंकेजी पाण्डुलिपियों 11 सेक्शन 2 में यह उल्लेख मिलता है। जैन मठ के पीठाध्यक्ष मठादीश द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार चलता था । तो यह एक तरह से दिगम्बर मुनियों का और भट्टारक एवं श्रावकों का साधना भूमि रही है।

इस सितामूर साधना भूमि के आसपास के लोग सब आदिशंकराचार्य के वशीभूत होकर धर्म से भ्रष्ट होकर शैव मत धारण कर रहे थे। इसलिए यहाँ के दिगम्बर मुनि नग्नपना छोड़कर कपड़े पहनकर भट्टारक बने । ज्यों भी यहाँ के भट्टारक बनते हैं उनका नाम लक्ष्मीसेन भट्टारक रखते थे। अभी वर्तमान में भी इस नाम के भट्टारकहैं और वो भी जैन धर्म के प्रसार-प्रचार के साथ समाज सेवा और अपना साधना करते सित्तामूर साधना भूमि को पवित्र बना रहें हैं।

पहले पूरे देश में चार ही जैन मठ थे। 1. दिल्ली 2. कोल्हापुर 3. जिनकंची और 4. पेनगोंडा। ये चारों लक्ष्मीसेन भट्टारक के ही मठ हैं । इसमें जिनकंचि और पेनगोंडा ये दो साधना भूमि के अंतर्गत तमिलनाडु में है । उप्पुवेलूर, वीरणामूर, एरूंबूर, तच्चूर, तंजाउर, अरिहंतगिरी इन साधना भूमियों में भी पहले जैन साधक थे और अपनी साधना साधली। इन क्षेत्रों पर भी पहले जैन मटों की स्थापना हुई थी और कुछ ही जैन मठ अब बचे हैं । अभि वर्तमान में श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला के पीठाध्यक्ष जगदगुरु कर्मयोगी स्वस्ती श्री चारूकीर्ति भट्टारक महा स्वामी जी के शिष्य स्वस्ति श्री धवलकीर्ति भट्टारक महास्वामी जी अरिहंतगिरि साधना भूमि जैनमठ के पीठाध्यक्ष हैं और अपनी साधना करते हुए, जैन धर्म के प्रचार-प्रसार

करते हुए, श्रेताओं को मार्गदर्शन प्रदान कर रहें हैं। तमिलनाडु में अभी वर्तमान में सबसे अच्छी साधना भूमि यही हैं । यहाँ पर धवलकीर्ति जी का प्रभाव भी अच्छा है। इस हिसाब से अरिहंतगिरी भी जैन साधकों की साधना भूमि के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण स्थान पाता है।

अरुंगुलं :- यह आचार्य अच्चणंदी का महाराज और तोलामोलिदेव का साधना भमि है। यह मद्रास से तिरुपति जाने के रास्ते पर उत्तर में तिरुपति से दस कि.मी. दूर है तोलामोलि देव की चूडामणि नाम का अद्भूत तमिल ग्रन्थ की रचना इसी साधना भूमि में हुई है।

मयिलापुर :- यह स्थान अविरोधि आलवार की साधना भूमि है । ये पहले ब्राह्मण थे बाद में जैन बनकर तिरुनूट्रंद, मयिलापूर, पत्तुपदिकं, आदि ग्रन्थों की रचना कर अपनी साधना यहाँ पर साधलि।

तिरुवदिकै : - यह धर्मसेन मुनि की साधना भूमि है। यह कुडुलूर से पणरूट्टि जाने के रास्ते में 20कि.मी दूरि पर है।

तिरुप्पापुलियूर :- यह सर्वनंरि साधु महात्मा का साधना भूमि है । जिन्हों ने इस साधनाभूमि में लोकविपाकशास्त्र का अर्धमागधी और संस्कृत भाषा में अनुवाद किया था।

अब मैं अभी वर्तमान मे जैन साधकों की साधना कौन-कौन से क्षेत्र पर हो रही है और यहाँ पर इन साधकों ने कौन-कौन से साहित्य रचा है उनका विवरण रचा है उनका विवरण संक्षिप्त में इस प्रकार है-

तमिलनाडु के वे गांव/नगर जहां पर वर्तमान मे जैन साधक रहते हैं -

मद्रास (चेन्नै), कांजीपुर, सेवूर, अनंतपुरं, आरनि, तिरुप्पनमूर, पोन्नूर, देसूर, तेल्लोर, वेण्कुट्रं, तिण्डिवनं, जिंजी, तोण्डूर, कल्लाप्पुलियूर, वलत्ति, मेलमलैनूर, तायनूर, तोरप्पाडि, ओदलवाडि, तच्चंबाडी, पेरणमल्लुर, वालपन्दल, मेलपन्दल, कोइलांबूडि, नगरम, मोट्टूर, तच्चूर, सेदप्पेरिपालयम, नावल, वेल्लै, वेलियनल्लूर, कलवै, वेणबाक्कं, वन्दवासी, विरुदुर, नेल्यांगुलम, विल्लिवनम्, नल्लूर, एरंबलूर, मुदलूर, एलंगाड, वंगारं, सात्तमंगलम्, गुडलूर, अगर कोरक्कोट्टै, पेरिय कोरक्कोट्टै, अरुगावूर, मंजपट्टु, तेन्नात्तूर, इसा कोलत्तूर, सोलै अरूगावुर, सेन्दमंगलम्, एरुंबूर, आयलपाडि, विलुक्कं एलमंगलं, अगलूर, अत्तिपाक्कं, नेमेली, वल्लिमेडुपेट्टै, वीडूर, पेरनी, पेरावूर, उप्पुवेलूर, आलग्रामं, सेण्डियंपाक्कं, पेरमण्डूर, विलुप्पुरं वेलूर, तंजाउर, तंजाउरकोट्टै, मन्नार्गुडि, दीपंगुडि, अनुमन्तकुडि, सेलं, पाण्डि, कडलूर, पणरुट्टि, कुंभकोणं

ये कुल 79 हैं । ये गाँव भी है और शहर भी हैं। इन गाँवों में दस, बीस पचास, सत्तर के हिसाब से जैनों के घर हैं। बहुत करके हर एक गाँव में जैन मन्दिर हैं। कही व्यवस्थित और अव्यवस्थित भी है।

अतिशय एवं पुण्य-स्थल:- तिरुपरुत्तिकुन्ट्रं , आरपाक्कं, तिरुमलैं , करन्दै, पूण्डि, पोन्नूरमलै, मेलचित्तामूर, तिरूनरुकुन्ट्रं, तिरनाथंकुन्ट्रं,

अतिशय क्षेत्र और यात्रा-स्थल :- वल्मिलै, पंचापाण्डमलै,अरुंगलं सलुक्कै आलुरुट्टिमलै, नार्तमलै, तेनीमलै, सिद्धन्नवासल, नागमलै, इडगिरि, पशुमलै, मेत्तुपट्टिमलै, करलीपट्टुमलै, तिरुप्परंकुन्ट्रं, कलुगुमलै, सिद्धरमलै, समणरमलै, विजयमंगलं, महालिपुरं।

अब इन स्थानों पर जैन साधकों ने जो साधना करके ग्रन्थों की रचना की हैं उनकी सूची इस प्रकार हैं-

अ. साहित्य :- सिलप्पधिकारं, जीवकचिन्तामणि, नरिविरूत्तं, पेरूंकथै , जूलामणि, वलयापति, मेरुमन्दरपुराणं, नारदचरितं शान्तिपुराणं, नीलकेशि, उदयनकुमार कावियं, नागकुमार कावियं, नंबि अगप्पोरुल, कलिंगत्तुप्परणि, यशोधरकावियं, रामगाथै, किलिविरुत्तं, एलिविरुत्तं, तत्त्वदर्शनं।

आ. कोश :-चूडामणि निखण्डु, दिवाकरं, पिंगलन्दै।

व्याकरण:- पेरहित्तयं, तोलकाप्पियं, नन्नूलं, याप्पेरुंगलं, याप्पेरुंलक्कारिकै, नेमिनाथ, अविनयं, वेण्बा, पट्टियल, सन्दनूल, इन्दियकाणियं, अणियियलं, वाप्पियं, मोलिवरि, कंडियनन्नियं, काक्कैपाडियं।

नीतिग्रन्थ :- तिरुक्कुरल, नालडियर, अरनेरिच्चारं, पलमेलि नानूर, सिरुपंचमूलं तिणैमाले नूट्रैंबटु, आचारक्कोवै, एलादि, अरुंगलचेप्पु, जीबसंबोधनै, औवे, अगत्तिलचूडि, नानू मणिक्काडिगै, इन्नानार्पदु इनियवै नार्पदु, तिरिक्कडुगं, कोंगु मण्डलशतकं।

ज्योतिष ग्रन्थ :- जिनेन्द्रमालै, उल्लमुडैयान।

गणित ग्रन्थ :- केट्टिएण चुवडि, कणक्कधिकारं नल्लिक्कवायपाडु, सिरुकुलिवायप्पाडु, कीलयवाय इलक्क, पेरुक्कल वायप्पाडु।

संगीत ग्रन्थ :-पेरुगंडुगु, पेरुनारै, सेयिदियं, भरतसेनापतियं सयन्तं।

प्रबन्ध ग्रन्थ :- तिरुक्कलंबकं, तिरुनूट्रवेंबावै, तिरूपपामाले, तिरूप्पुगग, आदिनाथ, पिंलैत्तमिल, आदिनाथर उला, तिरूमेरिसै यंदादी, धर्मदेवी यंदादी और तिरुनाथर कुन्ट्रुतु पत्तुप्पादीकं।

1. पं. मल्लिनाथ शास्त्री द्वारा विरचित **तमिलनाडु का जैन इतिहास** (हिंदी भाषा)।

2. जि. ब्रह्मप्पा का **श्रवणबेलगोला के शासन** (कन्नड भाषा)।

3. डॉ. कस्तूरचंद कासलीवाल का **आचार्य कुंदकुंद : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व** (हिंदी भाषा)।

4. डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री का **तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परंपरा** (हिंदी भाषा)।

5. प्रो. जीवधंर कुमार होतपटे का कन्नड अनुवादित डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री का **तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परंपरा।**

6. डॉ. अमरसिंह वधान द्वारा संपादित **तमिल साहित्य और संस्कृति** (हिंदी भाषा)।

7. डॉ. हीरालाल जैन **भारतीय संस्कृति को जैन धर्म की देन** (हिंदी भाषा)।

8. डॉ. जगदीशचन्द्र जैन का **प्राकृत साहित्य का इतिहास।**

9. डॉ. हीरालाल जैन **भारतीय संस्कृति को जैन धर्म की देन** इसका कन्नड अनुवादित मिर्जी अण्णाराय का ग्रन्थ **भारतीय संस्कृतिगे जैन धर्मद कोडुगे।**

कविता

दो चन्द्रमा

❊ श्रीमति आसमाँ अनामिका जैन (दमोह म.प्र.)❊

पूर्णिमा के चन्द्रमाँ दो, इक गगन में इक धरा पर।
हैं अचंभित नयन मेरे, मैं किसे अविराम देखूं ?
एक तो राहु से ग्रसता, है कंलकित जो सदा ही।
दूसरा है ज्ञान ज्योति से , उजागर दीप्ति धारी।
दूसरा है पूज्य जग में, मैं उन्हें अविराम देखूँ।

पूर्णिमा के चन्द्रमाँ दो, इक गगन में इक धरा पर।

त्याग की सुरभि महकती, साधना चरणों की चेरी।
नांद जय का गूंजता है, बज रही अध्यात्म भेरी।
पग जो शिव मग पर बढे हैं, मैं उन्हे अविराम देखूँ।

पूर्णिमा के चन्द्रमाँ दो, इन गगन में इक धरा पर।

एक क्षय होकर स्वयं ही, बना अमावास घोर कारी।
दूसरा क्षय कर्म हेतू, जग उजागर ज्ञान धारी।
नव प्रभाकर विद्यासागर, मैं उन्हें अविराम देखूँ।

पूर्णिमा के चन्द्रमॉ दो, इक गगन के इक धरा पर।
हैं अचंभित नयन मेरे, मैं किसे अविराम देखूं।

हमारे गौरव

वीर महाराजा साहसतुंग

पुलकेशी द्वितीय का पुत्र एवं उत्तराधिकारी विक्रमादित्य प्रथम साहसांक (642-680 ई.) ही अकलंक सम्बन्धी अनुश्रुतियों का राजन साहसतुंग प्रतीत होता है जिसकी राजसभा में आचार्य ने अपनी वाद विजयों का उल्लेख किया था। यह नरेश उन्हें अपना पूज्यापाद गुरु मानता था। राज्य प्राप्ति के समय उसकी स्थिति बड़ी डाँवाडोल थी किन्तु इस रणसाहसी साहसोतुंग वीर ने कुछ वर्षों में ही अपने शत्रुओं का दमन कर दिया और स्वपराक्रम द्वारा अपने प्रतापी पिता के साम्राज्य एवं प्रतिष्ठा का पुनरुद्धार कर लिया, और तभी 653 ई. के लगभग उसने अपना विधिवत राज्याभिषेक कराया। अपने आज्ञाकारी भाई जयसिंह को उसने लाटदेश का शासक बनाया जिसने गुजरात के चौलुक्यों की वह शाखा चली जो 10वीं 12वीं शती में अत्यन्त प्रसिद्ध हुयी।

विक्रमा दित्य प्रथम के पश्चात उसका पुत्र विनयादित्य 680-696 ई. राजा हुआ। उसके राजगुरु मूल संघान्तर्गत देवगण के उपर्युक्त आचार्य पूज्यपाद अकलंक के गृही -शिष्य निरवद्य पण्डित थे जो भारी विद्वान थे। अपने राज्य के सातवें वर्ष में शक 608 सन् 687 ई. में जब यह नृपति रक्तपुर के अपने विजय स्कन्धावर (छावनी) में ठहरा हुआ था उसने देवगण के उपर्युक्त गृहस्थाचार्य सम्भव तथा निरवद्य पंण्डित द्वितीय (697-733 ई.) ने पल्लवों के विरूद्ध किये गये अपने पितामाह एवं पिता के युद्धो में सराहनीय भाग लिया था। अपने पराक्रम से अपने शत्रुओं को उसने बहुत कुछ दबाये रखा। पूज्यपाद (अकलंक) की परम्परा के उदय देव पण्डित जो संभवतः तथा पूवोक्त निरवद्य पण्डित के शिष्य थे इस नरेश के राजगुरु थे सन् 700 ई. में उसने उन्हें लक्ष्मेश्वर के शंख-जिनेन्द्र -मन्दिर के लिए दान दिया था। इसी समय के लगभग उसने राजधानी वातापी में एक दानसूचक कन्नड़ी शिलालेख अंकित कराया था। उसके हलगिरी शिलालेख में जैन तीर्थ क्षेत्र कोप्पण का उल्लेख है। अकलंक देव के सधर्मी पुष्पसेन के शिष्य विमलचन्द्र मुनिकुमार नन्दि और अकलंक के प्रथम टीकाकार वृद्वत-अनन्तवीर्य इसी काल काल में और सम्भवतथा इसी राजा के प्रश्रय में हुये थे। गंगा नरेश श्री पुरुष मुत्तरस भी उसका समकालीन था और उक्त विमलचन्द्र आदि गुरुओं का पोषक था। अपने राज्य के 35वें वर्ष (शक 651 सन् 729 ई.) में महाराज विजयादित्य द्वितीय ने

अपने रक्तपुर के विजय स्कन्धपुर से पुलिगेरे (लक्ष्मेश्वर) के उसी शंख जिनालय के हितार्थ अपने पिता के तथा अपने राजगुरु उदयदेव पण्डित को कर्दपनाम का गाँव दान दिया था। सन् 733 ई. में विकीर्णक नामक एक राज्यमान्य श्रावक ने भी उसी जिनालय के लिये पुष्कल दान दिया था। इसी चालुक्य चक्रवर्ती विजयादित्य वल्लभ की छोटी बहन कुकुम-महादेवी ने पुरिगेरी में एक भव्य जिनालय बनवाया था। 11वीं शती के अन्त तक विद्यमान था। विजयादित्य द्वितीय का पुत्र एवं उत्तराधिकारी विक्रमादित्य द्वितीय (733-744) भी अपने पूर्वजों की माँति जैन धर्म का भक्त था। अकलंक की परम्परा के विजयदेव पण्डित उसके राजगुरु और गृहस्थानाचार्य थे। वह रामदेवाचार्य जो संभवतः अकलंक देव के ही एक शिष्य थे के प्रशिष्य और जयदेव पण्डित के अन्तेवासी शिष्य थे। इस नरेश के 735 ईं . के लक्ष्मेश्वर शिलालेख में रामदेवाचार्य के लिए मूलसंघान्वय देवगणोदिताय परम तप श्रुतमूर्ति विशोक विशेषण दिये हैं । जयदेव पण्डित को विजित विपक्ष वादी और विजयदेव-पण्डिताचार्य को समुपगतैकवादि लिखा है। भट्टाकलंक की परम्परा के विद्वानों के लिए थे विशेषण उपयुक्त ही हैं। देव संघ का प्रधान केन्द्र उक्त लक्ष्मेश्वर ही रहा प्रतीत होता है और उसके परम पोषक थे चालुक्य नरेश ही थे । विक्रमादित्य द्वितीय ने उक्त तीर्थ स्थान के शंखतीर्थवीसति धवल-जिनालय आदि जैन मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया और बाहुवलि नामक धर्मात्मा श्रेष्ठि की प्रार्थना पर वहां के मंदिरों की मरम्मत रख रखाव जिनेन्द्र भगवान की पूजा तथा दान प्रवृत्ति को चालू रखने आदि के लिए बहुत सी भूमि का दान कर आदि सर्व बाधाओं से मुक्त करके दिया था। उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी कीर्ति वर्मन द्वितीय 744-751 ई वातापी ने इस पश्चिमी चालुक्य वंश का अन्तिम नरेश था। अपने पिता द्वारा कांची के पल्लवों पर किये गये अक्क्रमण में भी उसने प्रशंसनीय भाग लिया था। किन्तु इधर दो दशकों से चालुक्यों के राष्ट्रकुट सामन्तों की शक्ति द्रुत वेग से बढ़ रही थी। अन्ततः 752 ई के लगभग राष्ट्र कूट दन्तिदुर्ग ने चालुक्य सत्ता को छिन्न-भिन्न कर दिया और 757 ई में कीर्तिवर्मन द्वितीय की मृत्यु के साथ ही चालुक्यों का यह अध्याय समाप्त हुआ वह स्वयं निःसंतान था अतएव उसके चाचा भीम पराक्रम की सन्तति राष्ट्रकूटों के गौवा सामन्तों या उपराजाओं के रूप में जैसे-तैसे चलती रही जब तक कि दसवी शताब्दी कि अन्तिम पाद में एक नवीन राज्य शक्ति के रूप में चालुक्यों का पुनः अभ्युदय नहीं हुआ।

बाल मनोविज्ञान

कौन से बालक हठी होते हैं

❊ पं. हीरालाल जैन, हीराश्रम साढूमल ❊

जिन बालकों में जन्म से ही अपनी अन्तरात्मा की हुंकार सुनने की असाधारण ाक्ति होती है वे बालक दूसरे लोगों की बात प्रथम तो सुनना ही नहीं चाहते हैं किन्तु यदि इतने पर भी उन पर दबाव डालकर कोई उनकी मर्जी के खिलाफ कुछ कराना चाहते हैं, तो वे उसे ठुकरा देते हैं, क्योंकि उनकी आन्तरिक प्रेरणा उन्हें वैसा करने के लिए विव ा करती हैं, पर इतने पर भी कई अज्ञानी बाप उन्हें अपनी इच्छानुकूल चलाने के लिए डाँटते हैं, फटकारते है। इतने पर भी यदि बालक अपनी अंतरंग प्रेरणा के खिलाफ कुछ भी करने के लिए तैयार नहीं होता है तो वे मूर्ख मॉ –बाप उससे मारपीट करने पर उतारू हो जाते हैं, फल क्या होता है कि बालक वो अपनी बात पर अड़ेगा– और मॉ–बाप अपनी बात पर। इससे उस बेचारे बालक की स्वाभाविक ाक्तियों का सत्याना ा कर दिया जाता है, उसके वे असाधारण गुण – दुर्गुण के सांचे में ढाल दिये जाते हैं। पर हमारे भोले–भाले मॉ–बापों को यह पता नहीं है कि बालक का **हठ** नाम से पुकारा जाने वाला गुण कौन–कौन सी असाधारण ाक्तियाँ रखता है। उन्हें मालूम होना चाहिए कि जो बालक भविश्य में चलकर अपनी बात पर जोर देने वाले, ाान पर कुर्बान होने वाले होते हैं, वे ही बचपन में जिद्दी या हठी हुआ करते है। मैं प्रत्येक मॉ बाप से सादर प्रार्थना करूंगा कि वे बालकों के इन स्वाभाविक गुणों को कुचले नहीं किन्तु उन्हें उचित मार्ग से पोशण देवें–जिससे भविश्य में चलकर वे रोटी के टुकड़ों के लिए अपने धर्म–कर्म को बेचने वाले न बनकर, दे ा व धर्म पर प्राण न्यौछावर करने वाले बने । मैं तो प्रेरणापूर्वक कहूँगा अपने बालकों की हठों को अव य पूरा करना चाहिए। हमारे ाास्त्रों में आई कुछ अनेकों बातें इस बात की साक्षी हैं कि बाल हठ अव य पूरी की जाना चाहिए यह सर्वप्रसिद्धि है कि रामचन्द्र बाल्यावस्था में एक बार चन्द्रमा को ले आने के लिए पकड़ने के लिए मचल पड़े थे उस वक्त उनकी मां ने दर्पण मंगाकर और उसमें उसका प्रतिबिम्ब दिखाकर उनकी इच्छा को – जिसको हम लोग हठ कहते हैं– पूरा किया था। बचपन की इसी हठ ने ही तो आगे चलकर रावण के पाले से सीता को छुड़ाने का आग्रह कराया, हठ पकड़ाया। यदि बचपन में उनकी उस हठ को अन्य प्रकार से डरा–धमका करके – पूरा किया जाता हो वे सीता को छुडाने के लिए इतना महायुद्ध का सामना कभी नहीं करते किन्तु यह सोचकर रह जाते कि क्या करें जो अपने भाग्य में जो था, हो गया यदि सीता भाग्य में लिखी होती तो हमारे हाथ से क्यों जाती आदि जैसे कि आज कुछ लोग सोचा करते हैं। इसका कारण भी यह है कि हमारे बचपन में हमारे मां बापों ने हमारी इच्छाओं को भी पूरा नहीं किया किन्तु डरा धमकाकर या पीट–पीट कर उन्हें कुचल डाला फिर बतलाइए कि हमें स्व पौरूश का भाव जागृत ही कैसे हो सकता

हास्य तरंग

1. लाइन मेन बिजली सुधारने का कार्य कर रहा था कि अचानक बिजली का तार उसके ऊपर गिर गया वह तडफ-तडफ करके चिल्ला रहा था कि उसे अचानक याद आया कि अरे मैं ही तो विद्युत सप्लाई की मेन लाइन बंद करके आया हूँ । वापस उठकर हंसते हुए बोलता है याद नही आता तो मर जाता।

2. पत्नी ने दुकान पर बोर्ड पढ़ा बनारसी साड़ी दस रूपये, नायलोन साडी आठ रूपये, काटन साड़ी पन्द्रह रूपये। पत्नि ने पति से कहा मुझे जल्दी 150 रूपये दे दो दस साड़ी खरीदना है। पति बोला यह साड़ी की दुकान का बोर्ड नहीं प्रेस करने की दुकान का बोर्ड है।

3. महिला (डाक्टर से) मेरा कान देख लीजिए। डॉक्टर बहिन जी आप गलत जगह आ गई है मेंने संगीत में डॉक्टरेट की है। महिला फिर तो मैं सही जगह आई हुँ मेरे कानों में झंझाला हट होती है तो वह कौन सा राग है।

4. एक महिला बैंक में चेक भुनाने गई, केशियर ने कहा आपको अपनी पहिचान देना होगी ।महिला ने चारों ओर देखा और उसने अपने पर्स से काँच निकाला, उसमें चेहरा देखा और बोली हाँ मैं ही तो हूँ।

5. एक मनचले को लड़की छेडने पर पुलिस आफीसर द्वारा बहुत बुरा पीटा गया। सुबह उसे छोड़ा गया तो पुलिस के आफीसर ने हिदायत दी अगर फिर किसी लड़की को छेड़ा तो इससे ज्यादा पीटा जायेगा। लड़का जी बिलकुल भी नहीं सारी लड़कियों को बहिन समझूंगा । लड़का घर जाता है उसकी पत्नी आयी और रोते हुए बोली बहुत दर्द हो रहा होगा। लड़का नहीं नही बहिन जी मैं बिलकुल ठीक हूँ।

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

पथरी रोग व उपचार

बढ़ते तापमान, अनियमित दिन चर्या ओर प्रदुषण ने मानव जीवन को अनेकों रोगों से ग्रसित कर दिया है जिनमें से एक है किडनी की पथरी जो आज एक आम रोग हो गया है। यह रोग बच्चे, युवा, स्त्री, पुरुष, बुजुर्गो को सभी को प्रभावित कर रहा है।

मानव शरीर मे दो किडनी फली के आकार की होती है जो कमर के हिस्से पिछले भाग दायें व बाये होती है। किड़नी की लम्बाई 4 से 5 इंच चौड़ाई 2.5 इंच और मोटाई 1.5 इंच करीब होती है। एक वयस्क किडनी का भार करीब 140 ग्राम होता है। किडनी एक मिनिट में लगभग 125 मिली लीटर रक्त का शोध करती है, किडनी शरीर में पानी का संकलन बनाय रखना, रक्त में लवण के गाढ़ेपन को व्यवस्थित रखना, विजावीय पदार्थों की अधिकता को बाहर निकालना, खून दबाव पर नियंत्रण आदि कार्य करते हुए एक अतिआवश्यक शरीर संचालन का प्रमुख अंग है।

पथरी हर व्यक्ति में रोजाना बनती है और मुत्र मार्ग से बाहर निकल जाती है। जितना अधिक मात्रा में मूत्र का निर्माण होगा उतनी कम संभावना पथरी बनने की रहती है। पथरी का आकार रेत के दाने 2 से 3 एम.एम ओर अधिकतम 9 से 10 एम.एम तक हो सकता है। 2-3 एम.एम. की पथरी बिना दर्द के पेशाब के साथ निकलती है किन्तु आकार बड़ा होने पर मूत्रन की, यूरेथ्रा में फस जाती है। जिससे एकाएक भयानक दर्द उठता है, दर्द किसी एक तरफ की किडनी मूत्रन की जगह से प्रारंम्भ होकर नाभि, नीचे पुट्टे दर्द होता है, दर्द गोल घेरे की तरफ बढ़ता जाता है और पीठ के पीछे तक चला जाता है, पेशाब का बेग लगातर हुआ करता है पेशाब बूंद बूंद टपकता है। दर्द की धमक से पसीना, हिचकी, उल्टी व कभी कभी बेहोशी तक आ जाती है। कभी कभी किडनी फेल होने की स्थिति में जानलेवा हो सकती है।

प्राथमिक उपचार में गर्म पानी में कपड़ा भिगोंकर दर्द वाली जगह पर सेक करना दर्द की जगह दबाकर रखना, गरम पानी पिलाना, कुछ दे र तक पीठ की तरफ मुडकर बैठना से पथरी किडनी में वापस लौट जाती है।

पथरी रोग से बचने के लिए ताजे फल सब्जी कम वसा वाले पदार्थ का सेवन करना। नियमित

व्यायाम, योग, मोटापा अधिक वजन न बढने देवे। नमक की मात्रा कम उच्च रक्तचाप, शुगर, कोलेस्ट्राल नियंत्रण रखना, दर्द निवारक गोलियाँ कम उपयोग, एंटीबयोटिक दवाईयाँ आयुर्वेदिक दवाईयाँ, शराब का सेवन करना। नरियल पानी, दूध से बने पदार्थ, पालक, गोभी, टमाटर, मशरूम, चौलाई का उपयोग न करें। प्रतिदिन 10-12 गिलास पानी पिये, कैल्शियम युक्त भारी पानी, नलकूपों के पानी से परहेज रखना। 1. सेंधा नमक का सीमित मात्रा के उपयोग लाभदायक है असावधानी वरतने पर पुनः पथरी बनना शुरु हो जाता है।

पथरी रोग का लगभग 90 फीसदी आयुर्वेद, हेम्योपैथी दवाइयों से ठीक हो जाता है। पंचबालयति जैन मंदिर से निःशुल्क पथरी की दवाई का वितरण किया जाता है जिससे लाखों रोगी प्रतिवर्ष स्वस्थ हो रहे हैं। अनुभव के आधार पर 8 एम.एम की पथरी धीरे धीरे पेशाब के रास्ते निकल जाती हैं। बढ़े आकार व नली में फसने पर ऑपरेशन ही विकल्प है समय पर योग्य अनुभवी चिकित्सक से संपर्क करना चाहिये

जिनेन्द्र कुमार जैन (गौरीनगर इन्दौर)

बाल कहानी

इस्पेक्टर अधर्मवीर

घटना पानीपत शहर के बलजीत नगर की है

एक चार साल की बच्ची मोना का किसी असामाजिक तत्व ने अपहरण कर लिया था। मोना के पिता राजीव बहुत परेशान हो गये। मोना मिल नहीं रही थी, राजीव यह जानता था कि मेरी बेटी का अपहरण किसी लोभ लालच या फिरोती के चक्कर में हुआ है या फिर किसी गिरे हुये इंसान ने मेरी बेटी के साथ बुरा काम करने को नियत से बेटी का अपहरण किया है। राजीव ने अपने स्तर से मोना का पता लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फिर भी राजीव को निराशा ही हाथ लगी। राजीव यह जानता था कि अगर में पुलिस में जाता हूँ तो सबसे पहले मुझे राजनीति की शरण लेना पड़ेगी। जब तक राजनेताओं का दबाव नहीं बढ़ेगा तब तक किसी भी प्रकार से बेटी का पता लगना संभव नहीं है।

आखिरकार राजीव इस बात से परेशान था कि, किसी भी प्रकार से बेटी का पता लगाना एक गुण्डे को छोड़ कर दूसरे गुण्डों को प्रोत्साहन देना ही है। फिर भी अंत में राजीव को पुलिस की शरण में जाना ही पड़ा।

पानीपत की कोतवाली में जैसे ही राजीव ने पैर रखा कि उसकी मुलाकात इंस्पेक्टर धर्मवीर से हुई। राजीवन ने इंस्पेक्टर को अपनी बेटी की दास्तान सुनाई, इंस्पेक्टर धर्मवीर ने इस घटना को निम्न ने निम्न स्तर का बताया। तथा राजीव को सहानुभूति देते हुये। कहा कि मैं आपकी बेटी को शीघ्र ही जिंदा सौपूंगा। धर्मवीर इंस्पेक्टर की बात सुनकर राजीव को बहुत खुशी हुई। लेकिन जैसे ही वह चलने लगा कि कि धर्मवीर इंस्पेक्टर ने कहा कि, एफ.आई.आर तो लिखवा जाओ तब राजीव ने एफ.आई.आर लिखवाने लगा तब लिखने वाला कहने लगा कि कुछ रिश्वत खर्च होगा तथा बात एक लाख से एक हजार तक आ गई। आखिरकर राजीव के मुख से निकल गया कि आप धर्मवीर इंस्पेक्टर नहीं अधर्मवीर हैं।

संस्कार गीत

न हिन्दु न मुस्लिम

नील गगन में उडते पंछी,
गीत मिलन के गाते
मंदिर मस्जिद गिरजाघर पर
बैठ बैठ उड़ जाते

1.
न वे हिन्दु न वे मुस्लिम वे केवल पंछी है
इंसानो की इस फितरत से अंजाने वे पंछी है
किसने समझी उनकी भाषा
गीत प्रेम के गाते

2.
नफरत फितरत फिरकापरस्ती
ये इंसानी बबाल है
जाति पंथ की गंदी सोंचे
उन्नति रोकें जाल है
मानवता का मूल्य समझकार
गीत हृदय से गाते

3
खून खून है रंग लाल है
भेद नहीं कुछ इसमें
आपस में हम लड़ भिड़ जाते
भूल के सारी कसमें
मजहब नहीं सिखाता नफरत
क्यों राग अलग हम गाते

बाल कविता

गुरु उपकार

गुरुवर के गुण गाओ रे !

जोर से ताली बजाओ रे !

संयम स्वार्ण महोत्सव आया रे !

भक्ति में रम जाओ रे !

गुरुवर का उपकार बड़ा है

गुरुद्वारे संसार खड़ा हैं

पशुओं पर करूणा बरसायी

तीर्थों की महिमा बतलाई

भेष दिगम्बर धारो रे !

संस्कृत शतक काव्य लिखडाले

समिति गुप्ति व्रत हर दम पाले

कर्म जलाते काले काले

धर्म संस्कृति के रखवाले

गुरु शरण में आओ रे !

आचार्य विद्यासागर के शिष्य समूह में भारत का प्रतिनिधित्व

❊ ब्र. जिनेश मलैया (इन्दौर) ❊

आचार्य विद्यासागर महाराज जी के 120 मुनि शिष्य हैं। 172 आर्यिका शिष्या हैं एवं 20 ऐलक,14 क्षुल्लक, 3 क्षुल्लिकायें है । इस तरह 329 दीक्षित शिष्यों का समूह है। इनमें संपूर्ण भारत देश से प्रतिनिधित्व दृष्टिगोचर होता है । मध्यप्रदेश महाराष्ट्र कर्नाटक उ.प्र. राजस्थान गुजरात झारखण्ड छत्तीसगढ़ दिल्ली तमिलनाडु हरियाणा इन11 प्रदेशों के शिष्यों ने आचार्य श्री की शरण ग्रहण करके अपने जीवन को मोक्ष मार्ग पर बढ़ाया। दक्षिण से लेकर उत्तर क्षेत्र तक के युवक युवतियों ने दीक्षा ग्रहण करके अखण्ड भारत की छवि को उभारा है।

क्षेत्र की दृष्टि से आचार्य के शिष्य समुदाय में मध्यप्रदेश का सर्वाधिक योगदान है। इस प्रदेश से 81 मुनि 146 आर्यिकायें 8 ऐलक एवं चार क्षुल्लक 2 क्षुल्लिकायें है। 73.25 प्रतिशत अकेले मध्यप्रदेश का शिष्य समुदाय है। इसके उपरांत उत्तरप्रदेश के 4 प्रतिशत, महाराष्ट्र के 6 प्रतिशत, कर्नाटक के 3.34 प्रतिशत, राजस्थान 1.5 प्रतिशत शिष्य हैं। गुजरात के 1 प्रतिशत भी नहीं है झारखण्ड से मात्र एक शिष्य हैं छत्तीसगढ़ से 2 प्रतिशत शिष्य हैं दिल्ली तमिलनाडु हरियाणा इन सबके मिलाकर लगभग 1.51 प्रतिशत हैं । इस तरह से आचार्य श्री के शिष्य समुदायों में मध्यप्रदेश का समूह सर्वाधिक है। ज्ञातव्य विषय यह है कि मध्यप्रदेश में भी सागर जिला अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये हुए हैं । इस जिले में 25 मुनिराज 57 आर्यिकायें 7 ऐलक इस तरह सागर जिले के 27 प्रतिशत शिष्य समुदाय है।

तदुपरान्त जबलपुर जिले से 13 प्रतिशत शिष्य अपना प्रतिनिधित्व करते हैं। दमोह जिले के 6 प्रतिशत शिष्य शिष्यायें हैं। 4.5% अशोकनगर जिले के शिष्य शिष्यायें हैं । विदिशा जिले के 2.7 प्रतिशत शिष्य हैं। रायसेन खरगोन देवास टीकमगढ़ नरसिंहपुर छिंदवाडा मण्डला सतना झाबुआ कटनी छतरपुर शिवपुरी अनूपपुर इंदौर हरदा सिवनी शहडोल गुना सहित 23 जिलों के एक से दो प्रतिशत तक शिष्य हैं। भले ही कई क्षेत्रों से कम संख्या हो किन्तु आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने भारती की अखण्डता को साकार किया है। अगर जैनों की जनसंख्या जम्मू कश्मीर, अरूणाचल, त्रिपुरा आदि क्षेत्रों में होती तो इन प्रदेशों से भी आचार्य श्री के शिष्य अवश्य बनते और यह कहा जा सकता था कि चन्द्रगुप्त मौर्य के बाद अखण्ड भारत के शिष्यों को दीक्षित करने वाले एक मात्र आचार्य विद्यासागर जी हैं वे भले आपको राष्ट्र संत न लिखे परन्तु सचमुच में वे राष्ट्रसंत से भी कुछ अलग ही महत्व रखते हैं।

वीतरागी संत में निरीह वृत्ति रखकर शिष्य समुदाय का अनुग्रह किया है क्षेत्रवाद भाषा वाद से ऊपर उठकर राष्ट्रवाद ही जिनका मुख्य लक्ष्य रहा है ऐसे पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज बहुत बड़ी सोच रखकर शिष्यों का अनुग्रह करते हुए अनगढ़ पत्थरों में सुंदर मूर्ति बनाते हैं।

वास्तु और जैन कर्मसिद्धान्त

❊ पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन (सागर) ❊

जैनागम के अनेक ग्रन्थों में वास्तुविद्या का वर्णन प्राप्त होता है। यथा- वास्तु विद्या तीर्थंकर भगवान के मुखकमल से निर्गत, गणधरदेव द्वारा रचित बारह अंगों और चौदह पूर्व में ही समाहित है। द्वादशांग के बारहवें अंग के पाँच अधिकार हैं। 1. परिकर्म 2. सूत्र 3. प्रथमानुयोग, 4. पूर्वगत 5. चूलिका। चूलिका के पाँच भेद हैं - 1.जलगता 2. स्थलगता 3. मायागता 4. रूपगता 5. आकाशगता।

वास्तुविद्या का वर्णन दृष्टिवाद नामक बारहवें अंग के पांचवे अधिकार चूलिका में किया है।

थलगयाणाम तेत्तिएहि चेव पदे 20181200 भूमिगमणकारणमंत तंत तवछरणाणि वत्थुविगां भूमिसंबंध मण्णंपि सुहासुहकारणं वण्णेदि।

इनमें स्थलगता चूलिका 20989200 पदों द्वारा पृथ्वी के भीतर गमन करने के कारणभूत मंत्र, तंत्र और तपश्चरण आदि तथा वास्तुविद्या एवं भूमि संबधि शुभ अशुभ कारणों का वर्णन करती है। वास्तुविद्या प्राचीनतम विद्या है, इसकी विषयवस्तु जैनागम साहित्य में प्रचुरता से प्राप्त होती है।

भगवान आदिनाथ ने अपने पुत्रों को अनेक शास्त्रों का अध्ययन कराया था,

विश्व कर्म मतं चास्मै वास्तुविद्या मुपादिशत।
अध्याय विस्तरस्तत्र बहुभेदा अवधारितः ।।122।।

अर्थात् अनंतविजय पुत्र के लिए उन्होंने सूत्रधार की विद्या तथा मकान बनाने की विद्या का उपदेश दिया। इस विद्या के प्रतिपादक शास्त्रों में अनेक अध्यायों का विस्तार था, तथा उसके अनेक भेद थे। कल्पवृक्षों के समाप्त होने पर आजीविका हेतु भगवान आदिनाथ ने लोगों को विदेह क्षेत्र की परम्परानुसार षट्कर्म करने का उपदेश दिया था। उसमें शिल्पकर्म द्वारा मंदिर और गृह बनाने का उपदेश दिया था। जैनागम में वास्तु विज्ञान का वर्णन अनादि काल से प्राप्त है।

तिलोयपण्णत्ती 978 से 981 गाथा तक एवं प्रतिष्ठापाठ (आचार्य जयसेन प्रणीत) में 135-136 श्लोक में वास्तुविद्या निर्देशित अनेक विधाओं का वर्णन प्राप्त होता हैं। इस प्रकार जैनागम के अनेक ग्रन्थों में वास्तुविद्या का वर्णन सरलता से प्राप्त हो रहा है।

वास्तु का स्वरूप- प्रकृति और मानव में सही संबंध स्थापित स्थापत्य कला का नाम वास्तु है। वास्तु विद्या के सिद्धान्त प्राकृतिक परिस्थितियों एवं भौगोलिक स्थिति के अनुसार निर्मित हुए हैं।

वास्तुविद्या वह विद्या है जो मनुष्य व उसके चारों व्याप्त वातावरण का अध्ययन कर उसे मनुष्य की शक्ति एवं मानसिक स्थिति के अनुकूल बनाने में सहायता करती है।

वास्तु का परम लक्ष्य मानव मन को शान्ति प्रदान करने वाली स्थिति का निर्णय करना है। वास्तु विद्या भूमि व भवन से जुड़ा ऐसा विज्ञान है, जिससे पर्यावरण में व्याप्त ऊर्जाओं के समुचित उपयोग द्वारा सुखद व स्वस्थ जीवन के लिए विस्तृत व्याख्या

मिलती है।

यह विद्या प्राकृतिक नियमों पर आधारित है। प्राकृतिक शक्तियों का सन्तुलन इसका आधार है। प्रकृति से सामंजस्य बनाकर रखना स्वस्थ एवं सुखी जीवन के लिए आवश्यक है। वास्तुविद्या इसी सामंजस्य को बनाये रखने के संबंध में दिशा निर्देश करता है। वास्तुविद्या में व्यक्ति की प्रकृति के अनुरूप उसके विकास में सहायक किस दिशा में कैसा और कितना निर्माण किया जाये इसका वर्णन है।

वास्तु के द्रव्य, क्षेत्र,काल, भाव ये चार प्रमुख आधार माने जा सकते हैं जो वास्तु को प्रभावित करते हैं।

❊ **द्रव्य-**भूमि क्रय करने में व्यय किये जाने वाले धन की शुभाशुभता और भूमि पर शुद्ध एवं अशुद्ध सामग्री होने से भूमि पर निर्मित भवन आदि शुभाशुभ फल देते हैं। जिसका निराकरण शल्य शुद्धि के माध्यम से किया जाता है।

❊**क्षेत्र-** भूमि के आकार प्रकार एवं नकरात्मक ऊर्जा से क्षेत्र शुद्धि का जाती है। भूमि का दिशा दोष, दिग्मूढ़ता कोने कटे या बढ़े होने के दोषों को दूर कर भूमि को शुद्ध करते हैं।

❊ **काल-** ग्रहण की गई भूमि पर शुभ मुहूर्त में कार्य करने से भवन शुभ फल देने वाला होता है।

❊ **भाव-** भवन निर्माण करते समय शिल्पी के भाव शुद्ध और सन्तुष्ट होना चाहिए जिससे कार्य सानन्द सम्पन्न होता है। शास्त्रों में शिलान्यास के समय पूर्व प्रथम शिल्पी को वस्त्र एवं धनराशि आदि के द्वारा सम्मान करने का निर्देश है।

जहाँ द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की शुद्धि का वास्तु में विशद वर्णन है वहीं जैन कर्म सिद्धान्त में भी द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव के माध्यम से कर्म के शुभाशुभ फल देने का कथन है।

कर्म बन्ध और उदय व्यवस्था-
काय वाङ्मन कर्मयोग। स आस्रवः।

मन, वचन, काय की क्रिया को योग कहते हैं। इनके निमित्त से आत्म प्रदेशों में हलन-चलन होता है, उसे योग कहते हैं। इसके माध्यम से कर्म आते हैं। यह योग शक्ति आत्मा के साथ हर समय रहती है। जिसके कारण कार्माण स्कन्ध आकर्षित होकर जीव के साथ एकमेक हो जाते हैं उसे बन्ध कहते हैं।

शुभः पुण्यस्याशुभः पापस्य।

जब मन, वचन, काय की क्रिया शुभ अशुभ रूप होती है, तब समग्र लोक में व्याप्त कार्माण वर्गणा कर्मरूप परिणमन कर जाती हैं। कार्माण वर्गणाओं में सुख-दुःख देने की सामर्थ्य नहीं है। लेकिन ज्यों ही आत्मा उसे राग-द्वेष भावों से ग्रहण करके कर्म रूप बनाती है, उसी समय उसमें ज्ञानादि को कम करने की , पदार्थों में इष्ट-अनिष्ट बुद्धि करने की, सुख-दुःख देने की, एक पर्याय में रोके रखने की, उच्च-नीच कुल में जन्म लेने की, अपनी इच्छानुसार कार्य न होने की आदि अनेक प्रकार की शक्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

जीवपरिणामहेदुं कम्मत्तं पुग्गला परिणमंति।
पुग्गलकम्मणिमित्तं तवेह जीवो वि परिणमदि।।86।।

जीव के परिणाम के हेतुभूत होने पर पुद्गल कर्मरूप परिणामित होती है। उसी

प्रकार पुद्गल कर्म के निमित्तभूत होने पर जीव भी परिणमन करता है।

रत्तो बंधदि कम्मं मुचदि जीवो विरागसंपण्णो।
ऐसो जिणोवदेसो तम्हा कम्मेसु मा रज्ज।।157।।

रागी जीव कर्मों को बाँधता है और वैराय सम्पन्न जीव कर्म को त्याग करता है। यह जिनेन्द्र देव का उपदेश है। इसीलिए कर्म में राग मत करो। बन्धे हुए कर्म का आबाधा काल समाप्त होने पर उस कर्म के निषेक क्रम क्रम से उदय में आते हैं और अपना फल देकर निर्जरा को प्राप्त होते रहते हैं। उस कर्मोदय के लिए अन्तरंग और बहिरंग दोनों कारणों की आवश्यकता होती है। अतः कर्मोदय के लिए भी बाह्य द्रव्य क्षेत्रादि की आवश्यकता होती है।

खेत्त भवकाल पोग्गलट्ठिदि विवोगोदय खयदु।।

क्षेत्र, भव, काल और पुद्गल द्रव्य का आश्रय लेकर कर्म की स्थिति का विपाक होता है। गोम्मटसार कर्मकाण्ड में कर्मों के नोकर्म में भैस के दूध दही, लहसुन आदि खाने से निद्रा का विपाकोदय हो जाता है।

इसी प्रकार सभी कार्मों के नोकर्म का कथन किया है।

श्री पूज्यपाद स्वामी ने सर्वार्थसिद्धि में विपाक विचय धर्मध्यान का कथन करते हुए लिखा है कि **कर्मणां ज्ञानावरणादीनां द्रव्यक्षेत्रकालभाव प्रत्ययफलानुभवनं प्रति प्राणिधानः विपाकविचयः।**

जैन दर्शन के अनुसार कर्मों का फल बाह्यसामग्री पर आधारित है क्योंकि कर्म द्रव्य क्षेत्र काल भाव के अनुसार ही फल प्रदान करते हैं। कर्मों का उदय व उदीरणा बिना अन्य निमित्त के नहीं होती बल्कि द्रव्य, क्षेत्र आदि का निमित्त पाकर ही कर्मों का उदय व उदीरणा होती है।

पुद्गल के परिणमन के निमित्त से भी व्यक्ति के कर्म शीघ्र उदय में आते हैं। क्षेत्रगत भिन्नता के कारण कर्मों के फल में अन्तर आता है। जैसे श्रवणकुमार के स्थान परिवर्तन करने से भावों में परिवर्तन हुआ था। काल के निमित्त से बीच में ही कर्मों का उदय उदीरणा बदल जाती है। शुभ भावों के आधार पर अशुभकर्म के फल को बदला जा सकता है।

व्यक्ति को द्रव्य, क्षेत्रादि नोकर्म के शुभ रूप निमित्त को मिलाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। वास्तु भी इन्हीं नोकर्म को मिलाने का एक निमित्त है।

वास्तु कर्मोदय में कारण -जैनागम में अनेक प्रकार से वस्तुस्वरूप का कथन किया है। चारों अनुयोगों की अपेक्षा कथन भी अनेक प्रकार, परस्पर विरोधी हो जाता है। जो कथन कर्म सिद्धान्त अर्थात करणानुयोग से सही है, वहीं अध्यात्म अर्थात् द्रव्यानुयोग की अपेक्षा विपरीत सा प्रतीत होता है। किन्तु अनेकान्तदृष्टि दोनों कथनों को सही मानती है।

उसी प्रकार कर्मसिद्धान्त एवं वास्तुशास्त्र पर लागू होता है। जहां कर्मसिद्धान्त कर्म से ही समस्त कार्य होना स्वीकारता है, वहीं अध्यात्म कर्मों का मात्र बाह्यकारण स्वीकारता हुआ उन्हें परद्रव्य मानता है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य के सुख दुःख का कारण हो सकता है कर्त्ता नहीं। आचार्य

श्री कुन्दकुन्दस्वामी ने समयसार में कहा है।

जदि पुग्गल कम्ममिणं कुव्वदितं चेव यदि आदा।
दो किरिया विदिरत्तो पसजदि सो जिणव मदं।।91।।

अर्थात्-यह आत्मा इस पुद्गल कर्म को करें और उसी को भोगे तो वह आत्मा दो क्रियाओं से अभिन्न ठहरे, ऐसा आता है जो जिनदेव के सम्मत नहीं है। कर्म पर द्रव्य है वह आत्मा के सुख दुःख का कर्ता नहीं, कारण हो सकता है। जिस प्रकार से कर्म (द्रव्यकर्म) सुख दुःख में कारण हैं।

उसी प्रकार वास्तु शास्त्रानुकूल प्रतिकूल गृह (नोकर्म) भी सुख दुःख में कारण हैं। इस प्रकार के सन्दर्भ जैनागम में अनेक जगह उपलब्ध हैं।

वास्तुशास्त्रानुकूल गृह की प्राप्ति सातावेदनीय के उदय से

वास्तुशास्त्रानुकूल-प्रतिकूल गृह सुख दुःख दोनों में कारण (निमित्त) है।

सामग्रीजनिकानैककारण-

मात्र एक कारण से कार्य नहीं होता है।

कारणतावच्छेदकावलीढ धर्मावच्छिन्नानां कार्योत्पत्तिनियामकत्वात्।
सामग्री विशेष विश्लेषिताखिलावरण मतिन्द्रियमशेषतो मुख्यं।।

अकेली मिट्टी के ढेर पड़े रहते हैं, अन्य कारणों के बिना घड़े नहीं बन पाते हैं अकेला कुलाल बैठा रहता है, घड़ा नहीं बन पाता है। उपादान, सहकारी, प्रेरक, उदासीन, कारण पर्याय शक्तियां इकट्ठे होने से कार्य बन ही जायेगा। एक कारण का कोरा अन्यय व्यभिचार उठाते रहने से क्या होता है।

आत्मा में उपादान कारण अनादि से विद्यमान है, फिर भी मोक्ष नहीं होता है। तब आपको भी मानना पड़ेगा कि शक्ति के लिए निमित्तभूत माने गये बज्रवृषभनाराचसंहनन, कर्मभूमि, जिनदीक्षा घोरतपस्यायुक्त ध्यान, क्षपकश्रेणी ये सामग्री भी आवश्यक है, अतः आजकल यहां से मोक्ष नहीं हो पाता है।

सामग्री सन्निपातिनः स्वाभावातिशयोपपत्तेः सुवर्णस्य के यूरादि संस्थातं।

सभी कारणों के इकट्ठे हो जाने पर उन सब कारणों में एक दूसरे से अतिशय उपज जाते हैं।

यद्वस्तु बाह्यं गुण दोष निर्मितमभ्यंन्तरमूलहेतोः। (समन्तभद्र)

जो वस्तु बहिरंग में गुण दोषों को उपजाने का निमित्त बन रही है, वह आभ्यन्तर कारण की शक्तियों को पैदा करने का भी निमित्त है। पहिले में शक्तियां बना ली जाती हैं जब कारणों से कार्य उपजाया जाता है। (कौन्देयकौमुदी) कर्मोदय भी द्रव्य क्षेत्र आदि के निमित्त से होता है -

कालभवखेत्तपेही उदओ।

क्षेत्र, काल, भव और पुद्गल का निमित्त पाकर कर्मों का उदय होता है। क्षेत्र,काल, भव आदि नौकर्मों का सद्भाव कर्मोदय को प्रभावित करता है। तब वास्तु शास्त्रानुकूल प्रतिकूल गृह निवासी को भी प्रभावित करते हैं। कर्मोदय में यह गृह भी निमित्त बनते हैं। हम हमेशा अशुभ निमित्त हटाते हैं और शुभ निमित्तों को जुटाते हैं। अशुभ वास्तु कर्मोदय में अशुभ निमित्त बनते हैं। राजवार्तिक अध्याय8 सूत्र 3 में श्री भट्टाकलंकदेव ने कहा है।

कारणानुरूपं हि कार्यमिति।

अर्थात् कारण के अनुरूप ही कार्य होता है। अतःहम निरन्तर शुभ निमित्तों को जोड़ते हैं । उदासीन, प्रेरकनिमित्त उपादान, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सभी कारणों को कार्य उत्पत्ति में कारण मानना चाहिए।

दवाखानों में, घर में, बाजार में, रेल में, मोटर में, स्वाध्यायशालाओं में, कसाईखानों में, भोजनशालाओं में, प्याऊओं में, स्वर्गों में, नरकों में तीनों लोकों में अनेक प्रकार के सफल कार्य कारण भाव निमित्तों अनुसार बन रहे हैं।

समवशरण में अशुभकर्म प्रकृतियाँ शुभरूप, नरकों में शुभप्रकृतियाँ अशुभरूप एवं स्वर्गादिक में अशुभ प्रकृति याँ शुभरूप संक्रमित होकर उदय में आती हैं अतः क्षेत्रादि का प्रभाव मन पर पड़ता है, भावों को शुद्धाशुद्ध करते हैं एवं कर्मोदय भी बाहरी परिवेश से प्रभावित होता है।

अर्थात् वास्तु-शास्त्रानुकूल गृहों का निर्माण कर उनमें रहने वालों के मन को विशुद्ध बनाने में साधक बनाया जा सकता हैं क्योंकि वस्तुभूत सामर्थ्य या परिणामों को कल्पना या मिथ्याज्ञान कह देने की टेव अच्छी नहीं।

औषधियों से रोग दूर होते हैं । मरहम से घाव अच्छे होते हैं। कर्मों के उदय बदले जा सकते हैं । कर्मों में संक्रमरण, विसंयोजन, उदीरणा, प्रदेशोदय हो जाते हैं । मध्य में ही आयु का अपवर्तन हो सकता है, पुण्य कर्म पाप बन जाता हैं, पाप भी पुण्य रूप हो सकता है। जैसे कारण मिलेंगे वैसे कार्य हो जायेगा । निमित्त-नैमित्तिक कर्मों की शक्ति अचिन्त्य है।

द्रव्यादि निमित्तवशात् कर्मणः फल प्राप्तिरुदयः ।।(सर्वार्थसिद्धि)

इस सूत्र में पूज्यपाद स्वामी ने उदय के लक्षण में यानी कर्मों के फल देने में भी द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावों को निमित्त कारण स्वीकार किया है।

अविकले कारणे कार्यस्योत्पत्तिः।

विकल कारण से कार्य नहीं होता, किन्तु सम्पूर्ण अविकल कारणों से कार्य उपजता है। क्षेत्र निमित्त से नरकों में पर पीड़ा पहुँचाने के विचार होते रहते हैं। तीर्थस्थान, मंदिर, बाजार, नाटक गृह इत्यादि में शुभ-अशुभ भाव होते रहते हैं।

अर्थात् प्रतिकूल गृहों में भी शुभभाव नहीं हो पाते, निरन्तर, कलह, विवाद, विषाद आदि के परिणाम होते हैं, जो कर्मों के संक्रमण के कारण बनते हैं । इससे गृहों का निर्माण वास्तुशास्त्रासनुकूल होना चाहिए। जो मंदिर वास्तुशास्त्रानुकूल नहीं बन पाले हैं उनमें पूजादि करने पर मन स्थिर नहीं हो पाता, पदाधिकारी कलह करते रहते हैं।

साता-असाता कर्मों के उदय का निमित्त और वास्तु

साता-असाता कर्म के उदय में गृह को कारण ही नहीं मानने वाले गोम्मट्टसार की 73वीं गाद्यांश का उद्धरण देते हुए कहते है कि साता कर्म के उदय में रूचिकर भोजन एवं असाता के उदय में अरूचिकर भोजन आदि कारण है । इसके अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों को देखा जाए तो जानकारी प्राप्त होगी कि साता-असाता वेदनीय कर्म के उदय में गृह भी निमित्त है यथा-

सद्वेद्योदयभावान् गृहधननधान्यं कलत्रपुत्रश्च।

अर्थात-सातावेदनीय कर्म के उदय से प्राप्त होने वाले घर, धन-धान्य, स्त्री-पुत्र आदि साता-असाता वेदनीय कर्म के उदय में मात्र रूचिकर भोजन ही नहीं अपितु गृह, धन-धान्य आदि अन्य कारण भी देखे जाते हैं। गृह, धन-धान्य, स्त्री, पुत्र आदि के प्रतिकूल या अप्राप्त होने पर व्यक्ति असाता का अनुभव करता है । एवं इनकी प्राप्ति या अनुकूल होने पर साता का वेदन करता है। अतः आचार्यों ने इन्हें भी साता-असाता वेदनीय कर्म के उदय में कारण स्वीकारा है।

यदि गोम्मट्टसार की 73 वीं गाथा को देखें तो उससे भी ध्वनित होता है कि साता-वेदनीय कर्म के नोकर्म, रूचिकर भोजन के अलावा और भी हैं ।क्योंकि गाथान्त में **(इट्ठाणिट्ठण्णपाणादि)** आदि शब्द और अन्य कारणों की ओर संकेत दे रहा है।

यदि हम साता-असाता के उदय में मात्र रूचिकर भोजन को ही कारण माने तो अनेक विसंगतियां आयेगी। जैसे-देवपर्याय में अनेक वर्षों बाद भोजन की इच्छा होती है , कण्ठ से अमृत झर जाता है। इसके अन्तराल में जब तक पुनः भोजन की इच्छा न हो तक साता का, या असाता कर्म का उदय माने ? जबकि देवों के साता का ही उदय रहता है।

कई बार साधु-श्रावक मासोपवास, प्रोषेधोपवास आदि में सर्वदा आहार का त्याग कर आनन्दानुभूति करते हैं। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि साता-असाता वेदनीय कर्म के उदय में भोजन -पान के अलावा अन्य वस्तुऐं भी कारण हैं । साता-असाता के कारणों में अन्य को भी इस प्रकार कहा है। जैसे मिष्ठन्न, नीम की चटनी, ग्रीष्म, शीत, पवन, मित्र, शत्रु आदि प्रिय -अप्रिय वस्तु व्यक्ति या घटना आदि का चिन्तन भी सुख दुःख में निमित्त बनता है, माना है। इसी प्रकार स्त्री, पुत्र, घर, धन-धन्य आदि सुख-दुःख के वेदन में कारण होते हैं।

सौन्दर्य-असौन्दर्य भी जीव के लिए इष्ट अनिष्ट होने से सुख दुःख में निमित्त होते हैं। अतः विचार करो सौन्दर्य-असौन्दर्य सुख-दुःख का जितना कारण है उससे ज्यादा गुण-अवगुण कारण है सुख-दुःख के । वास्तुशास्त्रानुकूलगृह, प्रतिकूलगृह की अपेक्षा अधिक सुखकारण है । यह गृह निवासी को स्थायित्व, विकास एवं वैभव प्रदान करने में कारण होता है। समस्त अकृत्रि जिनालय वास्तुशास्त्रानुकूल है , अतः शाश्वत है।

समवशरण सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र सम्मत होता है, अतः उपदेशक और श्रोता दोनों कल्याण करते हैं। सभी अनुकूलताऐं प्राप्त होती हैं। समवशरण में अशुभ कर्मोदय भी संक्रमित होकर शुभरूप उदय में आता है। अतः शुभवास्तु अनुसार निर्मित समवशरण, जिनालय, तीर्थक्षेत्र, गृह आदि कर्मों के संक्रमण में निमित्त बनकर शुभपरिणाम प्रदान करते हैं। मात्र सौन्दर्य ही कारण नहीं होता है, क्योंकि कोई वस्तु देखने से साता-असाता का अनुभव कराने में सक्षम नहीं होती है।

भोजन को मात्र देखने से पूर्णरूप से

साता नहीं होती अपितु खाने से साता का अनुभव होता है। सुन्दर घर देखने से नहीं अपितु रहने से साता-असाता का बोध करा पाएगा। ताजमहल और ताजहोटल देखने साता उत्पन्न करते हैं यह भ्रम है। सभी देखने जाते हैं, क्षणभर को हर्षित होते हैं किन्तु जब उनके भोक्ता का विचार करते हैं कि बनवाने वाला उसे पूर्ण नहीं बना पाया, गिरना बंद नहीं कर पाया, उसे अंत समय में देख भी नहीं पाया, अनेक बातें हैं। विचार करो घर देखने से नहीं अपितु निवास करने से पता चलता है कि यह साता का कारक है या असाता कारक है।

वास्तुशास्त्रानुकूल गृह और कर्मोदय-

गृह क्या कोइ भी वस्तु हमेशा समान फल नहीं दे सकती, क्योंकि सुख-दुःख में मात्र वास्तुशास्त्रानुकूल गृह ही नहीं, किन्तु और भी अनेक कारण होते हैं। उनका भी प्रभाव समय-समय पर परिवर्तित होकर प्राप्त होता है। गृह उनमें एक कारण है। इसे भी शुभ बनाने का भाव रहता है। गृह वास्तुशास्त्रानुकूल होने पर अन्य कारण भी अनुकूल होने चाहिए। एकान्त का पोषण न करें। वास्तुशास्त्रानुकूल गृह होने पर उसमें रहने वालों के अशुभ कर्मोदय में अन्य निमित्त कारण भी हो सकते हैं।

वास्तुशास्त्रानुकूल-प्रतिकूल गृह में जीवनपर्यन्त रहने वाले को एक समान ही फल प्राप्त होना चाहिए, किन्तु ऐसा होता नहीं है। वास्तुशास्त्रानुकूल गृह में व्यक्ति हमेशा सुखी नहीं रह पाता ऐसा देखा जाता है।इसमें वास्तुशास्त्र की अत्यन्त सूक्ष्मविवेचनाओं को समझना होगा-जैसे व्यक्ति अपने पूर्वजों द्वारा निमित भवन में सुख से रहता हैं उसे कालान्तर में दुःख होते हैं। तब ये देखना पड़ता है कि उसने अपने गृह में कोई परिर्वतन तो नहीं किया जैसे भाईयों में बँटवारे से मकान बँट जाना, नव निर्माण करवाना, शयन, रसोई आदि बदलना, कुआँ बन्द करना,बोरिंग करवाना, सीढ़ियों का स्थान परिवर्तित करना या घर के फर्नीचर, सोफा,दर्पण , चित्र चैत्यालय आदि का परिवर्तन करना भी शुभ गृह को अशुभ और अशुभ को शुभ बना देते हैं। इस ओर ध्यान देना भी आवश्य है।

कभी जानकारी के अभाव गृह निर्माण होता है कभी जानकारी होते हुए भी प्रतिकूलतायें देखी जाती हैं। जानकारी होना न होना महत्त्वपूर्ण नहीं, महत्त्वपूर्ण गृह को वास्तुशास्त्रनुकूल बनाना है।

वास्तु लोक कल्याणकारी विद्या-

वास्तुशास्त्र सब कुद नहीं है, किन्तु भी नहीं है, यह भी उचित नहीं है। कोई भी विद्या हो वह अपने आप में पूर्ण व महत्वपूर्ण होती है। जिस प्रकार कर्मसिद्धान्त सब कुछ नहीं है , किन्तु वह कुछ भी नहीं है ऐसा भी नहीं कहा जा सकता है।

अध्यात्मी कर्मों को सब कुछ नहीं मानता, वह आत्मस्वरूप को ही सब कुछ मानकर कर्म को नष्ट कर देने की योग्यता रखता है, किन्तु कर्मवादी अनंत शक्ति वाली आत्मा को भी भटकाने में कर्म को बलवान मानकर उसी को श्रेष्ठ मानता है। उसी प्रकार वास्तुशास्त्र सब कुछ नहीं, किन्तु कुछ भी नहीं चिंतन भी नहीं रखना पड़ेगा । तभी जैनागम के हार्द को पहचान पावेंगे। एकान्त

मानने वाला तो जैनागम बाह्य है।

वास्तुविज्ञान और भौतिक विज्ञान में बहुत अन्तर है। धर्मविज्ञान है, कर्मविज्ञान है। विज्ञान, विशेष ज्ञान को कहा जा सकता है। विज्ञान सिद्धान्त हो सकता है। इसके भी कुछ नियम हैं। जैसे सत्व और उदय का विज्ञान है, विधि है, किन्तु अनुकूलता एवं प्रतिकूलता में वह नियम भी परिवर्तित हो जाता है।

उसी प्रकार वास्तुशास्त्र का सिद्धान्त भी अनुकूल-प्रतिकूलताओं में परिवर्तनशील है। चिन्तन की गहराईयों में जाकर जैनागम के सिद्धान्तों का चिन्तन अनिवार्य है। यदि वास्तु का अस्तित्व नहीं होता है भगवान ऋषभदेव अपने पुत्रों को न पढ़ाते। धवलादि महाग्रन्थों में इसका उल्लेख न होता। यदि हमें इस विद्या का ज्ञान नहीं तो इसे नकारा नहीं जा सकता है। वास्तुविद्या लोकोपकारी विद्या है और अध्यात्म कल्याणकारी विद्या है।

साता के उदय में अत्यन्त घातक निमित्त भी अकिंचित्कर-

जैनागम के सिद्धान्त श्लाकापुरुष, पुण्यपुरुष, महापुरुष एवं सामान्यपुरुष पर समान रूप से घटित नहीं होते हैं। कुछ बिन्दु देखें -

श्लाका पुरुषों के अकाल मरण नहीं होता है। इन्हें सूतक-पातक का दोष नहीं लगता है।तद्भाव मोक्षगामी को कितने भी घातक विपरीत, अनिष्टकारी निमित्त मिले तब भी उनका घात नहीं होता हैं। नारायण प्रतिनारायण कितने भी शुभकर्म करें नियम से नरक जाते हैं। यह नियम उनके लिए है हमारे आपके लिए नहीं । हनुमान, नागकुमार, प्रद्युन, आदि अनेक उदाहरण हैं । सिद्धान्त तर्कागोचर होता है। इसमें ऊहापोह उचित ही नहीं है।

साता के उदय में निमित्त के स्वरूप में परिवर्तन-

साता के उदय में निमित्त में परिवर्तन नहीं अपितु निमित्त परिवर्तन से कर्मोदय में परिवर्तन होता है । यथा-सीता जी को सातावेदनीय के प्रबल उदय से नहीं अपितु देव के द्वारा अग्नि के स्थान पर जल उपस्थित कर देने से असाताकर्म का साताकर्म रूप संक्रमण हुआ । सीता जी के भावों की विशुद्धि से अनेक असाताकर्म साताकर्म रूप संक्रमित हो गये न कि साता के उदय से। यदि साता का उदय होता तो अग्निपरीक्षा देने रूप कार्य ही नहीं होता। असाताकर्म का उदय था जो कि निर्दोषशील एवं भाव विशुद्धि से देव के द्वारा जल हो जाने से रूप-संक्रमण हुआ था।

इसी प्रकार वारिषेण मुनिराज के वध के लिए राजाज्ञा से वधिक द्वारा चलाई गई तलवार साता का उदय नहीं अपितु असाता का उदय था, जो मुनिराज की दृढ़ता, श्रद्धान एवं भाव विशुद्धि से देव द्वारा की गई सहायता से पुष्पाहार को गये, अर्थात् असाताकर्म का उदय अनुकूल निमित्त से साता रूप संक्रमित हो गया।

मैं यह लेख भीषण गर्मी में लिख रहा था। असाता के उदय से गर्मी की वेदना हुई कूलर का अनुकूल निमित्त मिलने पर असाता कर्म साता रूप संक्रमित हो गया। इसी प्रकार वास्तुशास्त्रानुकूल गृह में भी

असाताकर्म साताकर्म रूप संक्रमित होता है। ऐसा जैनागम एवं कर्मसिद्धान्त से सिद्ध है।

अर्थात न तो कर्म अकिंचित्कर है और न ही वास्तुशास्त्रादि कारण अकिंचित्कर हैं । जैनागम सापेक्ष कथन को सम्यक् मानता है। जैनागम में निपेक्ष एकान्त कथन मिथ्या है।

वास्तुशास्त्र विरूद्ध गृह और अशुभ कर्मोदय

गोम्मट्टसार कर्मकाण्ड की 57वीं गाथा में अकाल मरण के आठ कारण बताए गए हैं । विषभक्षण, वेदनातिशय, रक्तक्षय, भय, शस्त्राघात, संक्लेशपरिणाम, उच्छवासनिरोध एवं आहरनिरोध । इन कारणों के अनेक प्रकार के भेद किये जा सकते हैं । जैसे- विषभक्षण, यह विष कौन सा होगा, किस प्रकार का होगा, विषभक्षण कारण कहा है , जबकि उसने विषभक्षण नहीं किया सर्प ने काटा है।

वेदनातिशय कई प्रकार का हो सकता है, संक्लेश किसी तरह का हो सकता है, भय के अनेक प्रकार संभव है । वास्तुशास्त्र, प्रतिकूल घर भी भय संक्लेश एवं वेदना का कारण होता है जिससे मृत्यु हो सकती है। अकालमरण के अन्तरकारणों में वास्तुशास्त्र प्रतिकूल गृह भी कारण है । वज्रजंघ और उनकी पत्नी श्रीमति का अकालमरण गृह के झरोखों के द्वार बंद होने से हुआ।

तत्रवातायनद्वारपिधानरूद्धधूमके।

अर्थात्- उस दिन सेवक लोग झरोखे के द्वार खोलना भूल गये थे जिससे वह धूम शयनागार में रूकता रहा उस धूम से वे दोनों पति-पत्नि श्वासावरोध से मृत्यु को प्राप्त हो गये। मृत्यु श्वासावरोध से हुई किन्तु मृत्यु एवं श्वासावरोध में कारण खिड़कियों का बंद होना अर्थात वास्तुशास्त्र प्रतिकूल गृह कारण बना ।इस तरह वास्तुशास्त्र प्रतिकूल गृह अकालमरण में कारण है।

वास्तुशास्त्रविरूद्ध गृह में वास पापकर्म नहीं-

अशुभ निवास से भी अशुभ होते हैं। जो पाप रूण परिणति में साधक होते हैं। कर्मों का उदय द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एवं भव के निमित्त से होता है । इसलिए कदाचित एक जीव दूसरे जीव के क्रोधादि के उदय का निमित्त बनता है । बाह्य परिग्रह के निमित्त से जीव में मूर्छा की उत्पत्ति हो जाती है।

क्षेत्र विशेष या काल विशेष भय, कषाय की उत्पत्ति का निमित्त हो जाता है । क्षेत्र विशेष भय एवं कषाय उत्पत्ति में कारण है। भय और कषाय पाप की जड़ हैं । दूषित क्षेत्रादि पाप का निमित्त बनता है, अतः वास्तुशास्त्रप्रतिकूल गृह भी भावों का समर्थक होकर पाप में संलग्न करने की योग्यता रखते हैं।

ऊर्जा के स्रोत और उनका शुभाशुभ-

जिनगमानुसार शक्ति के दो भेद माने हैं चैतन्य और पुदगल । चैतन्यशकित वीर्यान्तराय के क्षयोपशम से प्राप्त होती है और पुदगलशक्ति शरीर को पुष्ट स्वस्थ करने वाली होती हे । इसके दो भेद किये जा सकते हैं । नकरात्मकऊर्जा और सकरात्मकऊर्जा पौद्गलिक शक्ति-आहार, जलवायु और सूर्यप्रकार से प्राप्त होती है।

यदि गृह का निर्माण वास्तुशास्त्र प्रतिकूल हुआ हो । जिससे नकरात्मक ऊर्जा अधिक प्राप्त हुई और सकारात्मक ऊर्जा कम मिली तो उस घर का निवासी रोगी, चिन्ता एवं अवसाद से ग्रसित हो सकता है । यदि आहार जल वायु और सूर्यप्रकाश अनुकूल न हुई तो सुन्दर गृह भी दुःख का हेतु बन जाता है।

सूर्यप्रकाश तो सभी घरों में आता हैं किन्तु ध्यान पड़ेगा कि वह कब और कितना आना चाहिए जो स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं हो तो विकार उत्पन्न करेगा। प्रतिकूल आहार, जल वायु सूर्यप्रकार घातक भी हो सकता है। प्रातः काल की सूर्यकिरणें जितनी सकारात्मक ऊ र्जा देती है, सन्ध्या समय की सूर्यकिरणों उतनी ही नकरात्मक ऊर्जा देती हैं। वास्तुशास्त्र का निर्देश है कि गृह पूर्वमुख एवं खुला हो पश्चिम भाग बंद हो आदि यह सब वास्तुशास्त्र के अधिक सकरात्मक ऊर्जा संग्रह के निर्देश हैं।

जिन मंदिर जिन बिम्बादि की दिशा-

जहाँ केवली, अर्हन्त आदि की भक्ति विनय, बहुमान मोक्ष का हेतु है वहीं इनकी अविनय, निन्दा आदि नरकादि का कारण है। उसी प्रकार चैत्यालय में प्रतिमा जी को अनिवय पूर्वक विपरीत दिशा में स्थापित करना भी केवली का,अर्हन्त का अवर्णवाद है, दुर्गति का कारण है।

वास्तुशास्त्र इन्हीं बातों का ध्यान में रखकर, जिन प्रतिमा का बहुमान हो, ऐसा विधान कर जिन चैत्यालय का निर्माण कराता है । जिन बिम्ब की अविनय न हो यह ध्यान रखा जाता है श्रद्धा होने पर ही चैत्यालय बनवाले हैं किन्तु यदि वहाँ जिन बिम्ब की अवमानना करने पर सुभौम चक्रवती का आयु क्षय हो गया था । इसके अन्य प्रत्यक्ष प्रमाण पहले दे चुके हैं ।

वास्तुशास्त्रानुकूल गृह में कर्मोदय जनित दुःख के निवारण की शक्ति

जैन दर्शन में निश्चय और व्यवहार नय एक अनुशीलन के पृष्ठ 160 पर निमित्त परिवर्तन से कर्मोदय में परिवर्तन है यथा- चूंकि कर्मो का उदय द्रव्य क्षेत्र, काल भव और भाव के निमित्त से होता है । अतः निमित्तों में परिवर्तन कर कर्मोदय में परिवर्तन किया जा सकता है उदाहरणार्थ- लोभ उत्पन्न करने वाली सामग्री का सान्निध्य टालकर और निर्लोभ की प्रेरणा देने वाले निमित्तों का आश्रय लेकर लोभ के उदय को रोका जा सकता है । कोई हमारा अपमान करता है इसके निमित्त से क्रोध उत्पन्न हो सकता है, तो हम क्षमाभाव द्वारा अपमान बोध को निष्प्रभावी कर क्रोध के उदय को रोक सकते हैं ।

इस प्रकार क्षमादिभाव, संयम, तप, अपरिग्रह, भक्ति, स्वाध्याय आदि वे निमित्त हैं जो क्रोधादि के उदय के निमित्तों को आशक्त करे देते हैं । जिसके परिणामस्वरूप क्रोधादिक का उदय नहीं हो पाता है अर्थात् तीव्रोदय असंभव हो जाता है। इससे संक्लेश या कालुष्य की उत्पत्ति नहीं होती है । और विशुद्धता से कोई कोई अशुभकर्म शुभकर्म में बदल जाते हैं । किन्हीं अशुभ कर्मो की स्थिति, अनुभाग का ह्रास हो जाता है तथा

शुभकर्मो की स्थिति घट जाती है और अनुभाग बढ़ जाता है। इस तरह से विशुद्धता का निरन्तर विकास होता रहता है।

इस प्रकार का चिन्तन कर विचार करना चाहिए कि वास्तुशास्त्रानुकूल शुभगृह में निवास करने वाले के अशुभर्म शुभरूप हो जाते हैं, एवं गृह को शुभरूप बनाने से अशुभकर्मों में भी परिवर्तन हो जाएगा। जो उपरोक्त कथन से सिद्ध हो रहा है।

यदि कर्म ही सब कुछ हो गए तो मोक्ष कैसे प्राप्त किया जा सकता है, व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से कर्मो की स्थिति, अनुभागादि परिवर्तित कर सकता है , तभी तो वह पुरुषार्थी कहलाएगा, नहीं तो कर्मोदय होता रहेगा, आगामी बंध होता रहेगा और संसारभ्रमण की क्रिया निरन्तर चलती रहेगी, किन्तु ऐसा नहीं है। व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से कर्मोदय एवं कर्मबंध पर नियंत्रण कर सकता है। जिस प्रकार निमित्त परिवर्तित कर कर्मोदय में परिवर्तन किया जा सकता है, उसी प्रकार वास्तुशास्त्रानुकूलगृह निर्माण कर अशुभकर्मोदय में परिवर्तन भी किया जा सकता है।

किसी भी विद्या को ही, सब कुछ मान लेना एवं अन्य विद्याओं को नकारना जैनागम को स्वीकार नहीं है। जैनसिद्धान्त अनेकान्तात्मक है। कर्मसिद्धान्त ही यदि सब कुछ हो तो पुरुषार्थ का अभाव हो जायेगा। लोग कर्माधीन होकर निष्क्रिय होकर बैठ जायेंगे। योगीजनों ने कर्मोदय की दिशा अपने पुरुषार्थ से ही मोड़ी है, उन्होंने कर्मो को महत्व नहीं दिया अपने आत्मचिंतन से कर्मो का नष्ट कर दिया, वे कर्मो को सब कुछ मान लेते तो कर्म क्षय नहीं कर पाते। सम्यक्दर्शन प्राप्त करने के लिए जीव अपने कर्मों की स्थिति अन्तः कोड़ाकोड़ी करता है , तब सम्यक्त्व प्राप्त कर पाता है।

कर्मोदय के निमित्त में परिवर्तन कर कर्मोदय को परिवर्तित किया जा सकता है। भावों की विशुद्धि से कर्मो की स्थिति अनुभाग बदले जाते हैं। शुभाशुभ निमित्त में कर्म भी शुभाशुभफल देते हैं। यदि ऐसा न होता तो हम सब शुभ निमित्त का संयोग न मिलाते हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाते। किन्तु कई बार शुभ निमित्त मिलाने पर भी सुख नहीं होता है, इसमें जरूरी है सभी निमित्त शुभ हो हम एक निमित्त तो शुभ मिलाते हैं और अन्य निमित्त अशुभ ही रहते हैं। सुख न होने पर हम शुभ निमित्त को भी दोषी मान लेते हैं। कार्य एक कारण से नहीं अपितु अनेक कारणों के मिलने से होता है।

आचार्यों ने श्रावकों को देवपूजा, दानादि एवं मुनियों को ध्यान अध्ययनादि आवश्यक देवदर्शन, तीर्थवंदनादि करने के निर्देश दिये हैं। इन सभी शुभ निमित्तों के मिलने से परिणाम शुभ होते हैं। बंध शुभ रूप होता है।

अशुभकर्मो का उदय भी परिवर्तित होता रहता है। उसी प्रकार शुभ गृह का निर्माण भी शुभ भावों का जनक है। बाह्य वातावरण मन को प्रभावित करता है और कर्मोदय एवं कर्मबंध को प्रभावित करता है। शुभ निमित्तों से शुभ कार्य होते हैं, यह आगम और प्रत्यक्ष अनुभव में भी देखा जा सकता है।

जैन दर्शन में पर्याप्ति और प्राण

❊ डॉ. आलोक कुमार जैन (नई दिल्ली) ❊

इस संसार में प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही फल को भोगता है। प्रत्येक जीव की अपनी पृथक सत्ता है। पूर्व जन्म के उपार्जित कर्मों के अनुसार ही उसको वैभवादि की प्राप्ति होती है। फिर भी अलग-अलग अपेक्षाओं से जीवों में भेद पाए जाते हैं। जिस प्रकार गृह, घट, वस्त्रादिक अचेतन द्रव्य पूर्ण और अपूर्ण दोनों प्रकार के होते हैं, उसी प्रकार जीव भी पूर्ण और अपूर्ण दोनों प्रकार के होते हैं। पूर्ण जीवों को पर्याप्त और अपूर्ण जीवों अपर्याप्त जानना चाहिए। पर्याप्ति का स्वरूप बताते हुए आचार्य वीरसेन स्वामी कहते हैं कि **पर्याप्तीनामर्धनिष्पन्नावस्था अपर्याप्तिः। जीवन हेतुत्वं तत्स्थमनपेक्ष्य शक्तिनिष्पत्तिमात्रं पर्याप्तिरुच्यते। अर्थात् पर्याप्तियों की अपूर्णता को अपर्याप्ति कहते हैं।** इन्द्रियादि में विद्यमान जीवन के कारणपने की अपेक्षा न करके इन्द्रियादि रूप शक्ति की पूर्णता मात्र को पर्याप्ति कहते हैं। आचार्य कार्तिकेय स्वामी कहते हैं कि आहार, शरीर, इन्द्रिय आदि के व्यापारों में अर्थात् प्रवृत्तियों में परिणमन करने की जो शक्तियां है, उन शक्तियों के कारण जो पुदगल स्कन्ध हैं उन पुद्गल स्कन्धों की निष्पत्ति को पर्याप्ति कहते हैं। **परि-समन्तात आप्ति-पर्याप्तिः शक्तिनिष्पत्तिरित्यर्थः ।** अर्थात् चारों तरफ से प्राप्ति को पर्याप्ति कहते हैं। आचार्य पूज्यपाद स्वामी पर्याप्त और अपर्याप्त नाम का कर्म का लक्षण बताते हुए लिखते हैं कि- जिसके उदय से आहार आदि पर्याप्तियों की रचना होती है वह पर्याप्ति नाम कर्म है। जो छह प्रकार की पर्याप्तियों के अभाव का हेतु है वह अपर्याप्ति नाम कर्म हैं।

पर्याप्तियों के भेद : पर्याप्तियों के भेद बताते हुए आचार्य वट्टकेर स्वामी कहते हैं कि-

आहारे य सरीरे तह इंदिरय आणपाण भासाए।
होंति मणो वि य कमसो पज्जत्तीओ जिणमादा।।

अर्थात् आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोछ्वास, भाषा और मन ऐसे छह पयाप्ति कही गई हैं। इन्हीं भेदों को सभी आचार्यों ने भी स्वीकार किया है। इनके भेदों के क्रम में भी कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।

आहार पर्याप्ति-शरीर नाम कर्म के उदयसे जो परस्पर अनन्त परमाणुओं के सम्बन्ध से उत्पन्न हुए हैं, और जो आत्मा से व्याप्त आकाश क्षेत्र में स्थित हैं, ऐसे पुद्गल विपाकी आहारक वर्गणा सम्बन्धी पुद्गल स्कन्ध, कर्म स्कन्ध के सम्बन्ध से कथञ्चित् मूर्तपने को प्राप्त हुए हैं, आत्मा के साथ समवाय रूप से सम्बन्ध को प्राप्त होते हैं, उन खल भाग और रस भाग के भेद से परिणमन

करने की शक्ति से बने हुए आगत पुद्गल स्कन्धों की प्राप्ति को आहार पर्याप्ति कहते हैं।

शरीर पर्याप्ति- तिल की खली के समान उस खल भाग को हड्डी आदि कठिन अवयन रूप से और तिल तेल के समान रस भाग को रस, रूधिर, वसा, वीर्य आदि द्रव अवयन रूप से परिणमन करने वाले औदारिकादि तीन शरीरों की शक्ति से युक्त पुद्गल स्कन्धों की प्राप्ति को शरीर पर्याप्ति कहते हैं।

इन्द्रिय पर्याप्ति- योग्य देश में स्थित रूपादि से युक्त पदार्थों को ग्रहण करने रूप शक्ति की उत्पत्ति के निमित्तभूत पुद्गल प्रचय की प्राप्ति को इन्द्रिय पर्याप्ति कहते हैं।

आनपान पर्याप्ति- उच्छ्वास और निःश्वास रूप शक्ति की पूर्णता को निमित्तभूत पुद्गल प्रचय की प्राप्ति को आनपान पर्याप्ति कहते हैं।

भाषा पर्याप्ति- भाषा वर्गणा के स्कन्धों के निमित्त से चार प्रकार की भाषा रूप से परिणमन करने की शक्ति के निमित्तभूत नोकर्मपुद्गलप्रचय की प्राप्ति को भाषा पर्याप्ति कहते हैं ।

मनः पर्याप्ति- अनुभूत अर्थ के स्मरण रूप शक्ति के निमित्तभूत मनोवर्गणा के स्कन्धों से निष्पन्न पुद्गल प्रचय को मनः पर्याप्ति कहते हैं । अथवा द्रव्य मन के आलम्बन से अनुभूत अर्थ के स्मरण रूप शक्ति की उत्पत्ति को मनः पर्याप्ति कहते हैं।

जो भी इनको पूर्ण कर लेता है वह पर्याप्तक जीव कहलाता है, परन्तु तो पर्याप्तियों को पूर्ण नहीं कर पाता है वह अपर्याप्तक जीव कहलाता है।

ऐसे अपर्याप्तक जीव दो प्रकार के होते हैं- निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्धपर्याप्तक। उनमें से निर्वृत्यपर्याप्तक का स्वरूप बताते हुए आचार्य नेमिचन्द्राचार्य लिखते हैं कि-

पज्जत्तस्सय उदये णियणिय पज्जत्ति णिट्ठिदा होदि।

जाव सरीरमपुण्णं णिव्वत्ति अपुण्णगो हवदि।।

अर्थात् पर्याप्ति नामकर्म के उदय से एकेन्द्रियादि जीव अपने-अपने योग्य पर्याप्तियों की सम्पूर्णता की शक्ति से युक्त होते हैं । जब तक शरीर पर्याप्ति पूर्ण नहीं होती, उतने काल तक अर्थात् एक समय कम शरीर पर्याप्ति सम्बन्धी अन्तर्मुहूर्त पर्यन्त निर्वृत्ति अपर्याप्त कहते हैं । इसके विपरीत जब शरीर पर्याप्ति पूर्ण हो जाती है तब वह निर्वृत्ति पर्याप्त कहलाता है।

इसमें कार्तिकेय स्वामी का मत कुछ भिन्न प्रतीत होता है वे कहते हैं कि -

पज्जत्तिं गिण्हंतो मणु-पज्जत्तिं ण जाव समणोदि।

ता णिव्वत्ति-अपुण्ण मण-पुण्णे भण्णदे पुण्णो।।

अर्थात् जीव पर्याप्ति को ग्रहण करते हुए जब तक मनः पर्याप्ति को समाप्त नहीं कर लेता है तब तक वह निर्वृत्यपर्याप्त कहा जाता है और जब मनः पर्याप्ति को पूर्ण कर लेता है तब वह निर्वृत्ति पर्याप्त कहा जाता है।

इसकी विशेषता बताते हुए

आचार्य वीरसेन स्वामी धवला पुस्तक 14 में लिखते हैं कि जघन्य बायु बन्ध की जघन्य पर्याप्त निर्वृत्ति संज्ञा है। भव के प्रथम समय से लेकर जघन्य आयु बन्ध के अन्तिम समय तक यह जघन्य निर्वृत्ति होती है। यहां जघन्य बन्ध ग्रहण करना चाहिए जघन्य सत्त्व नहीं , क्योंकि अन्यथा जीवनीय स्थान विशेष अधिक नहीं बनते। यहां कोई प्रश्न करता है कि निर्वृत्त्यिपर्याप्तक को पर्याप्त कैसे कहते हो ? तो इसका समाधान करते हुए आचार्य वीरसेन स्वामी कहते हैं कि नियम से शरीर को उत्पन्न करने वाले जीवों के होने वाले कार्य में यह कार्य हो गया, इस प्रकार उपचार कर लेने से पर्याप्त संज्ञा कर लेने में कोई विरोध नहीं आता है। अथवा पर्याप्त नामकर्म के उदय से युक्त होने के कारण पर्याप्त संज्ञा दी गई है।

इसी तरह लब्ध्यपर्याप्तक का लक्षण बताते हुए आचार्य नेमिचन्द्राचार्य लिखते हैं कि

उदये दु अपुण्णस्स य सगसग पज्जत्तियं ण णिट्टवदि।

अंतोमुहुत्तमरणं लद्धि अपज्जत्तगो सादु।।

अर्थात् अपर्याप्त नामकर्म के उदय से एकेन्द्रियादि जो जीव अपने-अपने योग्य पर्याप्तियों को पूर्ण न करके उच्छ्वास के अठारहवें भाग प्रमाण अन्तर्मुहूर्त में ही मरण को प्राप्त हो जाता है वह जीव लब्ध्यपर्याप्तक कहलाता है।

इसी सम्बन्ध में कोई प्रश्न करता है कि एकेन्द्रिय जीव अपने योग्य पर्याप्तियों में से किसी एक पर्याप्ति से पूर्णता को प्राप्त हुआ पर्याप्तक कहलाता है या सम्पूर्ण पर्याप्तियों से पूर्णता को प्राप्त हुआ पर्याप्तक कहलाता है ? तो आचार्य वीरसेन स्वामी समाधान करते हुए धवला पुस्तक एक में कहते हैं कि सभी शरीर पर्याप्ति के निष्पन्न होने पर पर्याप्तक कहे जातेहैं। फिर कोई प्रश्न करता है कि विग्रह गति में जीव पर्याप्त होता है अथवा अपर्याप्त ? तो आचार्य वीरसेन स्वामी कहते हैं कि कार्मण शरीर में स्थित जीवों के अपर्याप्तकों के साथ सामर्थ्याभाव, उपपादयोगस्थान, एकान्तवृद्धि योगस्थान, और गति तथा आयु सम्बन्धी प्रथम, द्वितीय और तृतीय समय में होने वाली अवस्था के द्वारा जितनी समीपता पाई जाती है, उतनी शेष प्राणियों के नहीं पायी जाती है। अतः सम्पूर्ण प्राणियों की विग्रह गति में अपर्याप्त अवस्था ही पाई जाती है।

प्राण- जीव में जीवितव्य के लक्षणों को प्राण कहते हैं, वह दो प्रकार का है- निश्चय और व्यवहार । जीव की चेतनत्व शक्ति उसका निश्चय प्राण है और पाँच इन्द्रिय,मन, वचन, काय, आयु और श्वासोच्छवास ये दस व्यवहार प्राण हैं। प्राण का निरुक्ति परक लक्षण बताते हुए आचार्य लिखते हैं कि-

बाहिरपाणेहिं जहा तहेव अब्भंतरेहिं पाणेहिं।

जीवंति जेहिं जीवा पाणा ते होंति बोहव्वा।।

अर्थात् जिस प्रकार बाह्य प्राण के द्वारा जीव जीते हैं उसी प्रकार जिन अभ्यन्तर प्राणों द्वारा जीव जीते हैं वे प्राण कहलाते हैं। निश्चय अथवा भाव प्राण एवं व्यवहार अथवा द्रव्य प्राण के स्वरूप को बताते हुए आचार्य जयसेन स्वामी लिखते हैं कि **इन्द्रियबलायुरुच्छ वासलक्षणा हि प्राणाः । तेषु चित्सामान्यान्वयिनो भावप्राणाः ।** अर्थात् प्राण इन्द्रिय, बल, आयु तथा उच्छवास रूप हैं। उनमें (प्राणों में) चित्सामान्य रूप अन्वय वाले भाव प्राण हैं। इसी लक्षण के भावों में और भी अधिक वृद्धि करते हुए आचार्य मल्लिषेण सूरि कहते हैं । कि **सम्यग्ज्ञानोदयों हि भावप्राणाः प्रावचनिकैर्गीयन्ते ।** अर्थात् पूर्वाचार्यों ने सम्यग्दर्शन, ज्ञान व चरित्र को भाव प्राण कहा है। इसी प्रकार द्रव्य प्राण का स्वरूप बताते हुए आचार्य लिखते हैं कि पौद्गलिकद्रव्येन्द्रिदिव्यापाररूपाःद्रव्यप्राणाः। अर्थात पुद्गल द्रव्य से निपजी जो द्रव्य इन्द्रियादिक उनके प्रवर्तन रूप द्रव्य प्राण हैं।

प्राणों के भेद-प्राणों के भेदों का वर्णन करते हुए आचार्य बटटकेर स्वामी अपने ग्रन्थ मूलाचार में प्राणों के दस भेदों को बताते हुए कहते हैं कि-

पंचय इंदियपाणा मणवचकाया दु तिण्णि बलपाणा।

आणप्पणप्पाणा आउगपाणेण होंति दस पाणा।।191।।

अर्थात् पांच इन्द्रिय प्राण, मन, वचन, काय बल रूप तीन बल बल प्राण, श्वासोच्छ्वास प्राण और आयु प्राण इस तरह दस प्राण हैं । इसी प्रकार आचार्य देवसेन स्वामी लिखते हैं कि-

पाणचउक्कपउत्तो जीवस्सइ जो हु जीविओ पुव्वं।

जीवेइ वट्टमाणं जीवत्तणगुण समावण्णो।।

अर्थात् इन्द्रिय, बल, आयु और श्वासोच्छवास ये चार प्राण कहलाते हैं, ये चारों प्राण बाह्यप्राण हैं और इस संसारी जीव के चारों प्राण रहते हैं। जो जीव पहले जीवित था, अब जीवित है और आगे जीवित रहेगा वह जीव कहलाता है, इस प्रकार जो ऊपर लिखे चारों प्राणों से जीवित रहता है वह जीवत्वगुण सहित जीव कहलाता है। इसमें बाह्यप्राण के जो चार भेद किये गये हैं उनके भी प्रभेद करने पर प्राण के दस भेद हो जाते हैं । उनमें इन्द्रियाँ पाँच (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण) बल तीन (मनोबल, वचनबल, कायबल) आयु और श्वासोच्छ्वास ये कुल दस प्रकार के प्राण हो जाते हैं ।

इन दस प्राणों में से इन्द्रिय और इन्द्रिय प्राण में अन्तर बताते हुए आचार्य वीरसेन स्वामी धवला पुस्तक दो में लिखते हैं कि इन पांचों इन्द्रियों (इन्द्रिय प्राणों) का एकेन्द्रिय जाति आदि पांच जातियों में

अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मों के क्षयोपशम के निमित्त से उत्पन्न हुई इन्द्रियों की एकेन्द्रिय जाति आदि जातियों के साथ समानता नहीं पायी जाती है। इसी प्रकार आनपान व मन, वचन और काय को प्राणपना किस कारण से है, इस प्रश्न का समाधान करते हुए आचार्य वीरसेन स्वामी धवला पुस्तक एक में और भी कहते हैं कि उच्छवास, मनोबल और बल कि बिना अपर्याप्त अवस्था के पश्चात् पर्याप्त अवस्था में जीवन नहीं पाया जाता है। इसलिए उन्हें प्राण मानने में कोई विरोध नहीं है। समस्त जीव अपने-अपने अनुकूल प्राण से जीवित रहते हैं। जैसे एकेन्द्रिय जीव के चार प्राण (स्पर्शन इन्द्रिय, कायबल, आयु और श्वासोच्छवास) ही हो सकते हैं । ऐसे ही सभी जीवों मे निम्न प्रकार से जान लेना चाहिये -

जीव प्राण

द्वीन्द्रिय- स्पर्शन, रसना इन्द्रिय कायबल, वचनबल, आयु, श्वासोच्छ्वास=6

त्रीन्द्रिय- स्पर्शन, रसना, घ्राण, काय, वचनबल, आयु, श्वासोच्छ्वास=7

चतुरिन्द्रिय-स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, काय, वचनबल, आयु, श्वासोच्छ्वास=8

असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय- पाँचो इन्द्रियाँ, काय, वचनबल, आयु, श्वासोच्छ्वास =9

संज्ञी पञ्चेन्द्रिय- पाँचो इन्दियाँ, तीनों बल, आयु, श्वासोच्छ्वास =10

इसी सम्बन्ध में और भी विशेषता बताते हुए आचार्य पंचसंग्रह में कहते हैं कि -

पंचक्ख-दुए पाणा मण वचि उस्सास ऊणिया सव्वे।

कण्णक्खिगंधरसणारहिया सेसेसु ते अण्णेसु।।

अर्थात् अपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय द्विक में मन-वचन बल और श्वासोच्छ्वास इन तीन से कम शेष सात प्राण प्राप्त होते हैं। अपर्याप्त चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय तथा एकेन्द्रिय के क्रम से कर्णेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और रसना इन्द्रिय कम करने पर छह, पांच, चार और तीन प्राण होते हैं। और भी आचार्य कहते हैं कि सयोग केवली के चार प्रण होते हैं - वचन श्वसोच्छ्वास, आयु और काय। उपचार से तो सात प्राण कहे जाते हैं। अयोग केवली के केवल एक आयु प्राण ही होता है। समुद्घात अवस्था में केवली भगवान के तीन, दो व एक प्राण होते हैं - श्वासोच्छ्वास, आयु और काय ये तीन, श्वासोच्छ्वास कम करने पर दो तथा काय बल कम करने पर केल एक आयु प्राण होता है । कई आचार्य द्रव्येन्द्रियों की पूर्णता की अपेक्षा केवली के दस प्राण कहते हैं, परन्तु उनका ऐसा कहना घटित नहीं होता है, क्योंकि सयोगी जिनके भावेन्द्रिय नहीं पायी जाती हैं। यदि प्राणों में द्रव्येन्द्रियों

का ही ग्रहण किया जावे तो संज्ञी जीवों के अपर्याप्त काल में सात प्राणों के स्थान पर कुल दो ही प्राण कहे जाएंगे, क्योंकि उनके द्रव्येन्द्रियों का अभाव है।

इसी सन्दर्भ में कोई प्रश्न करता है कि जीव के नवीन भव को धारण करने के समय ही भावेन्द्रियों की तरह भाव मन का भी सत्त्व पाया जाता है। इसलिए जिस प्रकार अपर्याप्त काल में भावेन्द्रियों का सद्भाव कहा जाता है। उसी प्रकार वहां पर भावमन का सद्भाव क्यों नहीं कहा ? तो इसका समाधान करते हुए आचार्य वीरसेन स्वामी कहते हैं कि ऐसा नहीं है, क्योंकि बाह्य इन्द्रियों के द्वारा नहीं ग्रहण करने योग्य वस्तुभूत मन का अपर्याप्ति रूप अवस्था में अस्तित्व स्वीकार लेने पर जिसका निरूपण विद्यमान है ऐसे द्रव्यमन के असत्त्व का प्रसंग आ जाएगा। तो फिर कोई प्रतिप्रश्न करता है कि पर्याप्ति के निरूपण से ही द्रव्यमन का अस्तित्व सिद्ध हो जाएगा । तो इसका समाधान करते हुए आचार्य लिखते हैं कि ऐसा नहीं है, क्योंकि बाह्यर्थ की स्मरण शक्ति की पूर्णता में ही पर्याप्ति इस प्रकार का व्यवहार मान लेने से द्रव्यमन के अभाव में भी मनः पर्याप्ति का निरूपण बन जाता है। बाह्य पदार्थों की स्मरणरूप शक्ति के पहले द्रव्य मन का सद्भाव बन जाएगा ऐसा कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि द्रव्य मन के योग्य द्रव्य की उत्पत्ति के पहले उसका सत्त्व मान लेने में विरोध आता है। अतः अपर्याप्ति रूप अवस्था में भावमन के अस्तित्व का निरूपण नहीं करना द्रव्य मन के अस्तित्व का ज्ञापक है, ऐसा समझना चाहिए।

इन सभी प्राणों के सन्दर्भ में आचार्य कहते हैं कि संसारी जीव द्रव्य प्राणों की अपेक्षा से और सिद्ध जीव ज्ञानादि भाव प्राणों की अपेक्षा से जीव कहे जाते हैं।

पर्याप्ति और प्राण में अन्तर - कोई प्रश्न करता है कि पर्याप्ति और प्राण में क्या अन्तर है ? तो इसका समाधान करते हुए आचार्य वीरसेन स्वामी लिखते हैं कि इन दोनों हिमवन और विन्ध्याचल पर्वत के समान अन्तर है । आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन रूप शक्तियों की पूर्णता के कारण को पर्याप्ति कहते हैं और जिनके द्वारा आत्मा जीवन संज्ञा को प्राप्त होता है उन्हें प्राण कहते हैं, यही इन दोनों में अन्तर होता है। अर्थात् कार्य कारण के भेद से दोनों में अन्तर है । पर्याप्तियों मे आयु का सद्भाव नहीं होने से और मन, वचन बल तथा उच्छ्वास इन प्राणों के अपर्याप्त अवस्था में नहीं पाए जाने से भी पर्याप्ति और प्राणों में भेद समझना चाहिए।

पर्याप्ति और प्राण के विषय में जानने का प्रयोजन ये है कि शुद्ध चैतन्यादि जीव इन प्राण और पर्याप्तियों से रहित होते हैं और वे ही वास्तव में उपादेय हैं। अतः उन्हीं का निरत्नर चिन्तर करते रहना चाहिए । अर्थात् अभिप्राय यह है कि पर्याप्ति और प्राणों से भिन्न अपना शुद्धात्मा ही उपादेय है।

डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति

सुरेश जैन

जैन आकृति भगवान् पार्श्वनाथ तथा खुजराहो जैन मन्दिर

सिद्धों के सैन्य में दिवाकर के समान आचार्य कुमुदचन्द्र स्वामी कहते हैं कि **नामाऽपि पाति भवतो भवतो जागन्ति** पार्श्व प्रभु का नाम ही हमें पवित्र करने में समर्थ है, उनके स्तवन का तो क्या कथन करू ?

भगवान पार्श्व के चिन्ह रूप में सर्प का संकेत है। प्रमुख तीर्थंकर पार्श्व प्रभु विषय-वासना का हरण करने में सर्वाधिक समर्थ हैं।ज्यों ज्यों पार्श्व प्रभु के नाम की नागदमनी विष का हरण करती है, त्यों त्यों विषयों का रस कड़वा लगता है।

आचार्य प्रवर भद्रबाहु स्वामी कहते हैं-

विसहर-विष-निन्नासं मंगल कल्याण आवास।

विषयरूपी सर्प का विष दूर कर के मंगल और कल्याण के धाम में पहुँचा देने वाले पार्श्व प्रभु के सुमन का परिमल कुछ खास विशेषता रखता है । चौबीस तीर्थंकर रूपी पुष्पोद्यान का प्रत्येक पुष्प ही सौरभ फैलाता है लेकिन इस में भी पार्श्व प्रभु की सुगंध विशेष रूपेण मन को मोहती है। महावीर को छोड़ इन का शासन काल सब से कम और प्रतिष्ठा सबसे ज्यादा। काल केवल 250 वर्ष किन्तु कीर्ति कौमुदी का प्रकाश अत्यधिक। सम्मेद शिखर में बीस तीर्थंकरो का निर्वाण कल्याणक हुआ पर प्रतिष्ठा है। पारसनाथ हिल की। इतना ही नहीं स्टेशन का नाम ही पारसनाथ है । भगवान पार्श्व नाथ भारतीय संस्कृति के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र रहे हैं। उन्होंने वैदिक परम्परा को भौतिकता से अध्यात्मिकता की ओर मोड़ा है। प्रभु पार्श्व के तीन कल्याणक गर्भ, जन्म और दीक्षा कल्याणक का श्रेय पुण्य भूमि वाराणसी को है।

जैन सूत्रों में वाराणसी के इतिहास का विचित्र विवरण मिलता है कि प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने वाराणसी की स्थापना की थी। तीर्थ क्षेत्र के रूप में इसकी प्रसिद्धि सातवें तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ के काल में हुई। इसके पश्चात् महाराज अश्वसेन की रानी वामादेवी की कुक्षि से पौष कृष्णा ग्यारस के दिन इसी पुण्य भूमि पर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म हुआ।

जैन मन्दिर खुजराहो

खुजराहो अपनी अनुपम मन्दिर निर्माण शैली तथा उत्कृष्ट शिल्प के लिए विश्व प्रसिद्ध होने के साथ-साथ आध्यात्मिक सांस्कृतिक एवं ललित कला का केन्द्र भी है। एक हजार वर्ष पूर्व चंदेल राजाओं के राज में बुंदेलखंड के बहुत से नगर जिनमें खुजराहो भी था बहुत बड़ी संख्या में सम्पन्न जैन परिवारों के रहने का स्थान था। आम तौर पर जैन परिवार खुजराहों के पूर्व

में रहते थे। वही पर इन परिवारों ने बहुत बड़े-बड़े जैन मन्दिर बनवायें। बहुत सी जैन पाँडूलिपियाँ चंदेल राजाओ के समय की लिखी मन्दिरों की दिवारो पर देखी जा सकती है। इस समय घंटाई मन्दिर के अतिरिक्त शेष सभी मन्दिर चारों और सुरक्षा की दृष्टि से एक परकोटे द्वारा एक अहाते में 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में बंद कर दिये गये थे, जिसमें वर्तमान में 22 शिखर बंद तथा 11 शिखर सहित मन्दिर व धर्मशालाएँ है। कभी यहाँ पर 85 मन्दिर थे जो कालान्तर में नष्ट होकर अब कुछ ही शेष रहकर अपनी अदभुत कला का व्याख्यान कर रहे हैं। इनमें ऐतिहासिक एवं कलात्मक दृष्टि से आदिनाथ, पार्श्वनाथ, शान्तिनाथ व घंटाई मन्दिर प्रमुख है। इन जैन मन्दिरो में कला की बड़ी सुन्दर मूर्तिया स्थापित हैं, जिनमें मुख्य तौर पर लक्ष्मी नारायण बलराम-रेवती, इन्द्र, अग्नि, वामा, निमती, वरूण, वायु, कुबेर, अम्बिका, कामदेव, रेती, राम-सीता तथा हनुमान है। चंदेल राजाओं के युग में बनने के कारण इन मन्दिरों में सुर-सुन्दरी अलग-अलग मुद्राओं में तथा गंधर्व मिथुनों की भी सुन्दर व कला पूर्ण मूर्तियाँ बनी हुई है। कुछ मुर्तियाँ काम क्रीड़ा की मुद्राओं में कला का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

पार्श्वनाथ जैन मन्दिर-खुजराहो

एक शिला लेख के अनुसार पार्श्वनाथ जैन मन्दिर ई. सन् 954 में श्री पहिल जी द्वारा बनवाने का परिचय है, उन्होंने इसे बनवाने के लिए अपना एक बहुत बड़ा बाग दान में दिया था, जिस कारण यह सब से बड़ा जैन मन्दिर है। उन्होंने आने वाली पुश्तों से इस मन्दिर की रक्षा करने की विनती की थी। इस मन्दिर के अन्दर जाने के लिए सात दरवाजे पार करने पड़ते है। दरवाजों पर बड़ा महीन काम किया गया है। जो कि उस समय की कारीगरी की प्रमुख मिसाल है। प्रमुख मन्दिर के बाहर बहुत बड़ा प्रागंण है जो कि एक बहुत बड़े मण्डप से ढका हुआ है तथा इस के चारों ओर बहुत बड़ी परिक्रमा है। सारे मन्दिर में एक भी खिड़की नही परन्तु इसे वास्तु के हिसाब से बनवाया गया है। इस मन्दिर में आर्ट की बहतरीन एक हजार वर्ष पुरानी अनेक मुर्तियाँ बनी हुई हैं। दिवारों पर भिन्न-भिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियाँ, खूबसूरत स्त्रियों की विभिन्न मुद्राओं में सैकड़ों मूर्तियाँ तथा प्रेम प्रसंग की मुद्राओं में कई मूतियाँ हैं। क्योंकि भगवान पार्श्व नाथ जी विषय वासना को हरण करने में सर्वाधिक समर्थ है इस लिए इन दर्शायी मूर्तियों को पार्श्व प्रभु के नाम की नागदमनी द्वारा विषयों का रस कड़वा लगने लगता है।

पार्श्वनाथ मन्दिर के खुले प्रांगण में एक संग्रहालय है जिसमें बड़ी मात्रा में जैन संस्कृति की प्राचीन मूर्तियाँ हस्तलिखित ग्रंथ, शिलालेख, स्तंभ एवं दुर्लभ कलाकृतियाँ सुरक्षित संगृहीत है। इन प्राचीन मूतियाँ में एक मूर्ति में प्रेमिका अपने प्रेमी को पत्र लिख रही है तथा एक खूबसूरत अप्सरा अपने पाँव से कांटा हटा रही है। यह मूर्तियाँ कला की दृष्टि से बड़ी उत्कृष्ट मूर्तियाँ है। इस मन्दिर की दिवार पर एक जादुई चोखटा बना हुआ है, जिसके 16 खाने है। किसी भी दिशा में गिनने पर 34 का योग फल बनता है। इस को चौंतिसियाँ यंत्र कहते है।

वाराणसी तथा खुजराहो पर डाक टिकटे

3 अक्टुबर 1983 को नई दिल्ली मे पर्यटक को बढ़ावा देने के लिए GENERAL ADDEMBLY OF WORLD TOURISM ORGANISATION का अधिवेश हुआ था। इस अवसर पर वाराणसी के घाट तथा वाराणसी शहर के चित्र वाली एक रूपये मुल्य की बहुरंगी डाक टिकट जारी की गई थी। इस टिकट को 15 लाख संख्या में छापा गया था। वाराणसी नगरी भगवान पार्श्वनाथ के गर्भ, जन्म, तथा दीक्षा कल्याणक की पुण्य भूमि है। इस डाक टिकट का वर्णन सटेनले गिब्स केटालोग -लॅडन में नम्बर 1101 पर दिया गया है।

वाराणसी नगरी के चित्र वाली दूसरी डाक टिकट 24 अक्टूबर 2016 को भारत सरकार के डाक टिकट विभाग ने जारी की थी। इस बहुरंगी डाक टिकट का मुल्य 500 पैसे है तथा टिकट के नीचे ईंग्लिश तथा हिन्दी में वाराणसी शहर लिखा है।

चौथी नियमित डाक टिकटों की श्रृंखला में 1 रूपये मूल्य की लाल-ब्राउन तथा हलका जामनी रंग मिला कर एक डाक टिकट जारी की गई थी जिस पर दर्शाया गया है एक प्रेमिका अपने प्रेमी को पत्र लिख रही है। यह पार्श्व नाथ जैन मन्दिर, खुजराहो में बनी हुई मूर्ति का चित्र है। इस का विवरण सटेनले गिब्ण्स केटालाग-लंडन में नम्बर 517 पर दिया गया है तथा इसे 1 जुलाई 1966 को जारी किया गया था।

खुजराहो मन्दिरों के बनने के 1000 वर्ष का समारोह भारत वर्ष में मार्च 1999 से मार्च 2000 तक एक वर्ष तक भारत सरकार ने मनाया था। इस समारोह को मनाने के उपलक्ष्य भारत सरकार के डाक विभाग ने 6 मार्च 1999 को एक लाल-ब्राउन, औरेंज-ब्राउन तथा काले रंगों की मिला कर संस्मारक डाक टिकट जारी की थी। इस डाक टिकट पर एक खूबसूरत अप्सरा अपने पाँव से काँटा निकाल रही है। यह मूर्ति पार्श्व नाथ जैन मन्दिर खुजराहो की शोभा बढ़ा रही है। इस डाक टिकट को दस लाख संख्या में छापा गया था। इस का विवरण सटेनले गिब्ण्स केटालाग-लॅडन में नम्बर 1842 पर दिया गया है। इन सब डाक टिकटों को भारत सरकार के डाक विभाग ने जारी किया था।

जैनधर्म तथा जैनदर्शन

❊ श्री अम्बुजाक्ष सरकार एम.ए.बी.एल ❊

पुण्यभूमि भारतवर्ष में वैदिक (हिन्दू) बौद्ध और जैन इन तीन प्रधान धर्मोका अम्युत्थान हुआ है। यद्यपि बौद्धधर्म भारत के अनेक सम्प्रदायों और अनेक प्रकार के आचारों व्यवहारों में अपना प्रभाव छोड़ा गया है, परन्तु वह अपनी जन्मभूमि से खदेड़ दिया गया है। और सिंहल, ब्रह्मदेश, तिब्बत, चीन, आदि देशों में वर्तमान है। इस समय हमारे देश में बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में यथेष्ट आलोचना होती है परन्तु जैन धर्म के विषय में अब तक कोइ भी उललेख योग्य आलोचना नहीं हुई। जैनधर्म के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान बहुत ही परिमित है । स्कूल में पढ़ाये जाने वाले इतिहास के एक दो पृष्ठों में तीर्थंकर महावीर द्वारा प्रचारित जैन धर्म के सम्बन्ध में जो अत्यन्त संक्षिप्त विवरण रहता है, उसको छोड़कर हम कुछ नहीं जानते । जैन धर्म सम्बन्धी विस्तृत आलोचना करने की लोगों की इच्छा भी होती है, पर अभी तक उसके पूर्ण होने को कोई विशेष सुभीता नहीं है। कारण दो चार ग्रन्थों को छोड़कर जैन धर्म सम्बन्धी अगणित ग्रन्थ अभी तक भी अप्रकाशित हैं, भिन्न भिन्न मंदिरों के गुप्त भण्डारों में जैन ग्रन्थ छिपे हुए हैं, इसलिए पठन या आलोचना करने के लिए वे दुर्लभ है।

हमारी उपेक्षा तथा अज्ञता

बौद्ध धर्म समान जैन धर्म की आलोचना क्यों नही हुई ? इसके और भी कई कारण है। बौद्ध धर्म पृथिवी के एक तृतीयांश वासियों का धर्म है, किन्तु भारत के चालीस करोड़ लोगों में जैन धर्मावलम्बी केवल लगभग बीस लाख है। इसी कारण बौद्धधर्म समान जैन धर्म के गुरत्व का किसी को अनुभवनहीं होता। इसके अतिरिक्त भारत में बौद्ध प्रभाव विशेषता के साथ परिस्फुटित है। इसलिए भारत के इतिहास की आलोचना में बौद्ध धर्म का प्रसङ्ग स्वयं ही आकर उपस्थित हो जाता है । अशोक स्तम्भ, चीनी यात्री हुयेनसांगका भारतभ्रमण, आदि जो प्राचीन इतिहास की निर्विवाद बातें है उनका बहुत बड़ा भाग बौद्धधर्म के साथ मिला हुआ है। भारत के कीर्तिशाली चक्रवर्ती राजाओं ने बौद्धधर्म को राजधर्म रूप में ग्रहण किया था, इसलिए किसी समय हिमालय लेकर कन्याकुमारी तक की समस्त भारतभूमि पीले कपड़े वालों से व्याप्त हो गयी थी। किन्तु भारतीय इतिहास जैन धर्म का प्रभाव कहां तक विस्तृत हुआ था। यह अब तक भी पूर्ण रूप से मालुम नहीं होता है। भारत के विविध स्थानों में जैन कीर्ति के जो अनेक ध्वंसावशेष अब भी वर्तमान हैं अनेक सम्बन्ध में अच्छी तरह अनुसन्धान करके ऐतिहासिक तत्त्वों को खोजने की कोई उल्लेख योग्य चेष्टा नहीं हुई है। हाँ. कुछ वर्षों से अति साधारण चेष्टा हुई है । मैसूर राज्य के श्रवणबेलगोला नामक स्थान चन्द्रगिरी पर्वत पर जो थोड़े से शिलालेख प्राप्त हुए है , उनमें मालूम होता है कि मौर्यवंश के प्रतिष्ठाता महाराज चन्द्रगुप्त जैन मतावलम्बी थे। इस बात को श्री विन्संट स्मिथ ने अपने भारत के इतिहास के तृतीय संस्करण (1914) में लिखा है परन्तु इस विषय में कुछ लोगों ने शंका की है किन्तु अब अधिकांश

मान्य विद्वान इस विषय में एकमत हो गये है। जैन शास्त्रों में लिखा है कि महाराज चन्द्रगुप्त (छट्टे?) पांचवे श्रुतकेवली भ्रदबाहु के द्वारा जैन धर्म में दीक्षित किये गये थे और महाराज अशोक भी पहले अपने पितामह से ग्रहीत जैन धर्म के अनुयायी थे, पर पीछे उन्होंने जैन धर्म का परित्याग करके बौद्धधर्म ग्रहण कर लिया था। भारतीय विचारोंपर जैन धर्म और जैन दर्शन ने क्या प्रभाव डाला है, इसका इतिहास लिखने के समग्र उपकरण अब भी संग्रह नहीं किये गये हैं। पर यह बात अच्छी तरह निश्चित हो चुकी है कि जैन विद्वानों ने न्याय शास्त्र में बहुत अधिक उन्नति की थी। उनके और बौद्ध नैयायिकों संसर्ग और संघर्ष के कारण प्राचीन न्याय का कितना ही अंश परिवर्तित और परिवर्तित किया गया और नवीन न्याय के रचने की आवश्यकता हुई थी। शाकटायन, आदि वैयाकरण, कुन्दकुन्द उमास्वामी, सिद्धसेन, दिवाकर भट्टाकलङ्क देव, आदि नैयायिक, टीकाकृत्कुलरवि मल्लिनाथ, कोषकार अमरसिंह, अमिधानकर , पूज्यपाद, हेमचन्द्र, तथा गणितज्ञ महावीराचार्य, आदि विद्वान जैनधर्मावलम्बी थे। भारतीय ज्ञान भण्डार इन सबका बहुत ऋणी है।

अच्छी तरह परिचय तथा आलोचना न होने के कारण अब भी जैन धर्म के विषय में लोगों के तरह के ऊटपटांग ख्याल बने हैं । कोई कहता था यह बौद्ध धर्म का ही एक भेद है। कोई कहता था कि वैदिक (हिन्दू) धर्म में जो अनेक सम्प्रदाय हैं, इन्हीं में यह भी एक है जिसे महावीर स्वामी ने प्रवर्तित किया था। कोई, कोई कहते थे कि जैन आर्य नहीं हैं क्योंकि वे नग्नमूर्तिओं को पूजते हैं। जैन धर्म भारत के मूलनिवासीयों के किसी एक धर्म सम्प्रदाय का केवल एक रूपान्तर है। इस तरह नाना अनभिज्ञताओं के कारण नाना प्रकार की कल्पनाओं से प्रसूत भ्रान्तियां फैल रही थी, उनकी निराधारता अब धीरे धीरे प्रकट होती जाती है।

जैनधर्म बौद्ध धर्म से अति प्राचीन-

यह अच्छी तरह प्रमाणित हो चुका है कि जैन धर्म बौद्ध धर्म की शाखा नहीं है महावीर स्वामी जैन धर्म के स्थापक नहीं है, उन्होंने केवल प्राचीन धर्म का प्रचार किया था। महावीर या वर्द्धमान स्वामी बुद्धदेव के समकालीन थे। बुद्धदेव ने बुद्धत्व प्राप्त करके धर्मप्रचार कार्य का व्रत लेकर जिस समय धर्म चक्र का प्रवर्तन किया था, उस समय महावीर स्वामी एक सर्व विश्रुत तथा मान्य धर्मशिक्षक थे। बौद्धों के त्रिपिटक नामक ग्रन्थ में नातपुत नामक जिस निर्ग्रन्थ धर्म प्रचार का उल्लेख है, वह नातपुत्त ही महावीर स्वामी हैं उन्होंने ज्ञातृ नामक क्षत्रियवंश में जन्म ग्रहण किया था, इसलिए वे ज्ञातृपुत्र (पाली भाषा में नातपुत्त) कहलाते थे। जैन मतानुसार महावीर स्वामी चौबीस वें या अन्तिम तीर्थंकर थे । उनके लगभग 200 वर्ष पहले तेइसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ स्वामी हो चुके थे। अब तक इस विषय मे सन्देह विषय में सन्देह था कि पार्श्वनाथ स्वामी ऐतिहासिक व्यक्ति थे या नहीं परन्तु डॉ. हर्मन जैकोवी ने सिद्ध किया है कि पार्श्वनाथ ईसा पूर्व आठवीं शताब्दि में जैन धर्म का प्रचार किया था । पार्श्वनाथ के पूर्ववर्ती अन्य बाईस तीर्थकरों के सम्बन्ध में अब तक कोई ऐतिहासिक प्रमाण नही मिला है।

दिगम्बर मूल परम्परा है-

तीर्थिक, निर्ग्रन्थ और नग्न नाम भी जैनों के लिए व्यवहृत होते हैं । यह तीसरा नाम जैनों के प्रधान और प्राचीनतम दिगम्बर सम्प्रदाय कारण पड़ा है। मेगस्थनीज इन्हें नग्न दर्शनिक (Gymnosphists) के नाम से उल्लेख करता है । ग्रीस देश में एक ईलियाटिक नाम का सम्प्रदाय हुआ है। वह नित्य, परिवर्तन एक अद्वैत सत्तामात्र स्वीकार करके जगत के सारे परिवर्त्तनों , गतियों और क्रियाओं की संभावना को अस्वीकार करता है। इस मत का प्रतिद्वन्दी एक हिराक्लीटियन सम्प्रदाय हुआ है वह विश्व तत्त्व (द्रव्य) की नित्यता सम्पूर्ण रूप से अस्वीकार करता है। उसके मत से जगत सर्वथा परिवर्तन शील है। जगत् स्त्रोत निरवाध गति वह रहा है ,एक क्षण भर के लिए भी कोई वस्तु एक भाव से स्थित होकर नही रह सकती। ईलियाटिक-सम्प्रदाय के द्वारा प्रचरित उक्त नित्यवाद और हिराक्लीटियन सम्प्रदाय द्वारा प्रचारित परिवर्तन वाद पाश्चात्य दर्शनों में समय समय पर अनेक रूपों में नाना समस्याओं के आवरण में प्रकट हुए है। इन दो मतों के समन्वय की अनेक वार चेष्टा भी हुई है, परन्तु वह सफल कभी नहीं हुई । वर्तमान समय के प्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक बर्गसान (Bergson) का दर्शन हिराक्लीटियन के मत का ही रूपान्तर है।

भारतीय नित्य-अनित्यवाद-

वेदान्त दर्शन में भी सदा से यह दार्शनिक विवाद प्रकाशमान हो रहा है। वेदान्त मत से केवल नित्य शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-सत्य स्वभाव चैतन्य ही सत् है शेष जो कुछ है वह केवलनाम रूप का विकार माया प्रपञ्च-असत् है । शङ्कराचार्य ने सत शब्द की जो व्याख्या की है उसके अनुसार इस दिखलायी देने वाले जगत प्रपञ्च की कोई भी वस्तु सत् नहीं हो सकती। भूत, भविष्यत्, वर्तमान इन तीनों कालों में जिस वस्तु के सम्बन्ध में बुद्धि को भ्रान्ति नहीं होती, वह सत् है और जिसके सम्बन्ध में व्याभिचार होता है वह असत् है। जो वर्तमान समय में है, वह यदि अनादि अतीत के किसी समय में नही था और अनन्त भविष्यत के भी किसी समय में नहीं रहेगा, तो वह सत् नहीं हो सकता-वह असत् है । परिवर्तन शील असद्वस्तु के साथ वेदान्त का कोई सम्पर्क नहीं है । वेदान्त दर्शन केवल अद्वैत सदब्रह्म का तत्त्व दृष्टि से अनुसंधान करता है । वेदान्त यही प्रथम बात है अथातो ब्रह्म जिज्ञासा ओर यही अन्तिम बात है। क्योंकि - तस्मिन् विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति।

वेदान्त के समान बौद्ध दर्शन में कोई त्रिकाल अव्यभिचारी नित्य वस्तु नहीं मानी गयी है बौद्ध क्षणिक वाद के मत से सर्वे क्षणं क्षणं ? । जगत्स्त्रोत अप्रतिहततया अबाध गति से बराबर वह रहा है -क्षणभर के लिए भी कोई वस्तु एक ही भाव से एक ही अवस्था में स्थिर होकर नहीं रह सकती। परिवर्तन ही जगत का मूलमंत्र है ! जो इस क्षण में मौजूद है, वह आगामी क्षण में ही नष्ट हो कर दूसरा रूप धारण कर लेता है । इस प्रकार अनन्त मरण और अनन्त जीवनों की अनन्त क्रीड़ाएं इस विश्व के रंगमंचपर लगातार हुआ करती है । यहां स्थिति, स्थैर्य, नित्यता असंभव है।

जैन अनेकान्त-

स्याद्वादी जैनदर्शन वेदान्त और

बौद्धद्यमत की आंशिक सत्यता को स्वीकार करके कहता है कि विश्वतत्त्व या द्रव्य नित्य भी है और अनित्य भी। वह उत्पत्ति, ध्रुवता और विनाश इन तीन प्रकार की परस्पर विरूद्ध अवस्थाओं से युक्त है। वेदान्त दर्शन में जिस प्रकार स्वरूप और तटस्थ लक्षण कहे गये हैं उसी प्रकार जैन दर्शन में प्रत्येक वस्तु को समझाने के लिए दो तरह से निर्देश करने की व्यवस्था है। एक को कहते हैं निश्चय नय और दूसरे को कहते हैं व्यवहार नय। स्वरूपलक्षण का जो अर्थ है, ठीक वही अर्थ निश्चय नय है। वह वस्तु के निज भाव या स्वरूप को बतलाता है। व्यवहार नय वेदान्त के तटस्थ लक्षण के अनुरूप है । उससे वक्ष्यमाण वस्तु किसी दूसरी-वस्तु की अपेक्षा से वर्णित होती है। द्रव्य निश्चय नय से ध्रुव है किन्तु व्यवहार नय से उत्पत्ति और विनाशशील है, अर्थात् द्रव्य के स्वरूप या स्वभाव की अपेक्षा से देखा जाय तो वह नित्य स्थायी पदार्थ है, किन्तु साक्षात परिदृश्यमान व्यवहारिक जगत की अपेक्षा से देखा जाय तो वह अनित्य और परिवर्तनशील है। द्रव्य के सम्बन्ध में नित्यता और परिवर्तन आंशिक या अपेक्षिक भाव से सत्य है- पर सर्वथा एकान्तिक सत्य नहीं है। वेदान्त द्रव्य की नित्यता के ऊपर ही दृष्टि रक्खी है, और भीतर की वस्तु का सन्धान पाकर, बाहर के परिवर्तन मय जगत प्रपञ्च को तुच्छ कह कर उड़ा दिया है और बौद्ध क्षणिकवादने बाहर के परिवर्तन की प्रचुरता के प्रभाव से रूप-रस-गन्ध-शब्द स्पर्शादि की विचित्रता में ही मुग्ध होकर इस वहिवैचित्र्य के कारणभूत नित्य-सूत्र अभयन्तर को खो दिया है। पर स्याद्वादी जैन दर्शन ने भीतर और बाहर, आधार आवेय धर्म और धर्मों कारण और कार्य, अद्वैत और वैविध्य दोनों को ही यथास्थान स्वीकार कर लिया है।

स्याद्वाद की व्यापकता-

इस तरह स्याद्वाद ने, विरूद्ध वादों की मीमांसा करके उनके अन्त सूत्र रूप आपेक्षिक सत्य का प्रतिपादन करके उसे पूर्णता प्रदान की है। विलियम जेम्स नाम के विद्वान द्वारा प्रचारित Pragmtaism वाद के साथ स्याद्वाद की अनेक अंशा में तुलना हो सकती है। स्याद्वाद का मूलसूत्र जुदे,जुदे दर्शन शास्त्रों में जुदे जुदे रूप में स्वीकृत हुआ है। यहां तक कि शङ्कराचार्य ने पारमार्थिक सत्य से व्यवहारित सत्य को जिस कारण विशेष रूप में माना है, वह इस स्याद्वाद के मूलसूत्र के साथ अभिन्न है। श्रीशंकाराचार्य ने परिदृश्यमान या दिखलायी देने वाले जगत का अस्तित्व अस्वीकार नहीं किया है, उन्होंने केवल इसकी पारमार्थिक सत्ता को अस्वीकार किया है । बौद्ध विज्ञानवद एवं शून्यवाद के विरूद्ध उन्होंने जगत की व्यवहारिक सत्ता को अत्यन्त दृढ़ता के साथ प्रमाणित किया है । समतल भूमिपर चलते समय एक तल, द्वितल, त्रितल, आदि अच्यता के नाना प्रकार के भेद हमें दिखलायी देते हैं, किन्तु बहुत ऊंचे शिखर से नीचे देखने पर सतखंडा महल और कुटियों मे किसी प्रकार का भेद नहीं जान पड़ता। इसी तरह ब्रह्मबुद्धि से देखने पर जगत माया का विकास, ऐन्द्रजालिक रचना अर्थात् अनित्य है, किन्तु साधारण बुद्धि से देखने पर जगत की सत्ता स्वीकार करना ही पड़ता है। दो प्रकार का सत्य दो विभिन्न दृष्टियों के कारण से स्वयं सिद्ध है ! वेदान्तसार में माया को जो प्रसिद्ध संज्ञा दी

गयी है, उससे भी इस प्रकार की भिनन दृष्टिओं से समुत्पन्न सत्यता के भिन्न रूपों की स्वीकृति इष्ट है । बौद्ध दृश्यवाद में शून्य का जो व्यतिरेकमुख लक्षण किया है, उसमें भी स्याद्वाद की छाया स्पष्ट प्रतीत होती है। अस्ति, नास्ति, अस्ति,नास्ति दोनों, अस्ति नास्ति दोनों नहीं, इन चार प्रकार की भावनाओं के जो परें है उसे शून्यत्व कहते हैं । इस प्रकार पूर्वी और पश्चिमी दर्शनों के जुदे जुदे स्थानों में स्याद्वाद का मूल सूत्र तत्त्वज्ञान के कारण रूप से स्वीकृत होने पर भी **स्याद्वाद को स्वतंत्र उच्च दार्शनिक मत के रूप से प्रसिद्ध करने का गौरव केवल जैन दर्शन को ही मिल सकता है।**

जैन सृष्टिक्रम-

जैन दर्शन के मूलतत्व या द्रव्य के सम्बन्ध में जो कुछ कहा गया है । उससे ही मालूम हो जाता है कि जैनदर्शन यह स्वीकार नहीं करता कि सृष्टि किसी विशेष समय में उत्पन्न हुई है। एक ऐसा समय था जब सृष्टि नहीं थी, सर्वत्र शून्यता थी, उस महाशून्य के भीतर केवल सृष्टिकर्ता अकेला विराजमान था और उसी शून्य से किसी एक समय में उसने उस ब्रह्माण्ड को बनाया । इस प्रकार का मत दार्शनिक दृष्टि से अतिशय भ्रमपूर्ण है। शून्य से (असत् से) सत् की उत्पत्ति नहीं हो सकती। सत्कार्य वादियों के मत से केवल सत् से ही सत् की उत्पत्ति होना सम्भव है। सत्कार्यवाद यह मूलसूत्र संक्षेप है भगवदगीता में मौजूद है। सांख्य और वेदान्त के समान जैन दर्शन भी सत्कार्यवादी है।

जैनदर्शन में जीव तत्त्व की जैसी विस्तृत आलोचना है वैसी और किसी दर्शनों नही है।

वेदान्त दर्शन में संचित, क्रियम ाण और प्रारब्ध इन तीन प्रकार के कर्मों का वर्णन है। जैन दर्शन में इन्हीं को यथा क्रम सत्ता, बन्ध और उदय कहा है । दोनों दर्शनों में इनका स्वरूप भी एक सा है।

संयोग केवली और अयोग केवली अवस्था के साथ हमारे शास्त्रों की जीवन्मुक्ति और विदेह मुक्ति की तुलना हो सकती है। जुदे, जुदे गुणस्थानों समान मोक्ष प्राप्ति की जुदी जुदी अवस्थाएं वैदिक दर्शनों में मानी गयी हैं । योगवाविष्ठ में शुभेच्छा, विचारण, तनुमानसा, सत्त्वापत्ति, संसक्ति, पदार्था भावनी और नूर्यगाः इन सात ब्रह्मविद् भूमियों वर्णन किया गया है।

संवर तत्त्व और प्रतिमा पालन, जैन दर्शन का चारित्र मार्ग है। इससे एक ऊंचे स्तर का नैतिक आदर्श प्रतिष्ठापित किया गया है। सब प्रकार से आसक्ति रहित होकर कर्म करना ही साधना की भित्ति है। आसक्ति के कारण ही कर्मबन्ध होता है अनासक्त-होकर कर्म करने से उसके द्वारा कर्मबन्ध नहीं होगा । भगवद्गीता में निष्काम कर्म का जो अनुपम उपदेश किया है, जैन शास्त्रों के चरित्र विषयक ग्रन्थों में वह छाया विशदरूप में दिखलायी देती है।

जैन धर्म ने अहिंसा तत्त्व को अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक करके व्यवहारिक जीवन को पग, पगपर नियमित और वैधानिक करके एक उपहासास्पद सीमा पर पहुंचा दिया है, ऐसा कतिपय लोगों का कथन है। इस सम्बन्ध में जितने विधि-निषेध हैं उन सबकों पालते हुए चलना इस बीसवीं शती के जटिल जीवन में उपयोगी, सहज और संभव है या नहीं, यह

विचारणीय है।

जैन धर्म के अहिंसा को इतनी प्रधानता क्यों दी गयी ! यह ऐतिहासिकों की गर्वषणा योग्य विषय है । जैन सिद्घान्त में अहिंसा शब्द का अर्थ व्यापक से व्यापक स्तर पर हुआ है । तथा, अपेक्षाकृत अर्वाचीन ग्रन्थों में वह रूपान्तर भाव से ग्रहण किया गया गीता के निष्काम कर्म उपदेशता प्रतीत होता है। तो भी, पहले अहिंसा शब्द साधारण प्रचलित अर्थ में ही व्यवहृत होता था, **इस विषय में कोई भी सन्देह नहीं है कि वैदिक युग में यज्ञ-क्रिया में पशु हिंसा अत्यन्त निष्ठुर सीमा पर जा पहुंची थी। इय क्रूर कर्म के विरूद्ध उस समय कितने ही अहिंसावादी सम्प्रदायों का उदय हुआ था,** यह बात एक प्रकार से सुनिश्चित है। वेद में **मा हिस्यात् सर्व भूतानि** यह साधारण उपदेश रहने पर यज्ञ कर्म में पशु हत्या की अनेक विशेष विधियेां का उपदेश होने के कारण यह साधारण विधि (व्यवस्था) केवल विधि के रूप में ही सीमित हो गयी थी, पद पद पर उपेक्षित तथा उल्लंघित होने से उसमें निहित कल्याणकारी उपदेश सदा के लिए विस्मृति के गर्भ में विलीन हो गया था और अन्त में पशु यज्ञ के लिए ही बनाये गये हैं यह अद्भुत मत प्रचलित हो गया था । इसके फल स्वरूप वैदिक कर्मकाण्ड बलि में मारे गये पशुओं के रक्त से लाल होकर समस्त सात्विक भाव का विरोधी हो गया था। जैन कहते हैं कि उस समय यज्ञ की इस नृशंस पशुहत्या के विरूद्ध जिस जिस मतने विरोध का बीड़ा उठाया था उनमें जैन धर्म सब के आगे था। **मुनयों वातरसना** कहकर ऋग्वेद में जिन नग्नमुनियों का उल्लेख है, विद्वानों का कथन है कि वे जैन दिगम्बर संन्यासी ही है।

बुद्धदेव को लक्ष्यकर के जयदेव ने कहा कि-

निन्दसि यज्ञाविधेरहह श्रुतिजातं
सदय हृदय दिशति पशुघातम् ?

किन्तु यह अहिंसा तत्व जैन धर्म में इस प्रकार अंग-अंगी भाव से संमिश्रित है कि जैन धर्म की सत्ता बौद्ध धर्म के बहुत पहले से सिद्ध होने के कारण पशुघातात्मक यज्ञ विधि के विरूद्ध पहले पहले खड़े होने का श्रेय बुद्धदेव की अपेक्षा जैन धर्म को ही अधिक है। वेद विधि की निन्दा करने के कारण हमारे शास्त्रों में चार्वाक, जैन और बौद्ध पाषण्ड या अनास्तिक मत के नाम से विख्यात है । इन तीनों सम्प्रदयों की झूटी निन्दा करके जिन शास्त्रकारों ने अपनी सम्प्रदायिक संकीर्गता का परिचय दिया है, उनके इतिहास पर्यालोचना करने से मालूम होगा कि जो ग्रन्थ जितना हो प्राचीन है, उसमें बौद्धों की अपेक्षा जैनों की उतनी ही अधिक गाली गलौज की है । अहिंसावादी जैनों के शान्त निरीह शिर पर किसी किसी शास्त्र कारने तो श्लोक पर श्लोक ग्रथित करके गालियों की मूसलाधार वर्षा की है । उदाहरण के तौर पर विष्णु पुराण को ले लीजिए अभी तक की खोजों के अनुसार विष्णु पुराण सारे पुराणों से प्राचीनतम न होने पर भी अत्यंत प्राचीन है । इसके तृतीय भाग के सत्रहवें और अठारहवें अध्याय केवल जैनों की निन्दा से पूर्ण हैं। शतघनु नामक राजा ने एक नग्न पाषण्ड से संभाषण किया था, इस कारण वह कुत्ता, गोदड़ भेड़िया, गीध और मोर की योनियों में जन्म धारण करके अन्त में अश्वमेघ यज्ञ के जल से स्नान करने पर मुक्तिलाभ कर सका। जैनों के प्रति वैदिकों के

प्रबल विद्वेष की निम्नलिखित श्लोकों से अभिव्यक्ति होती है -

न पठेत् यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि।
हस्तिना पीडयमानोऽपि न गच्छेज्जनैमन्दिरम्॥

यद्यपि जैन लोग अनन्त मुक्तात्माओं (सिद्धों) की उपासना करते हैं, तो भी वास्तव में वे व्यक्तित्व रहित पारमात्म्य स्वरूप की ही पूजा करते हैं। व्यक्तित्व रहित होने के कारण ही जैन पूजा पदधति में वैष्णव और शाक्तमतों के समान भक्ति की विचित्र तरङ्गों की संभावना बहुत की कम रह जाती है।

बहुत लोग यह भूल कर रहे थे कि बौद्धमत और जैनमत में भिन्नता नहीं है पर दोनों धर्मों में कुछ अंशो में समानता होने पर भी असमानता की कमी नहीं है। समानता में पहली बात तो यह है कि दोनों में अहिंसा धर्म की अत्यन्त प्रधानता है। दूसरे जिन, सुगत, अर्हत्, सर्वज्ञ, तथा गत, बुद्ध आदि नाम बौद्ध और जैन दोनों ही अपने अपने उपास्य देवों के लिए प्रयुक्त करते हैं। तीसरे दोनों ही धर्मवाले बुद्धदेव या तीर्थकरों की एक ही प्रकार की पाषाण-प्रतिमाएं बनवा कर चैत्यों या स्तूपों में स्थापित करते हैं और उनकी पूजा करते हैं। स्तूपों और मूर्तियों में इतनी अधिक सदृशता है कि कभी कभी मूर्ति और स्तूप का यह निर्णय करना कि यह जैनमूर्ति है या बौद्ध, विशेषज्ञों के लिए कठिन हो जाता हे। इन सब बाहरी सामानताओं के अतिरिक्त दोनों धर्मों की विशेष मान्यताओं में भी कहीं कही सदृशता दिखती है, परन्तु उन सब विषयों में वैदिक धर्म के साथ जैन और बौद्ध दोनों का ही प्रायः ऐकमत्य है। इस प्रकार बहुत सी समानताएं होने पर भी दोनों में बहुत कुछ विरोध है। पहला विरोध तो यह है कि बौद्ध क्षणिकवादी है पर जैन क्षणवाद को एकान्त रूप में स्वीकार नहीं करता। जैन धर्म कहता है कि कर्म-फल रूप से प्रवर्त्तमान जन्मान्तरवाद के साथ क्षणिकवाद का कोई सामाञ्जस्य नहीं हो सकता। क्षणिकवाद मानने से कर्मफल मानना असंभव है। जैनधर्म में अहिंसा नीति को जितनी सूक्ष्मता से लिया है उतनी बौद्धो में नहीं है। अन्य द्वारा मारे हुए जीव का मांस खाने की बौद्धधर्म मनायी नहीं करता, उसमें स्वयं हत्या करना ही मना है। बौद्धदर्शन के पञ्च स्कन्ध समान कोई मनोवैज्ञानिक तत्त्व भी जैन दर्शन में नहीं माना गया।

बौद्ध दर्शन में जीवपर्याय अपेक्षाकृत सीमित है, जैनदर्शन के समान उदार और व्यापक नहीं हैं। वेदिक धर्मो तथा जैन धर्म में मुक्ति के मार्ग में जिस प्रकार उत्तरोत्तर सीढ़ियों की बात है, वैसी बौद्ध धर्म में नहीं है। जैन गोत्र वर्ण के रूप में जाति-विचार मानते हैं, पर बौद्ध नहीं मानते।

जैन और बौद्ध को एक समझने का कारण जैनमत का भली भांति मनन न करने के सिवाय और कुछ नहीं है। प्राचीन भारतीय शास्त्रों में कही भी दोनों को एक समझने की भूल नहीं की गयी है। वेदान्त सूत्र में जुदे जुदे स्थलों पर जुदे जुदे हेतुवादसे बौद्ध और जैनमत का खण्डन किया है। शंकर दिग्विजय में लिखा है कि शंकराचार्य ने काशी में बोद्धो के साथ और उज्जयनी में जैनों के साथ शास्त्रार्थ करने की आवश्यकता नहीं थी। प्रबोधचन्द्रोदय नाटक में बौद्ध भिक्षु और जैन दिगम्बर की लड़ायी का वर्णन है।

वैदिक (हिन्दू) के साथ जैन धर्म का

अनेक स्थलों में विरोध है परन्तु विरोध की अपेक्षा सादृश्य ही अधिक है। इतने दिनों से कितने ही मुख्य विरोधों की और दृष्टि रखने के कारण वैर विरोध बढ़ता रहा और लोगों को एक दूसरे को अच्छी तरह से देख सकने का अवसर नहीं मिला। प्राचीन वैदिक सब सह सकते थे परन्तु वेद परित्याग उनकी दृष्टि में अपराध था।

वैदिक धर्म को इष्ट जन्म कर्मवाद जैन और बौद्ध दोनों ही धर्मो का भी मेरूदण्ड है। दोनों ही धर्मों में इसका अविकृत रूप से प्रतिपादन किया गया है। जैनों ने कर्म को एक प्रकार के परमाणुरूप सूक्ष्म पदार्थ (कार्माण वर्गणा) के रूप में कल्पना करके, उसमें कितनी ही सयुक्तिक श्रेष्ठ दार्शनिक विशेषताओं की सृष्टि ही नहीं की है, किन्तु उसमें कर्म-फलवाद की मूल मान्यता को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखा है। वैदिक दर्शन का दुःखवाद और जन्म-मरणात्मक दुःखरूप संसार से पार होने के लिए निवृत्तिमार्ग अथवा मोक्षान्वेषण यह वैदिक, जैन और बौद्ध सबका ही प्रधान साध्य है। निवृत्ति एवं तप के द्वारा कर्मबन्ध का क्षय होने पर आत्मा कर्मबन्ध से मुक्त होकर स्वभाव को प्राप्त करेगा और अपने नित्य -अबद्ध-शुद्ध स्वभाव के निस्सीम गौरव से प्रकाशित होगा। उस समय **भिद्यतेहृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः।**
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टेपरावरे॥

यह स्पष्ट रूप से जैन और वैदिक शास्त्रों में घोषित किया गया है।

जन्म जन्मान्तरों में कमाये हुए कर्मों को वासना के विध्वंसक निवृत्तिमार्ग के द्वारा क्षय करके परम पद प्राप्ति की साधना वैदिक जैन और बौद्ध तीनों ही धर्मों में तर-तम के साथ समान रूप से उपदेशित की गयी है। दार्शनिक मतवादों के विस्तार और साधना की क्रियाओं की विशिष्टता में भिन्नता हो सकती है, किन्तु उद्देश्य और गन्तथ्य स्थल सबका ही एक है

रूचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।

महिम्नस्तोत्र की सर्व-धर्मे - समानत्व को करने में समर्थ यह उदारता वैदिक शास्त्रों में सतत उपदिष्ट होने पर भी संकीर्ण साम्प्रदायिकता से उत्पन्न विद्वेष बुद्धि प्राचीन ग्रन्थों में जहां तहां प्रकट हुई है, किन्तु आजकल हमने उस संकीर्णता की क्षुद्र मर्यादा का अतिक्रम करके यह कहना सीखा है-

यंशैवाः समुपासतेशिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बैद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः कत्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वांछित फलं त्रैलोक्यनाथो हरिः॥

ईसा की आठवीं शती में इसी प्रकार के महान उदार भावों से अनुप्राणित होकर जैनाचार्या मूर्ति मान स्याद्वाद भट्ट अकलंक देव कह गये हैं -

यो विश्वं वेद वेद्यं जननजलनिधे र्भङ्गिनः
पार दृश्वा।
पौर्वापर्याविरूद्धं वचनमनुपमं निष्कलङ्क
यदीयम्।
तं वन्दे साधुवन्द्यं सकल गुणनिधिं
ध्वस्तदोष द्विषन्तं
बुद्ध वा वर्धमानं शतदलनिलयं केशवं वा
शिवं वा॥

कविता

सूर्यसम प्रभावंत

❊ ब्र. सुदेश कोठिया ❊

युग ने देखा इक ''विरल'' संत
करते निज पर विधि ''गरल'' अंत

निश्चय व्यवहार ''सुकिरिया'' में
आगम दिखता है ''चरिया'' में
वाणी से झरता ''अमृत मंत्र''
ज्ञानामृतं स्रावीदिव्य संत- युग ने देखा•

करूणा का सागर लहराता
आनन में जिसके पल प्रतिपल
भयभीत जगत के मानव क्या
पशु भी हो जाते अभय वंत- युग ने देखा•

रागी द्वेष भी आते हैं
दर्शन करते झुक जाते हैं
मानी का होता मान गलन
क्रोधी पा जाते शान्ति मंत्र- युग ने देखा•

वह दृष्टि उठाकर देखें तो
अपराधी हृदय पलट जाते
मिथ्यादृष्टि सद्ज्ञान बनें
दुर्जन हो जाते दयावन्त-युग ने देखा •

उन संत कवि की कलम तले
पावन सरितायें बहती हैं
बोला करते हैं मूकमधुर
माटी हो उठती जीववन्त-युग ने देखा •

युग-युग में प्यासे भटके हम
चहुँ दिशि फैला था मिथ्यातम
मरूथल में ज्यों प्यासे मृग को
मिल गया जलधि लेता तरंग-युग ने देखा •

ये विद्या के सागर मुनिवर
युग युग उपमा देंगे जिनकी
वे कठिन तपस्वी -सरल संत
रत्नत्रय जिनमें दीप्तिवंत-युग ने देखा •

जीवों को हितकारी प्रवचन
जिनकी संयत काया देती
मुस्कान मधुर औषधि जैसी
भक्तों के भ्रम का करें अंत-युग ने देखा •

हे ! विद्यासागर परम संत
ऋषि मुनियों में तुम श्रेष्ठ संत
हे ! सूरि सूर्यसम प्रभावन्त
जग के कल्मष का करो अन्त-युग ने देखा •

साहस की मूर्ति, आर्यिका प्रभावनामति

❊ ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर ❊

काले आसमान में हजारो तारे बिखेर रहे थे नजारे उत्तर दिशा का ध्रुव तारा बादलों की ओट में छुप रहा था और हवा के झोकों में ठण्ड की बहार बह रही थी ओस की बूंदो पर तारो की छवि पूर्ण रूपेण झलक रही थी धीरे-धीरे आसमान में पीलापन रंगते चला जा रहा था ऐसा लग रहा था जैसे प्रकृति आसमान पर स्वर्णिम चित्रकला बना रही हों इधर धर्मनगरी खुरई में श्रेष्ठी हीरालाल की धर्मपत्नी फूलाबाई ने एक रूई जैसी कोमल तन वाली पुत्री को जन्म दिया हीरालाल जी को जैसे ही पता लगा कि कन्या रत्न ने जन्म लिया है और उन्हें ज्ञात हुआ कि स्वर्णर्णिय कन्या मेरे घर आई है। अचानक उनकी दृश्टि आसमान पर पड़ी वहां भी सोने सा आसमान हो रहा था बस उन्होंने कन्या का नाम हेमलता बोल दिया हेमलता के जन्म के कारण 16 फरवरी 1962 माघ शुक्ल द्वादशी अहं दिवस बन गया।

पैरो की पायल से जहां पूरा घर गूंज जाता था उसी हेमलता ने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त करके आत्म कल्याण के पथ पर पहला कदम रखा। श्रृंगार के बन्धनों को छोड़कर 9 मई सन् 1985 को गुरुवार के दिन आचार्य श्री विद्यासागर जी समक्ष आजीवन ब्रह्मचर्य का संकल्प ले लिया। मां फूलाबाई का अनुशासन अब उनके सिर से उतर गया और वे आचार्य श्री विद्यासागर जी के अनुशासन में संबद्ध हो गयी ब्राह्मी विद्या आश्रम के प्रांगण में निर्देश पाकर स्वाध्याय व्रत के मार्ग पर आगे बढ़ गयी। शक्ति अनुसार तप और त्याग के सूत्र कोआत्मसात् कर लिया।

आश्रम में रहकर आपने संस्कृत भाषा व्याकरण एवं छन्द शास्त्र का अध्ययन किया जीव सिद्धान्त कर्म सिद्धान्त लोक विद्या सृष्टि विज्ञान में निपुण होने के बाद प्रथमानुयोग पुराण शास्त्र में अपना हस्तसिद्ध अधिकार प्राप्त किया।

नरसिंहपुर शहर की गलियों में जन्मदिन 16 फरवरी से चर्चा प्रारंभ हो गयी थी अष्टम प्रतिमाधारी ब्र. हेमलता की दीक्षा तप कल्याणक के दिन हो सकती है 28 वर्ष की आयु पूर्ण करने के बाद हेमलता का सौभाग्य जब उठा और 20 फरवरी के दिन जब मंच खचाखच भरा था पांडाल में हर बैठा हुआ व्यक्ति टकटकी लगाये हुये था तभी श्वेत वस्त्रों में सजी धजी हेमलता एवं उनकी बहन राजुल का श्रृंगार उतरना शुरु हो गया और देखते ही देखते हेमलता आर्यिका प्रभावनामति एवं उनकी बहन राजुल आर्यिका भावनामति बन गई। गुरुमति माताजी के निर्देशन में आचार्य श्री की आज्ञा से साधना पथ में आपने अद्वितीय प्रगति की आर्यिका ऋजुमति के संघ में रहने के बाद आर्यिका प्रभावनामति का स्वतंत्र गण बन गया इस गण में आर्यिका भावनामति की और सदयमति आर्यिका प्रभावनामति जी के निर्देशन में साधना पथ पर आगे बढ़ती रहीं।

कुशल नेतृत्व की क्षमता रखने वाली साहस की प्रतिमूर्ति प्रभावनामति माता जी ने अनेक गोशलाओं की स्थापना करायी एवं जैन शिशु व तरूण महिलाओं की शिक्षा के लिए जगह-जगह पाठशालाओं का उदघाटन कराया। बरेली, बेगमगंज, अशोकनगर जैसे नगरों में माताजी का अपूर्व प्रभाव रहा, अर्थूना नौगामा जैसे राजस्थान के नगरों में आपका प्रभावी सफल वर्षायोग रहा। आपने अनेक श्रावक संस्कार शिविरों का आयोजन करवाया। तथा बारह भावना कि प्रभावी नृत्यनाटिका आपके मार्गदर्शन में जो आयोजित हुई वह अविस्मरणीय रही।

2017 का वर्षायोग में आपने एक आहार और एक उपवास की साधना की तथा

स्वास्थ में गिरावट आने लगी तथा वेद्यों ने जिसे टाइफाइड कहा वह टाइफाईट न होकर वह डेंगु बुखार शरीर को क्रश करता रहा और प्लेट नेट घटती गई वर्षायोग उपरांत आपका विहार अशोक नगर कि ओर हो गया निरन्तर गिरते स्वास्थ की चिंता सबको होने लगी सभी ने माताजी को साधना कम करने का परामर्श दिया किन्तु माताजी ने किसी की एक नहीं सुनी व अपने आत्मबल को मजबूत रखा एवं आचार्य श्री के पास संदेश जाते रहे।

आचार्य श्री ने प्रभावनामति को संभालने के लिए आर्यिका अनन्तमति माताजी के संघ का बिहार अशोकनगर की और कराया आर्यिका अनन्तमति जी ने उन्हें खूब अच्छी तरीके से सम्भाला और सम्बोधन दिया किन्तु नियति की कुछ और ही मंजूर था एक दिन भक्ति मति माता जी की आंखो में आंसू देखकर पूज्य माताजी ने कहा भक्तिमति को अपना साहस नहीं छोड़ना चाहिये अपितु ऐसे समय में मेरी दृढ़ता को बाधित नहीं करना चाहिये सल्लेखना साधना में बदल गई

8 मई के चार बजकर 16 मिनिट पर साहस की मूर्ति प्रभावना मति माताजी ने अंतिम सांस ली और वे साहस समता की मूर्ति सिद्ध हुई। सजल नयन से हजारों श्रावक श्राविकाओं ने अंतिम विदाई दी भावुक क्षणों को कोई रोक नहीं पाया सचमुच में अनेक प्रतिभा की धनी समता साहस की मूर्ति प्रभावनामति माताजी की चद्रिंका का विलय हो गया अब स्मृति रेखाएं है जिन्हें हम देखते रहेंगे।

वात्सल्य की मूर्ति आर्यिका वृषभमति जी

❊ आर्यिका आदित्यमति जी ❊

लगभग 22 वर्ष की उम्र में शादी के अरमान संजोए वहिन माधुरी ने आर्यिका संघ का सानिध्य पाकर बारह भावनाओं के कथाओं के आधार से भावात्मक चिंतन सुनकर वैराग्य के मार्ग पर कदम बढ़ाए। साथ ही अपनी छोटी बहिन ब्र. मीना (आर्यिका श्री सविनयमती जी) की भावनाओं को साकार रूप देते हुए आर्यिका संघ के वर्षायोग निष्ठापन के समय पिच्छि का परिवर्तन के अवसर पर आर्यिका विशालमती माता जी की पुरानी पिच्छि का लेकर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के भावनाए तदुपरांत सिवनी शहर में आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज के श्री चरणों में व्रत का संकल्प लिया और मुक्तागिरि चातुर्मास 1991 में प्रथम बार केशलोंच किया 2 प्रतिभा के व्रत धारण करके संघ में प्रवेश पाया। तभी से अनवरत गुरु के शुभाशीष से आर्यिका संघ की सेवा, वैयावृत्य में तल्लीन रहीं। सदैव अपने वैराग्य को वृद्धिगंत करते हुए चारित्र पथ पर सजगता से आरूढ़ रहीं । आर्यिका विद्युतमती माताजी की समाधि के समय आर्यिका श्री विज्ञानमती माता जी साथ कंधे से कंध मिलाकर वैयावृत्ती की।

2001 में सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्र में शारीरिक क्षमता न होने पर अपने उपकार के प्रति गुणानुराग से मानसिक बल के साथ 18 नवम्बर 2001में आर्यिका दीक्षा लेकर वृषभमती नाम पाया । तभी से निरंजर बीमारियों का सामना समता और धैर्य के साथ करती रहीं। हमेशा यही भावना रहती कि मैं अनूठी विशेष तपस्या साधना न कर पाऊँ पर अपने 28 मूलगुणों को हर समय निर्दोष पालती रहूँ। मधुर मित भाषी, सरल सहज, गंभीर वृत्ति वाली आर्यिका वृषभमती पूज्य आर्यिका श्री की प्रथम शिष्या तो थी ही साथ ही हम सभी संघस्थ सदस्यों की भी अग्रजा होंकर भी सभी के लिये अपूर्व वात्सल्य साधर्मी प्रेम की अनोखी मिशाल थी। सभी को वैराग्य से भरना, और गुरु चरणों के प्रति समर्पित होना ऐसी सीख अहर्निहा मनवचन

काय से देती थी। 17 साल की दीक्षा में 15 साल तक बीमारियों से जूझने के बाद भी कभी चेहरे पर झुँझलाहर नही आती थी। अभी लगातार 1.5 माह से असाध्य बीमारी से लड़ते हुए काया भले ही रुग्ण हो गयी पर गुरु आशीष से आत्मा को पुष्ट बनाती रही। जब डॉ. ने उन्हें केंसर की बीमारी बताने की सोची तब वह बताते बताते रो पड़े पर आप प्रसन्नता से वैरी रही और डॉ. से यही कहा कि निःप्रतीकार रोग आया है तो घबराने की क्या बात है अपने व्रतों की रक्षा करते हुए सल्लेखना करूँगी। बस यही भावना है मैं अपनी गुरु माँ के चरणों में अपने प्राणों का विसर्जन करूँ। डॉ. ने कहा आप पानी निकलवा लीजिए तब दृढ़ता के साथ कहा नहीं डॉ. साहब अभरय औषधी करवाने की अपेक्षा व्रतों के साथ मरना स्वीकार है। वही उन्होंने किया।

23 अप्रैल को तिलकगंज जाकर में पूज्य आर्यिका श्री विज्ञानमती माता जी के दर्शन पाकर अपनी सारी भावनाएँ उनके सामने रख दी । 25 अप्रैल से पूज्य आर्यिका श्री लगातार उनकी आहार चर्या परिचर्या करवाती रही। आप ने भी समर्पण भाव से उनके निर्देशानुसार सारा कार्य किया। दिन पर दिन आहार कम होता जा रहा था। पूज्य आर्यिका श्री ने डॉ. वैद्यादि से सलाह ली, उपचार करवाने का प्रयास किया आचार्य श्री के निर्देशानुसार प्राकृति क चिकित्सा लपेट का प्रयोग भी हुआ । जब बीमारी ने हिलने का नाम ही नहीं लिया तब आपने भी सोच लिया कि अब मैं कर्म के उदय से सामने झुकूँगी नहीं और 8 मई को समाधि की भावना पूज्य आर्यिका श्री के चरणों में रखी साथ ही अपनी डायरी, किताब माता का जीवन भर के लिये त्याग कर दिया उनकी भावना को देखते हुए पूज्य आर्यिका श्री ने उन्हें दही तेल और मिठाईयों का आजीवन त्याग करवाया, पारिवारिक एवं संघस्थ सभी से खमा माँगी । पुनः गुरु माँ के निर्देशानुसार आचार्य श्री को क्षमायाचना एवं सल्लेखना करने का शुभाशीष पाने हेतु पत्र लिखा आचार्य श्री के शुभाशीष से ब्र. मणि बाई जी एवं 2-3 ब्र. बहिने समाधि में

तपस्या के आगे सूर्य भी नत परीषह जयी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

❊ मुनि पूज्यसागर जी महाराज ❊

मुनियों का जीवन अनेक उपसर्ग और परीषहों के बीच निकलता है। ऐसा मूलाचार आदि ग्रन्थों में पढ़ा तो था और गुरुओं के मुख से सुना भी था-लेकिन चला-चलाकर परीषहों को प्रतिकूलताओं, विपरीत स्थितियों को अपने जीवन में कैसे लाया जाता हैं यह आचार्य श्री जी के साथ रहकर साक्षात् देखने को मिला-धन्य है आचार्य श्री जी की अपने व्रतों को निर्दोष पालने के लिए कठोर साधना और तपस्या का ऐसा प्रभाव कि देवो को भी उनके चरणों में झुककर उनकी व्यवस्था करनी पड़ती है और ऐसा ही हुआ।

आचार्य श्री ने 10 जून 2009 को भीषण गर्मी में जबकि कही पर मानसून का नामो-निशान भी नहीं था कुण्डलपुर से शाम 4 बजे विहार कर दिया जब आचार्य श्री ने विहार किया तो संघ के किसी भी साधु की हिम्मत नहीं थी कि उनके साथ चल सकें क्योंकि उस समय जमीन आग की तरह जल रही थी। लेकिन श्री समय सागर जी को मालूम पड़ा कि विहार हो गया तो महाराज जी भी विहार कर गये बड़े बाबा के दर्शन करके पीछे से ही आचार्य श्री के साथ चलते गये और करीब 12-13 कि.मी. हिनौती गांव से आगे कुमारी से पहले एक स्कूल के पास रात्रि में विश्राम किया। लेकिन गर्मी इतनी अधिक थी कि रात भर आचार्य श्री जी को नींद नही आयी। रात्रि में आचार्य श्री जी के पास मात्र दो मुनि ही पहुँच पाये थे श्री समयसागर जी, श्री महासागर जी और पूरा संघ पीछे ही रूक गया था क्योंकि हम लोगों ने शाम 5 बजे के बाद ही विहार किया और जो जहाँ तक आ पाया वहीं आकर रूक गये लगभग हिनौति के आस-पास आ गये थे सुबह होते हुए हम लोग सोच रहे थे कि आचार्य श्री कुमारी गांव में 4-5 कि.मी पर आहार करेंगे। लेकिन गुरुजी की महिमा अपरम्पार है वह तो परीषह से डरते ही नही हैं और पुनः सुबह-सुबह 14-15 कि.मी विहार करके सगोनी गांव पहुंच गये उनकी इस तपस्या को देखकर देवो को झुकना पड़ा और इतनी भीषण गमी में भी देवों ने आकर छत्ता लगा लिया अर्थात् बादल कर दिये और जब तक आचार्य श्री जी अपने स्थान पर पहुंच नही गये तब तक बादल बने रहे और थोड़ी थोड़ी पानी की बूंदे भी आती रही। लेकिन इतने के बाद भी आचार्य श्री जी के पास आधा संघ ही पहुंच गया लगभग 28 महाराज ही गुरु जी के पास पहुच पाये और करीब 14 महाराज योगसागर जी के साथ कुमारी गांव मे रूककर आहार किया क्योंकि शाम की भीषण गर्मी का विहार और रात में इतनी गर्मी थी कि सुबह ज्यादा चलने की शक्ति नहीं रही।

लेकिन धन्य है आचार्य भगवान की कठिन तपस्या कि इतनी तेज गर्मी में जब सड़क आग की तरह जल रही थी धूप में ही शाम को विहार किया और सुबह भी जैसी धारणा बना ली थी कि सगौनी गांव पहुंचना है तो अच्छे-अच्छे जवान साधु भी पीछे रह गये लेकिन आचार्य श्री जी तेज गर्मी में भी सुबह चलते चले गये और जो लक्ष्य बनाया था उस स्थान पर पहुंच

गये। लेकिन देवो ने भी आचार्य श्री जी की इस तपस्या को देखकर खूब वैयावृत्ति की और सुबह पूरे समय तक आहार से पहले-पहले तक बादल बने रहे और पुनः जब शाम को तेज गर्मी हो गयी तो लगा कि वास्तव में जो सुबह-सुबह बादल हुये थे वह देवों के द्वारा किया अतिशय ही था क्योंकि उसके बाद भी कई दिनों तक सुबह न शाम बादल हुए ही नहीं।

धन्य है आचार्य श्री जी का निर्दोष चारित्र कि उनकी सेवा में देव भी तत्पर होकर लगे रहते हैं।

आचार्य श्री जी की इस घटना से यह शिक्षा मिलती है हमें अपना कर्त्तव्य और व्रत संकल्प जो लिया उसको निर्दोष और दृढ़ता से पालना चाहिये इसमें परीक्षा अवश्य होती है जो परीक्षा में डगमगाते नहीं है। और धारणा पक्की रखते हैं तो मनुष्य ही नही देव भी आकर उनकी सेवा में लग जाते हैं।

परीक्षा लेकिन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की देव करते सुरक्षा

❊ मुनि पूज्यसागर जी महाराज ❊

आचार्य कुन्द -कुन्द भगवान ने प्रवचन सार ग्रन्थ की चूलिका अधिकार में एक गाथा में लिखा है कि शत्रु और मित्र, सुख और दुःख, प्रशंसा और निन्दा, सोना और पत्थर तथा जीवन और मरण जिन का समान हो जाता है। वह श्रमण कहलाता है। गाथाओं को पड़ते समय अथवा उसका अर्थ लगाने में बहुत विशुद्धि बढ़ती है लेकिन कषाओं को उद्वेग में अथवा प्रतिकूल स्थिति में अपने परिणाम को संभालकर रखना यह बहुत ही कठिन अथवा असंभव सा कार्य लगता है लेकिन आचार्य भगवन के जीवन में इस प्रकार की गाथायें प्रेक्ट्रीकल रूप में घटते हुए देखने को मिलती है तो ऐसा लगता है आचार्य कुन्द कुन्द भगवान ने जैसा गाथाओं में लिखा है उस प्रकार का श्रमण का जीवन आज भी हो सकता है और जब इस प्रकार का निर्दोष और निर्भोक चारित्र का पालन श्रमण करता है तो देव भी किस प्रकार से उनकी सेवा में लग जाते हैं...और ऐसा ही हुआ।

कुण्डलपुर से भीषण गर्मी में आचार्य श्री जी ने विहार कर दिया अन्दर का विलपावर बहुत अधिक होने से आचार्य श्री जी विहार तो करते-करते वहोरीबंध तक तो आ गये। लेकिन शरीर की भी सहन शक्ति की एम सीमा होती है तेज धूप में विहार करने से दोनों पैरों में लाल-लाल छाले आ जाते हैं। संघ में सभी महाराज चिन्तित थे कि अब आगे विहार होना संभव सा नहीं लगता है शायद वहोरीवन्ध में चातुर्मास स्थापना हो सकती है। क्योंकि अभी चार पाँच दिन के विहार में ऐसी स्थिति हो रही है तो आगे अभी मानसून की कोई संभावना नजर नहीं आ रही है क्योंकि उस समय बॉम्बे में भी मानसून नहीं आया था और अमरकण्टक तक पहुँचने में 15-20 दिन लग सकते हैं। इसलिए ऐसी गर्मी में अब विहार करना संभव ही नहीं है। लेकिन सुख-दुख जिन्हें समान हो गये हो ऐसे महाश्रमण प्रतिकूलता और परीषहों की चिन्ता न करते हुए जो धारणा अपने मन में बना लेते हैं उस लक्ष्य की और बढ़ते चले जाते हैं और तीन दिन वहोरीवंध में रूककर आचार्य भगवन ने पुनः भीषण गर्मी में

अमरकण्टक की ओर विहार कर दिया।

जून महीने की भीषण गर्मी में विहार तो चल ही रहा था और परीक्षा हो जाती है। हमारे आचार्यों ने कहा है कि कोई भी व्रत, नियम, संयम लो उसमें परीक्षा अवश्य होती है और जो परीक्षा में पास हो जाता है तो व्रतों में निखरता आ जाती है । और उनका जीवन आगे बढ़ता ही चला जाता है और आचार्य श्री जी विहार करते हुए उमरिया जिले के पास पाली ग्राम आ गये थे उसी दिन आचार्य श्री जी को आहार के शुरु में ही अंतराय आ जाता है। उस दिन गर्मी इतनी अधिक थी कि आहार करके लौटने में भी पैर जल रहे थे और उसी दिन श्री समयसागर जी को विल्कुल शुरु में आहार में अन्तराय आ गया। संघ के सभी महाराजों में चर्चा का विषय बन गया कि आज तो विहार होना ही नहीं चाहिए क्योंकि उसी दिन प्रभात सागर जी आदि कुछ साधुओं का भी अन्तराय था फिर भी सोचा दोपहर की सामायिक के बाद आचार्य श्री जी से निवेदन करेंगे।

बस दोपहर में सामायिक के बाद हम कुछ महाराज आचार्य श्री जी के पास वैयावृत्ति करने के लिये और हम लोगों ने यह विचार पहले से ही कर लिया था कि वैयावृत्ति करते समय ही आचार्य श्री जी से निवेदन कर लेगें कि आज विहार न करें दूसरे दिन आहार के बाद ही विहार करने की कृपा करें । ऐसा सब सोच कर हम लोग आचार्य श्री जी के पास पहुँचे और वैयावृत्ति करने का निवेदन किया लेकिन आचार्य भगवन वोले आज वैयावृत्ति आप लोगों से नही करवाना है और ऊपर आकाश की तरफ हाथ उठाते हुए गंभीर स्वर में वोलें आज वैयावृत्ति वे लोग करेंगे। आचार्य श्री जी ने ऐसा बोला तो हम सब मुनिराजों की नजर आकाश की तरफ गयी तो बादल एक दम साफ और बहुत अधिक तेज धूप थी हम लोगों ने सोचा न जाने आचार्य श्री जी ऐसा क्यों कह रहे हैं। किसकी ओर इशारा कर रहे हैं लेकिन आचार्य श्री जी की गम्भीर मुद्रा और अन्तराय का दिन था। इसलिए ज्यादा किसी को बोलने की हिम्मत नहीं पड़ी और चुपचाप बिना वैयावृत्ति के ही वापिस अपने-अपने स्थान पर आ गये। शाम 04.30 बजे का समय हुआ और गुरुजी ने पिच्छी कमण्डल उठाये और बिहार करने बाहर निकले ही थे कि एकाएक बादल छा गये धीरे-धीरे बूंदे-बूंदे गिरते-गिरते बहुत तेज पानी गिरने लगा उस दिन जितनी देर तक विहार चला सारे रास्ते में पानी गिरता रहा और रातभर अच्छी ठंडी हवा चलती रही। जून के महीने में जहाँ गर्म लू चल रही वही एकाएक ऐसा मौसम परिवर्तन हो गया। हम सब मुनिराजों को उस समय समझ में आया कि आचार्य श्री जी कह रहे थे कि आज वैयावृत्ति वे लोग करेंगे यानि देवों के द्वारा मौसम के माध्यम से होगी यह आचार्य भगवन का कौन सा ज्ञान और अनुमान है कि इतनी तेज गर्मी में भी उन्होने इस प्रकार का इशारा कर दिया और वैसा ही चमत्कार हुआ।

धन्य है आचार्य भगवन का पुण्य कि प्रकृति भी उनकी चर्या और चारित्र के आगे उनके अनुकूल होकर उनकी सेवा में लग जाती है।

इसी भावना के साथ पूज्य गुरुदेव के चरणों में उन जैसा बनने की भावना से अनन्त-अनन्त वार नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु!

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

श्रवणबेलगोल-आचार्य श्री वर्द्धमान सागर महाराज के करकमलों से दिनांक 25 अप्रैल 2018 को ब्र. सुभाषचन्द्र जैन गोटेगांव डॉ. नेमीचन्द्र जैन जबलपुर, बालासाहब सांगली को मुनि दीक्षा तथा ब्र. श्रद्धा दीदी सनावद को आर्यिका दीक्षा दी गयी। जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री मुक्ति सागर जी, मुनि श्री मर्यादा सागर जी, मुनि श्री महेश सागर जी तथा आर्यिका श्री महायश मति माता जी रखा गया।

नातेपोते (महाराष्ट्र)- उपाध्याय श्री अनुभव सागर जी महाराज के करकमलों से तीन दीक्षायें दिनांक 10 मई 2018 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर नातेपोते महाराष्ट्र में श्रीमति पुष्पा भरत गांधी नातेपोते महाराष्ट्र, श्रीमति इंदु मति धन्नकुमार दोशी नातेपोते महाराष्ट्र, श्रीमतिविद्युत लता ज्ञानचंद जी दोशी फलटन महाराष्ट्र को दीक्षा दी गई जिनके नाम क्रमशः आर्यिका श्री अनुप्रेक्षा मति माता जी, आर्यिका श्री अनुश्रुत मति माता जी, क्षुल्लिका अनुभूत मति माता जी रखा गया।

समाधियां

अशोकनगर-आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्या आर्यिका श्री प्रभावना मति माताजी का समाधिमरण दिनांक 08 मई 2018 को आर्यिका अनंतमति माता जी(बीस माता जी) एवं आर्यिका भावनामति माता जी (तीन माता जी) के ससंघ सानिध्य में हुआ।

सागर- आर्यिका श्री विज्ञानमति माता जी की प्रथम शिष्या आर्यिका श्री विशममति माता जी का समाधिमरण दिनांक 15/05/2018 प्रातः 4.30 बजे हुआ।

कोटा-आर्यिका विशुद्धमति माता जी शिष्या क्षुल्लिका श्री विवर्धमति माता जी का समाधिमरण 15 मई 2018 को रिद्धि सिद्धी जैन मंदिर कोटा राजस्थान में हुआ।

रीवा- आचार्य श्री विराग सागर जी की शिष्या आर्यिका श्री विभुति श्री माता जी का समाधिमरण 13/05/2018 को टिकुरी रीवा म.प्र. में हुआ।

आर्यिका श्री अवगममति माता जी का समाधिमरण

व्योहारी (शहडोल म.प्र.)-आचार्य विद्यासागर महाराज जी की आज्ञानुवर्ति शिष्या 105 अवगममति माता जी का समाधिमरण अत्यन्त निर्मल प्रणामो एवं धर्मध्यान पूर्वक 24/05/2018 को प्रातः 11.15 बजे आर्यिका श्री 105 अकंपमति माता जी के ससंघ सानिध्य में व्योहारी शहडोल म.प्र. में हुआ।

अर्हम ध्यान शिविर सम्पन्न

इन्दौर - श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इन्दौर में दिनांक 21/05/2018 से 23/05/2018 तक अर्हम ध्यान शिविर का आयोजन ब्र. बहन सविता दीदी दस प्रतिमाधारी पिपरई के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

दीक्षा दिवस सम्पन्न

बेगमगंज- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के प्रिय शिष्य मुनि श्री कुंथुसागर जी का 20वां दीक्षा दिवस 22 अप्रैल 2018 को श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर बेगमगंज में मनाया गया। जिसमें विदिशा, इन्दौर, गेरतगंज, गड़ी, राहतगढ़, सिलवानी, गंजबासोदा, मुंगावली, रहली,पटनाबुर्जुग, भोपाल आदि कई स्थानों से श्रावक श्राविकायें दीक्षा दिवस में सम्मलित होकर पुन्यार्जन किया।

जैन विद्या संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न

बेगमगंज-आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन बडा मंदिर बेगमगंज में मुनि श्री कुंथु सागर महाराजजी के सानिध्य में जैन विद्या संस्कार शिक्षण शिविर दिनांक 20 अप्रैल से 27 अप्रैल 2018 तक सम्पन्न हुआ। जिसमें तत्त्वार्थ सूत्र इष्टोपदेश, रत्नकरण्डक श्रावकाचार, द्रव्य संग्रह, छहढाला, प्राथमिक प्रथम, प्राथमिक द्वितीय आदि कक्षायें लगायी गयी। ब्र. जिनेश

मलैया इन्दौर, ब्र. धीरज भैया राहतगढ़, ब्र. राजेश टड़ा, के निर्देशन में तथा ब्र. विजया दीदी, ब्र. उषा दीदी, ब्र. अनिता दीदी, ब्र. समता दीदी, ब्र. साधना दीदी, ब्र. शशि दीदी, ब्र. निलांजना दीदी आदि ने शिविर में पठन पाठन का कार्य कराया।

जैन विद्या संस्कार शिक्षण शिविर सम्पन्न

बेगमगंज-आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी संयम स्वर्ण महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में मुनि श्री कुंथुसागर महाराज जी के सानिध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर हदाईपुर बेगमगंज में जैन विद्या संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 08 मई से 17 मई 2018 तक सम्पन्न हुआ।

पुस्तक डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति का विमोचन

श्रवणबेलगोला- श्री सुरेश जैन एवं श्रीमति उषा जैन (लुधियाना) द्वारा लिखित पुस्तक डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं सस्कृति का कर्म योगी भट्टारक स्वामी श्री चारू कीर्ति जी महाराज द्वारा देश भर से आये गणमानय तथा फिलेटिलिस्टो के सन्तुख विमोचन किया गया। इस अवसर पर स्वामी जी ने श्री सुरेश जैन की बड़ी प्रंशसा की तथा इस पुस्तक की फिलाटली तथा जैन इतिहास व साहित्य में उनके योगदान देने पर बधाई दी। भट्टारक स्वामी श्री चारू कीर्ति जी महाराज ने पुस्तक विमोचन के उपरांत अपने आर्शीवाद सहित पुस्तक पर हस्ताक्षर किये।

इस के उपरांत एक अन्य कार्यक्रम में पदविभूषण डॉ. वीरेन्द्र हेगडे जी को धर्मस्थल में पुस्तक डाक टिकटों पर जैन इतिहास एवं संस्कृति की एक प्रति देश भर से आये हुए फिलेटिलिस्टो से भरे हुए हाल में भेंट की गई। पुस्तक प्रकाशन पर डॉ. हेगडे जी ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा शुभकामनाओं सहित पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर आटोग्राफ पूरे ऐडरेस सहित दिये।
इस पुस्तक के लेख नियमित रूप से संस्कार सागर में प्रकाशित हो रहे हैं।

गुणानुवाद सभा

इन्दौर-श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में 9 मई 2018 को आर्यिका प्रभावनामति माता जी की समाधि पर तथा 17 मई 2018 को आर्यिका श्री वृषभमति माता जी की समाधि पर एवं 25 मई 2018 को आर्यिका श्री अवगममति माता जी समाधि पर गुणानुवाद सभा रखी गई। जिसमें पं. श्री रतनलाल जी, ब्र. सुदेश जी कोठिया, ब्र. जिनेश मलैया, ब्र. सुरेश मलैया, ब्र. समता दीदी आदि ने माताजीयों के जीवन पर प्रकाश डाला।

मान्या जैन ने म.प्र. बोर्ड परीक्षा में दसवी में प्रदेश में छठा स्थान प्राप्त किया

टीकमगढ़-माध्यमिक शिक्षा मंडल म.प्र.भोपाल ने 14 मई 2018 को कक्षा दसवी की परीक्षा परिणाम घोषित किया जिसमें मान्या जैन सुपुत्री श्री अजितकुमार , श्रीमति मनो जैन ने 500 में से 490 अंक 98% अंको के साथ म.प्र. में छठा स्थान प्राप्त किया। मुख्यमंत्री निवास पर माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान शिक्षा मंत्री कुंवर विजय शाह शिक्षा सचिव, श्रीमति दीप्ति मुकर्जी ने मान्या जैन को स्वर्णिम मेडल देकर एवं आकर्षक प्रणाम पत्र देकर सम्मानित किया।

नेमीनाथ मोक्ष कल्याण

गिरनार जी-श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र गिरनार जी में गिरनार गोरव आचार्य श्री निर्मल सागर महाराज जी के ससंघ सानिध्य में दिनांक 17 से 19 जुलाई 2018 तक भगवान श्री नेमीनाथ जी के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर निर्वाणलाडू चलाया जायेगा । यह महोत्सव पिछले 12 वर्षो से राष्ट्रीय स्तर पर हो रहा है। जिसमें 10-12 हजार जैन श्रावकगढ उपस्थित होकर पर्वत की यात्रा एवं निर्वाणलाडू समर्पित करते है। 17 जुलाई को आचार्य श्री निर्मल सागर महाराज जी का 51वां दीक्षा जंयती महोत्वस 18 जुलाई को रथयात्रा महामस्तकाभिषेक एवं सर्वसिद्धी दायक गिरनार विधान 19 जुलाई को आचार्य श्री के ससंघ सानिध्य में गिरनार पर्वत पर 22 किलो का निर्वाणलाडू चलाया जायेगा आप भी सपरिवार इस महोत्सव में उपस्थित होकर धर्म प्रभावना में सहयोग देकर पुण्यार्जित करे।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह : जून 2018

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये

1. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा षटखंडागम ग्रंन्थ की प्रथम वाचना कहा पर हुई थी।
2. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा षटखंडागम ग्रंन्थ की वाचना जबलपुर में कब हुई थी।
3. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा षटखंडागम ग्रंन्थ की वाचना खुरई में कब हुई थी।
4. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा षटखंडागम ग्रंन्थ की वाचना ललितपुर में कब हुईथी।
5. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा षटखंडागम ग्रंन्थ की वाचना ईशरी में कब हुई थी।
6. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा फरवरी 1987 में कितनी आर्यिकायें दीक्षायें हुई थी।
7. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा फरवरी 1987 में कितनी क्षुल्लक दीक्षायें हुई थी।
8. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में 2015 में युवा सम्मेलन कहां पर हुआ था।
9. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा 25 जनवरी 1993 को तप कल्याणक के दिन कितनी आर्यिकायें दीक्षाये हुई थी।
10. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी द्वारा सन् 1990 नरसिंहपुर में कितनी आर्यिकायें दीक्षाये हुई थी।
11. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में प्रथम पंच कल्याणक कहा पर हुआ था।
12. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में सागर में कितने पंच कल्याणक हो चुके है ।
13. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में बीनाबारह में कितने पंच कल्याणक हो चुके है।
14. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में गंजबासोदा में कितने पंच कल्याणक हो चुके है।
15. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में मुरैना में पंच कल्याणक कब हुआ था।
16. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में खुजराहो में पंच कल्याणक कब हुआ था।
17. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में पोनी जी में पंच कल्याणक कब हुआ था।
18. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में शहपुरा भिटोनी में पंच कल्याणक कब हुआ था।
19. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में केसली में पंच कल्याणक कब हुआ था।
20. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में श्री सिद्ध क्षेत्र नेनागिर में पंच कल्याणक कब हुआ था।
21. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में सिरोंज में पंच कल्याणक कब हुआ था।
22. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में नरसिंहपुर में पंच कल्याणक कब हुआ था।
23. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में पथरिया में पंच कल्याणक कब हुआ था।
24. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में श्री सिद्ध क्षेत्र मुक्तागिरी में लघु पंच कल्याणक कब हुआ था।

25. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में सिवनी में पंच कल्याणक कब हुआ था।
26. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में देवरी में पंच कल्याणक कब हुआ था।
27. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में रामटेक में लघु पंचकल्याणक कब हुआ था।
28. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में आहूरा नगर सूरत के पंच कल्याणक में माता पिता बनने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ था।
29. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में करेली में पंच कल्याणक कब हुआ था।
30. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में छिदंवाडा में पंच कल्याणक कब हुआ था।
31. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में छपारा में पंच कल्याणक कब हुआ था।
32. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में बंडा में पंच कल्याणक कब हुआ था।
33. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में बिलासपुर में पंच कल्याणक कब हुआ था।
34. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में बेगमगंज में पंच कल्याणक कब हुआ था।
35. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में शहडोल में पंच कल्याणक कब हुआ था।
36. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में विदिशा में पंच कल्याणक कब हुआ था।
37. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में सतना में पंच कल्याणक कब हुआ था।
38. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में महराजपुर में पंच कल्याणक कब हुआ था।
39. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में दुर्ग छत्तीसगढ़ में पंच कल्याणक कब हुआ था।
40. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में खांतेगांव के पंच कल्याणक में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य किसे प्राप्त हुआ।
41. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में गौरझामर में पंच कल्याणक कब हुआ था।
42. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में गढ़कोटा में पंच कल्याणक कब हुआ था।
43. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में रहली में पंच कल्याणक कब हुआ था।
44. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में तारादेही में पंच कल्याणक कब हुआ था।
45. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में कंटगी में पंच कल्याणक कब हुआ था।
46. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में भानपुर भोपाल में पंच कल्याणक कब हुआ था।
47. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में सिलवानी में पंच कल्याणक कब हुआ था।
48. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में डोंगरगांव में पंच कल्याणक कब हुआ था।
49. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में रायपुर में पंच कल्याणक कब हुआ था।
50. आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सानिध्य में डिडोंरी में पंच कल्याणक कब हुआ था।

संस्कार सागर आयोजन समायोजन विशेषांक मई 2018 से

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षाः जून 2018

प्रश्न पत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम .....स्थान .....

उम्र .....सदस्यता क्र. .....

पूर्ण पता .....

पिन कोड ..... फोन नं..... (एस.टी.डी.) .....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम ..... हस्ताक्षर

नियम :– ..... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजतेतब तक के लिए।

वर्ग पहेली 230

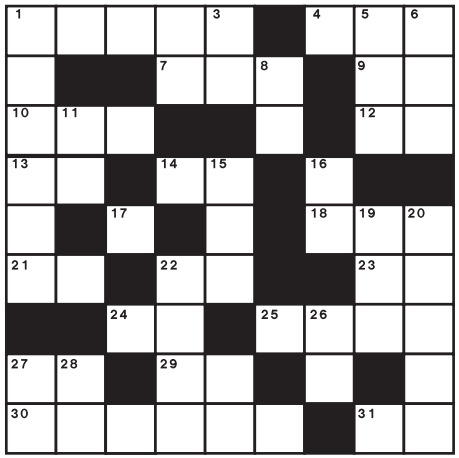

1				3	■	4	5	6
	■	■	7		8	■	9	
10	11		■	■		■	12	
13		■	14	15	■	16	■	■
	■	17	■		■	18	19	20
21		■	22		■	■	23	
■	■	24		■	25	26		
27	28	■	29		■		■	
30						■	31	

ऊपर से नीचे

1. वह नगरी जहाँ प्रथम यति सम्मेलन हुआ हो
2. हाथी, कुंजर
3. नस
4. मसलने का भाव
5. पृथ्वी, धरा
8. तारने, पारकरने का माध्यम घाट या नाव
11. शरीर काया
15. टिड्डा, पतंगा
16. यश, 17.वह (संस्कृत)
19. रमण की क्रिया का भाव
20. आचार्य विद्यासागर जी का माँ का नाम आर्यिका अवस्था का
22. तोते की नाक, शिखर का एक अंग
26. जहर, पायजन
28. मृत्युदेव
31. जीव की अवस्था विशेष

बाये से दाये

1. उन मुनि का नाम जो गृहस्थावस्था में विद्याधर के पिता रहे हो
4. नीच
7. पृथ्वी, धरती
9. आनंद उत्पत्ति का माध्यम, फलों का तरल भाग 10. दुख, शोक
12. तिली, शरीर का काला चिन्ह
13. ईसाई धर्म की साध्वी
14. हिस्सा, भाग
18. रस सहित, रस युक्त
21. पद्धति, विधि
22. अच्छा,
23. मेरा
24. बगुला, मांस भक्षी राजा
25. विनय सहित, विनय युक्त
27. तीन वस्तुओं का समूह
29. संज्ञा, वस्तु स्थान की संज्ञा
30. आचार्य विद्यासागर जी के छोटे भाई का मुनि अवस्था का नाम

वर्ग पहेली 229 का हल

1 आ	2 ता	प	■	3 वि	द्या	4 सा	ग	5 र
6 भा	प	■	7 श	म	■	भा	■	य
स	■	8 वि	त	ल	■	9 र	10 म	ण
■	11 न	■	12 क	सा	र	■	13 म	सा
14 ज्ञा	य	15 क	■	ग	■	16 सा	का	र
न	■	17 स	म	र	■	18 ग	र	■
19 सा	20 म	र	■	■	21 व	र	■	22 आ
23 ग	त	■	24 नी	25 र	ज	■	26 रा	ग
र	■	27 सु	र	ग	न	■	28 त	म

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

गज चढ़ दीक्षा को चले

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

मैत्री भाव जगत मे मेरा...

भाग्योदय तीर्थ सागर

आचार्य श्री के साथ ब्र. सुरेश मलैया इन्दौर एवं डॉ. ऋषभ सिंघई, नेमावर

प्रतिभा स्थली जबलपुर

बाघ के बच्चे -बालाघाट दिसम्बर 1991

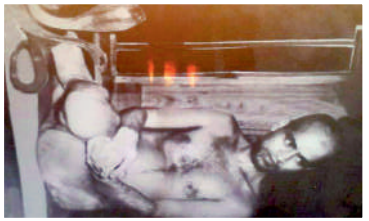

नाग-नागिन का जोडा-कुण्डलपुर (1976)

खरगोश के बच्चो का जोडा

गौ माता-जबलपुर

रामटेक (1993)

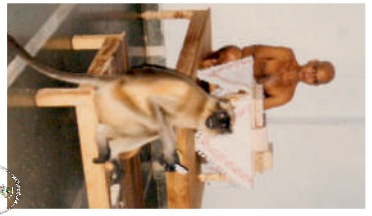

चित्रप्रदर्शनीय स्थल (08)-इंजी अभिषेक जैन के द्वारा संयम स्वर्ण महोत्सव पर आचार्य विद्यासागर जी पर चित्रप्रदर्शनीय श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजय नगर इन्दौर में

चित्रप्रदर्शनीय स्थल (09)-इंजी अभिषेक जैन के द्वारा संयम स्वर्ण महोत्सव पर
आचार्य विद्यासागर जी पर चित्रप्रदर्शनीय
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विजय नगर इन्दौर में .

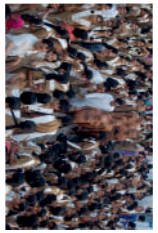

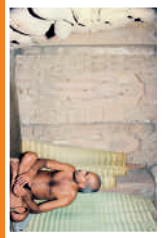

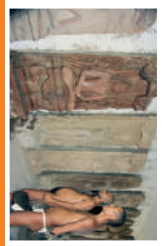

अनोखे पल...

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org